प्रभात

अंदर के पन्नों में .....

★ ताड़िमेट्ला ऐम्बुश की सफलता पर पार्टी के महासचिव कॉमरेड गणपति का संदेश 5
★ ताड़िमेट्ला शहीदों की जीवनियां 10
★ पुलिस व अर्ध-सैनिक बलों से अपील 15
★ एलटीटीई की पराजय: सबक (दूसरा भाग).... 20
★ रमनसिंह: गोबेल्स का छत्तीसगढ़िया अवतार.... 27
★ ताकिलोड़ नरसंहार - कुमली की हत्या 30
★ 8 मार्च और भूमकाल की रिपोर्टें 40

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी का तिमाही मुख-पत्र

वर्ष-23 अंक-1/2 जनवरी-जून 2010 सहयोग राशि-10 रुपए

ताड़िमेटला हमला - आदिवासियों के नरसंहारों और क्रांतिकारी नेताओं की हत्याओं का जवाब

इस ऐतिहासिक हमले को सफल बनाने के दौरान अपनी जानें कुरबान करने वाले वीर शहीद

कॉमरेड्स रुकमति, वागाल, विज्जाल, इंगाल, राजू, मंगू, रामाल और रतन को लाल-लाल सलाम!

कॉमरेड रुकमति
(सेक्शन कमाण्डर)

कॉमरेड वागाल
(सेक्शन कमाण्डर)

कॉमरेड विज्जाल
(सेक्शन उप कमाण्डर)

कॉमरेड इंगाल
(सेक्शन उप कमाण्डर)

कॉमरेड राजू

कॉमरेड मंगू

कॉमरेड रामाल

कॉमरेड रतन

देश की निर्धनतम जनता के खिलाफ जारी बर्बर हिंसा रोको! 'ऑपरेशन ग्रीनहंट' बंद करो!!

महान भूमकाल-1910 के 100 बरस पूरे होने के उपलक्ष्य में

आपरेशन ग्रीन हंट को हराने के संकल्प से एक और भूमकाल के लिए शंखनाद करो!!

छह अप्रैल की सुबह के 6 बजे हमारी पीएलजीए के करीब 300 बहादुर योद्धाओं ने दक्षिण बस्तर डिवीजन के ताड़िमेटला और मुकरम गावों के बीच एक जबर्दस्त ऐम्बुश किया जिसमें सीआरपीएफ के 76 जवान मारे गए और 6 अन्य घायल हो गए। मारे गए सीआरपीएफ के जवानों में 17 कोबरा कमाण्डो शामिल थे। करीब 3 घण्टे तक चली इस शौर्यपूर्ण लड़ाई के दौरान पीएलजीए ने दुश्मन के 79 हथियार छीन लिए। जब्त हथियारों में 21 एके-47, 42 इन्सास, 7 एसएलआर, 6 एलएमजी, एक स्टेनगन और 2 दो इंची मोर्टार शामिल हैं। इस ऐतिहासिक व अभूतपूर्व हमले को सफल बनाने के दौरान हमारे आठ जांबाज जनयोद्धा भी धराशायी हुए थे। कॉमरेड रुकमति (सेक्शन कमाण्डर, ग्राम मुकरम, पश्चिम बस्तर), कॉमरेड वागाल (सेक्शन कमाण्डर, ग्राम रेगडगट्टा, दक्षिण बस्तर), कॉमरेड विज्जाल (सेक्शन उप-कमाण्डर, ग्राम पमरा, पश्चिम बस्तर), कॉमरेड इंगाल (ग्राम कर्रिगुण्डम, दक्षिण बस्तर), कॉमरेड राजू (सदस्य, ग्राम कोण्डापल्ली, दक्षिण बस्तर), कॉमरेड मंगू (सदस्य, ग्राम रेंगम, दक्षिण बस्तर), कॉमरेड रामाल (सदस्य, ग्राम मुरपल्ली, दक्षिण बस्तर) और कॉमरेड रतन (सदस्य, ग्राम जाड़ंका, इद्रावती इलाका) - बस्तर के इन 8 माटी-पुत्रों ने, जो जनता की मुक्ति के लिए अपने सिर पर कफन बांधकर निकल पड़े थे, अदम्य साहस, अनुपम पराक्रम आर बलिदान की सर्वोच्च स्फूर्तिभावना के साथ अपने प्राणों को न्यौछावर किया। तमाम शहीदों के शव लाए गए और जनता की भारी उपस्थिति में पूरे क्रांतिकारी सम्मान के साथ उन्हें अंतिम विदाई दी गई। हमारी स्पेशल जोनल कमेटी इन वीर योद्धाओं को... जनता के इन सच्चे सेवकों को पूरी विनम्रता के साथ श्रद्धा-सुमन पेश करती है। और देश के तमाम नौजवानों का उनके रास्ते पर आगे बढ़ने का आह्वान करती है। शहीदों के परिजनों और दोस्तों के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करती है।

पिछले कुछ महीनों से चल रहे ऑपरेशन ग्रीन हंट के तहत आदिवासियों का कत्लेआम, गांवों को जलाना व महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार का सिलसिला लगातार जारी है। इस दौरान भाड़े की फोर्स और उनके मुखबिर नेटवर्क की हर हलचल पर हम लगातार नजर रखे हुए थे और हमने उसका गहरा अध्ययन भी किया। इसके आधार पर हमारी स्पेशल जोनल कमेटी ने माकूल व सटीक जवाबी दावपेंच तैयार किए। अब इसके तहत हमें पहली बडी सफलता मिली है। भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में यह अब तक का सबसे बड़ा सफल हमला है जिसमें बड़े पैमाने पर सरकारी बलों का सफाया किया गया। इस हमले की अभेद्य योजना बनाकर इसका नेतृत्व करने वाले पीएलजीए के विभिन्न स्तर के कमाण्डरों, इसे सफल बनाने वाले जांबाज लाल योद्धाओं और इसकी सफलता में अपना अहम व सक्रिय योगदान देने वाली दक्षिण बस्तर की क्रांतिकारी जनता का हमारी स्पेशल जोनल कमेटी तहेदिल से लाल अभिनंदन करती है। महान भूमकाल के 100 बरस के मौके पर की गई इस शौर्यपूर्ण कार्रवाई को हमारी स्पेशल जोनल कमेटी उस महा संग्राम की गौरवशील धारावाहिकता के रूप में देखती है और इस उपलब्धि पर बस्तर के तमाम आदिवासियों, आदिवासियों के शुभचिंतकों और आदिवासी संगठनों को भूमकाल जोहार पेश करती है।

क्यों हुआ था यह हमला?

यूपीए सरकार के दोबारा सत्ता पर काबिज होने के बाद से और यहां छत्तीसगढ़ में भाजपा के फिर से सत्ता संभालने के बाद से क्रांतिकारी आंदोलन का जड़ से सफाया कर इस विशाल वनांचल को बहुराष्ट्रीय कम्पनियों व बड़े पूंजीपतियों की जागीर में तब्दील करने के इरादे से एक बर्बर व आतंकी दमन अभियान छेड़ दिया गया। 2005 से जारी बर्बरतापूर्ण सलवा जुडूम के तहत एक हजार से ज्यादा आदिवासियों की हत्या कर, सैकड़ों आदिवासी महिलाओं के साथ बलात्कार कर, 600 से ज्यादा गांवों को जलाकर, करोड़ों रुपए की सम्पत्ति को तहस-नहस कर और हजारों आदिवासियों को बेघरबार करने के बावजूद भी जनता व जन सेना के बहादुराना प्रतिरोध की बदौलत सरकारों को

पीएलजीए के हाथ में आए हथियार

एके-47	- 21
इन्सास	- 42
इन्सास एलएमजी	- 6
एसएलआर	- 7
दो इंची मोर्टार	- 2
स्टेन कार्बाइन	- 1
कुल हथियार	- 79
कुल कारतूस	- 3 हजार से ज्यादा

ग्रेनेड, वॉकीटाकी, बेस सेट, सेलफोन आदि बहुत सारा फौजी साजोसामान

शर्मनाक पराजय का मुंह देखना पड़ा। देश के कई प्रगतिशील बुद्धिजीवियों व जनवादी संगठनों ने सलवा जुडुम को सरकार-प्रायोजित बर्बर हमला ठहराकर उसे बंद करने की पुरजोर मांग उठाई। आदिवासियों को उन्हीं के द्वारा मरवाने व सैकड़ों आदिवासी नौजवानों को इकट्ठा कर एसपीओ के नाम से गुण्डों की फौज खड़ी कर जनता के खिलाफ लड़वाने की सरकारी साजिश की हर तरफ निंदा हुई। इस प्रकार केन्द्र-राज्य सरकारों की कुटिल साजिशों का बुरी तरह भण्डाफोड़ हो गया। इसके बाद से केन्द्र की यूपीए सरकार ने विभिन्न राज्य सरकारों से तालमेल कर एक अभूतपूर्व व बर्बरतम अभियान शुरू कर दिया, जिसे 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' का नाम दिया गया, जिसे केन्द्रीय गृहमंत्री चिदम्बरम ने हमेशा नकार दिया। यह वास्तव में देश की निर्धनतम जनता के खिलाफ युद्ध है, जो दण्डकारण्य के संघर्ष इलाके में अगस्त 2009 से जारी है। इसके लिए पहले से मौजूद हजारों पुलिस व अर्द्ध-सैनिक बलों के अलावा दर्जनों अतिरिक्त अर्ध-सैनिक बटालियनें उतारी गईं। आंध्र की 'ग्रेहाउण्ड्स' की तर्ज पर 'कोबरा' के नाम से गठित की गई सीआरपीएफ की एक इलीट कमाण्डो फार्स को इस यद्ध में आगे रखा गया। बीएसएफ और आइटीबीपी को, जिन्हें देश की सीमाओं पर तैनात किया जाना चाहिए, दण्डकारण्य में खुद अपने देश की जनता के खिलाफ उतारा गया। पूरे दण्डकारण्य को खाकी छावनी बना दिया गया। यही हाल बिहार, झारखण्ड, ओड़िशा, पश्चिम बंगाल और आंध्रप्रदेश के संघर्ष इलाकों का है।

सोनिया-मनमोहन-चिदम्बरम गिरोह द्वारा देश की अत्यंत दबी-कुचली जनता के खिलाफ ऑपरेशन ग्रीन हंट के नाम से जारी इस युद्ध की अगुवाई में केन्द्रीय गृहमंत्री चिदम्बरम हैं जो एक समय लुटेरी बहुराष्ट्रीय कम्पनी एनरॉन के वकील थे और वित्तमंत्री बनने से पहले वेदांता नामक एक लुटेरी कम्पनी के निर्देशकमण्डल में सदस्य थे। और प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह अंतरराष्ट्रीय मुद्रा संस्थाओं का अव्वल नम्बर दलाल हैं, जिनकी आधी उम्र एक अधिकारी के रूप में विश्व बैंक, अंतररष्ट्रीय मुद्रा कोष और दूसरे बैंकों की सेवा में गुजरी है। गृह सचिव के रूप में नियुक्त जी.के. पिल्लै, जो मनमोहन सिंह का चहेता है, की खासियत यह है कि उन्होंने खुद देश में 235 विशेष आर्थिक क्षेत्रों को मंजूरी दी, जिसके एवज में लाखों लोगों का विस्थापन उन्हें मजूंर है। इन सबको अच्छी तरह मालूम है कि देश में साम्राज्यवाद-शासित नीतियों को बेरोकटोक लागू करने की राह में माओवादी आंदोलन ही बहुत बड़ी बाधा के रूप में खड़ा है। इस तिकड़ी की अगुवाई में, रमनसिंह, ननकीराम, विजयरामन, विश्वरंजन जैसे नेता-अफसरों की सहभागिता में दण्डकारण्य में 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' चल रहा है। अगस्त 2009 से लेकर अभी तक इस बर्बर ऑपरेशन के तहत पुलिस, अर्ध-सैनिक बलों व एसपीओ ने 110 से ज्यादा आदिवासियों की हत्या की, दर्जनों महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार किया, कई घरों को जला दिया और सम्पत्ति को लूटा।

एक तरफ आदिवासियों के नरसंहारों को लगातार अंजाम देते हुए दूसरी तरफ चिदम्बरम गिरोह ने क्रांतिकारी नेताओं की हत्या व गिरफ्तारी पर जोर लगा रखा है। पिछले साल 23 मई को हमारी पार्टी के केन्द्रीय कमेटी सदस्य कॉमरेड पटेल सुधाकर को और अभी 12 मार्च 2010 को हमारी पार्टी के एक और वरिष्ठ नेता कॉमरेड शाखामूरी अप्पाराव के साथ-साथ सोलिपेटा कोण्डल रेड्डी को आंध्र के बदनाम गुप्तचर विभाग - एसआईबी ने उठाकर गोली मार दी और मुठभेड़ की कहानी गढ़ दी। पार्टी के अहम नेताओं की हत्याओं के लिए चिदम्बरम गिरोह सीधे तौर पर जिम्मेदार है।

और इस सबके खिलाफ में हआ है यह हमला। **बस्तर की जनता की यह एक लाज़िम व सहज प्रतिक्रिया है। महान भूमकाल की 100वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में यह ऐतिहासिक हमला होना महज इत्तेफाक नहीं, बल्कि यह एक धारावाहिकता है।** 100 साल पहले ब्रितानी साम्राज्यवाद के खिलाफ विद्रोह का बिगुल बजाने वाले बस्तरवासी अब उन लोगों के मंसूबों को नाकाम करने को कृत संकल्प हो गए हैं जो देश की अपार प्राकृतिक संपदाओं को साम्राज्यवादियों के हवाले करने पर आमादा हैं।

हाय तौबा मचाना बंद कर हिंसा और आतंक को फौरन रोको!

इस घटना के तुरंत बाद चिदम्बरम ने इसे हमारी 'बर्बर' कार्रवाई बताया। सत्ता में बैठे लोगों के अलावा भाजपा समेत कई लुटेरी पार्टियों ने इस पर अपने वर्गीय चरित्र के अनुसार हाय तौबा मचाई है। क्या ये लोग निम्न लिखित चंद घटनाओं पर स्पष्टीकरण दे सकेंगे? क्या वे यह बता सकेंगे कि ये 'बर्बरता' की श्रेणी में आती हैं या नहीं?

- 8 जनवरी 2009 को सिंगारम नरसंहार में 17 आदिवासियों की हत्या। इसमें 5 महिलाएं शामिल थीं जिनके साथ हत्या के पहले सामूहिक बलात्कार किया गया था। सभी के शरीर के अंगों को काटकर पाशविकता का नंगा नाच किया गया था।
- 20 जून 2009 को कोकावाड़ा के पास 6 निर्दोष आदिवासियों की हत्या। सभी ग्रामीण हाट बाजार से लौट रहे थे।
- 10 अगस्त 2009 को बीजापुर जिले के वेच्चापाड़ के पास 6 लोगों की हत्या। इनमें से एक महिला हमारी कार्यकर्ता थी, बाकी सब आम जनता।
- 10 सितम्बर 2009 को गोल्लागूड़ेम के पास 4 लोगों की हत्या।
- 17 सितम्बर 2009 को सिंगनमडगू और उसके आसपास के गांवों में कुल 12 लोगों की हत्या जिनमें 3 बुजुर्ग थे

जिनकी उम्र 60-70 साल थी।

- 1 अक्टूबर 2009 को गोमपाड़ में 12 लोगों की हत्या, जिसमें एक 10 साल की लड़की भी शामिल थी। इसी घटना में एक डेढ़ साल के नन्हे बच्चे की उंगलियां भी काट डालीं।
- 10 नवम्बर 2009 को टेट्टेमड्डूगू और उसके आसपास के गांवों से 7 लोगों की हत्या।
- 11 दिसम्बर 2009 को गुमियापाल में 7 लोगों की हत्या।
- 23 जनवरी 2010 को कुटरेम के पास 4 युवाओं की हत्या।
- 3 फरवरी 2010 को ताकिलोड़ गांव के 7 आदिवासी नौजवानों की हत्या।
- 7 फरवरी 2010 को नारायणपुर के पास ओंगनार गांव में 5 लोगों की हत्या जिसमें 2 युवतियां शामिल थीं।
- 10 फरवरी 2010 को माड़ डिवीजन के दुमनार गांव में क्रांतिकारी कृषि विभाग की एक कार्यकर्ता कॉमरेड कुमली के साथ एसपीओ के द्वारा सामूहिक बलात्कार और गला रेतकर हत्या।
- 19 मार्च को आंध्र के ग्रेहाउण्ड्स ने कॉमरेड पुल्लैया और लक्ष्मी को तड़पाल गांव से गिरफ्तार कर गोली मार दी और मुठभेड़ की कहानी गढ़ दी। ये दोनों पति-पत्नी थे।

कुछ ताजातरीन घटनाओं का विवरण

- 3 अप्रैल 2010 को घटित एक ताजा घटना में नारायणपुर जिले के चिनारी (गोण्डी भाषा में 'इन्नर') गांव में सीआरपीएफ और जिला पुलिस के 300 से ज्यादा भाड़े के जवानों ने हमला कर दो घर जलाकर राख दिए। एक घर सोनधर सलाम नामक आदिवासी का था और दूसरा घर नेंगी यादव का था। उसके बगल के गांव फरसगांव के चैतराम सलाम नामक एक आदिवासी का घर भी जला दिया। सारा सामान जलकर नष्ट हो गया। चिनारी गांव की 15 साल की युवती सनताई सलाम की इतनी बुरी तरह से पिटाई की कि वह बेहोश हो गई।
- 5 अप्रैल 2010 को कोण्डागांव तहसील के चेमा गांव से गंगा कोर्राम (30 साल) नामक आदिवासी युवक को मर्दापाल पुलिस पकड़कर ले गई थी और थाने में हत्या कर 7 तारीख को लाश गांव में फेंक दी।
- 5 अप्रैल को ही तोंगपाल के आसपास के गांवों में कोबरा और दूसरे बलों ने आतंक का नंगा नाच करते हुए कई लोगों की पिटाई की और कइयों को गिरफ्तार किया।

साफ जाहिर है कि उपरोक्त सभी हत्याओं और अत्याचारों को पुलिस, अर्ध-सैनिक बलों और एसपीओं ने अंजाम दिया और यह सिलसिला लगातार जारी है। अगर इनकी सत्यता पर किसी को जरा भी शक है तो हमारे इलाकों में आ सकते हैं और खुद पता कर सकते हैं। **ताड़िमेटला के जंगल में 6 अप्रैल की सुबह जो कुछ हुआ उसके पीछे बस्तर के सैकड़ों, हजारों आदिवासियों की पीड़ा थी, आंसू थे, अपमान था, शोषण था और दमन था। नक्सलवादियों को 'हिंसा छोड़ने' की बार-बार समझाइश देने वाले तमाम दोगलेबाजों और पाखण्डियों के लिए इसे समझना नामुमकिन है।**

चिदम्बरम द्वारा 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' से इनकार - 21वीं सदी का सबसे बड़ा मजाक!

इस घटना के मद्देनजर 7 अप्रैल को जगदलपुर आए देश के गृहमंत्री चिदम्बरम ने 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' से इनकार कर दिया और यह भी कहा कि ताड़िमेटला में सीआरपीएफ के जवान किसी अभियान पर नहीं, बल्कि 'इलाके से परिचित होने के लिए' गए थे। सेना की मदद लेने की संभावना से भी उन्होंने इनकार किया, पर वायुसेना के इस्तेमाल पर निर्णय लेने के सम्बन्ध में दोबारा विचार करने की संभावना जताई। चिदम्बरम जी! आप देश की जनता को बेवकूफ समझने को स्वतंत्र हैं!! लेकिन सच्चाई यह है कि जनता को अच्छी तरह से मालूम हो गया कि आपने यह ग्रीन हंट ऑपरेशन अपनी प्रिय कम्पनी वेदांता के साथ-साथ कई अन्य दलाल पूंजीपतियों व बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के हितों की रक्षा करने के लिए और खासकर अमेरिकी साम्राज्यवादियों के दिशा-निर्देश पर ही शुरू किया है। और जहां तक इस सरकारी ऑपरेशन में सेना की भूमिका की बात है, परोक्ष रूप से उसकी दखल 4 साल पहले से ही शुरू हो चुकी है। सेना के अधिकारी यहां के पुलिस व अर्ध-सैनिक बलों को जंगल वारफेर में प्रशिक्षण दे रहे हैं। चिदम्बरम चाहे लाख झूठ बोलें, देश की जनता के खिलाफ सोनिया-मनमोहन-चिदम्बरम गिरोह द्वारा छेड़ा गया बर्बरतापूर्ण युद्ध अब दिन के उजाले की तरह साफ है। जनता को इस युद्ध से अपना बचाव करने का पूरा अधिकार है।

देश की जनता से अपील

हम देश के तमाम जनवादी बुद्धिजीवियों, लेखक-पत्रकारों, विभिन्न पेशे क लोगों, मजदूर-किसानों से विनम्र अपील करते हैं कि वे सरकारों से यह मांग करें कि बड़े व विदेशी पूंजीपतियों के मुनाफे के लिए देश की जनता के खिलाफ जारी इस युद्ध को फौरन बंद किया जाए; जनता को व क्रांतिकारी नेताओं को झूठी मुठभेड़ों में मारना बंद किया जाए; आदिवासी महिलाओं के साथ बलात्कार करने वालों को कड़ी सजा दी जाए; आदिवासियों के घरों को जलाना व संपत्ति को ध्वस्त करना बंद हो। हम इस मौके पर इस घटना में मृत पुलिस बलों के परिवारों के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हैं और उनसे अपील करते हैं कि वे यह समझें कि हमें यह कदम किन हालात में उठाना पड़ रहा है। हम तमाम पुलिस व अर्ध-सैनिक बलों के जवानों और निम्न श्रेणी के अफसरों से अपील करते हैं कि वे जनता के खिलाफ जंग न लड़ें - पाशविकता न बरतें। ★

ताड़िमेटला ऐम्बुश को सफल बनाने वाली पीएलजीए को लाल-लाल सलाम!

ऑपरेशन ग्रीन हंट को हराने के लक्ष्य से जारी प्रतिरोधी संघर्ष को तेज करो! फैला दो!!

ताड़िमेटला ऐम्बुश को सफल बनाने वाली पीएलजीए की विशेष बटालियन कमान के नाम

भाकपा (माओवादी) के महासचिव कॉमरेड गणपति द्वारा भेजा गया संदेश

प्यारे कॉमरेडो,

ताड़िमेटला शौर्यपूर्ण ऐम्बुश को सफल बनाने वाले तमाम कॉमरेडों - पार्टी नेतृत्व, पीएलजीए गुरिल्ला बटालियन की कमान, विभिन्न स्तरों के कमाण्डरों व बहादुर योद्धाओं, दक्षिण बस्तर डिवीजनल कमेटी, स्थानीय एरिया कमेटी, बहादुर जन मिलिशिया और दक्षिण बस्तर की जनताना सरकार व क्रांतिकारी जनता का मैं हमारी केन्द्रीय कमेटी और समूची पार्टी और पीएलजीए की ओर से तहेदिल से लाल-लाल अभिनंदन पेश करता हूं।

इस ऐतिहासिक हमले को सफल बनाने के दौरान अपने अनमोल प्राणों को न्यौछावर करने वाले आठ जांबाज जनयोद्धा - कॉमरेड रुकमति (सेक्शन कमाण्डर), कॉमरेड वागाल (सेक्शन कमाण्डर), कॉमरेड विज्जाल (सेक्शन उप-कमाण्डर), कॉमरेड इंगाल (सेक्शन उप-कमाण्डर), कॉमरेड राजू, कॉमरेड मंगू, कॉमरेड रामाल और कॉमरेड रतन को मैं पूरी विनम्रता के साथ श्रद्धांजलि पेश करता हूं।

इस शौर्यपूर्ण कार्रवाई के दौरान दुश्मन के साथ दो-दो हाथ करते हुए घायल होने वाले बहादुर कॉमरेडों का मैं क्रांतिकारी अभिनंदन करता हूं और कामना करता हूं कि वे जल्द से जल्द ठीक हों। मुझे विश्वास है कि वो साथी जल्द ही जंगे मैदान में फिर से मोर्चा संभालेंगे ताकि दुश्मन के छक्के छुड़ाए जा सके।

कॉमरेडो,

6 अप्रैल 2010 को दक्षिण बस्तर डिवीजन के ताड़िमेटला गांव के पास आप लोगों ने सीआरपीएफ की 62वीं बटालियन के एक कम्पनी बलों पर शानदार हमला किया जिसमें 76 भाड़े के बल मारे गए और 6 अन्य घायल हुए। क्रांतिकारी आंदोलन का जड़ से सफाया करने की मंशा से लुटेरे शासक वर्गों द्वारा पिछले 8 महीनों से 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' के नाम से चलाए जा रहे भारी व चौतरफा युद्ध (सस.वनज.ूंत) का यह हमला माकूल जवाब है। देश की अत्यंत दबी-कुचली जनता के खिलाफ चलाए जा रहे इस नाजायज युद्ध के तहत जारी काउण्टर-गुरिल्ला ऑपरेशन्स/नक्सल-विरोधी ऑपरेशन्स को यह करारा झटका है। पिछले सितम्बर महीने में, जब ऑपरेशन ग्रीन हंट की शुरूआत हुई थी, हमारी पीएलजीए ने, जिसके केन्द्र बिंदु के रूप में पीएलजीए की बटालियन थी, सिंगनमडगू के पास आतंकी कोबरा बलों पर बहादुराना हमला कर उनके छह कमाण्डो दरिंदों का सफाया किया था। और मैं समझता हूं कि उस कार्रवाई का अनुभव आपको काम आया और ताड़िमेटला की कार्रवाई उसकी धारावाहिकता ही है। जबसे सोनिया-मनमोहन-चिदम्बरम गिरोह ने क्रांतिकारी आंदोलन पर देशव्यापी हमला तेज किया, तबसे अगर देखते हैं तो टव्वेटोला (दण्डकारण्य), सरंडा (झारखण्ड), मानपुर (दण्डकारण्य), लहिरी (दण्डकारण्य), सिल्दा (पश्चिम बंगाल), तंगिनीगुड़ा (ओड़िशा) आदि जगहों पर हमारी पीएलजीए ने उल्लेखनीय कारनामों को अंजाम दिया था। इस शृंखला की महत्वपूर्ण कड़ी है ताड़िमेटला ऐम्बुश।

यह हमला ऐसे वक्त हुआ था जबकि देश भर में लुटेरे शासक वर्ग और खासतौर पर घमण्ड से चूर छत्तीसगढ़ मुख्यमंत्री रमनसिंह, डीजीपी विश्वरंजन आदि प्रतिक्रियावादी नेता-अफसर सीना ठोंककर दावे कर रहे थे कि दण्डकारण्य में पिछले 6 महीनों में माओवादियों ने कोई बड़ा हमला नहीं किया जोकि उनके आतंकी अभियान ऑपरेशन ग्रीन हंट की 'सफलता' है। यह ऐसे जन दुश्मनों और पाखण्डियों के मुंह पर पूरी शोषित जनता की तरफ से लगाया गया तमाचा है। पिछले 8 महीनों से दुश्मन के हर दावपेंच का अध्ययन कर आपने गुरिल्ला युद्ध के माओवादी नियमों का अनुसरण करते हुए उसी के आधार पर बनाई गई जवाबी कार्यनीति के तहत किया है यह हमला। गुरिल्ला सेना अपनी सुविधा के मुताबिक, अनुकूल समय में और अनुकूल जगह पर दुश्मन पर तभी हमला करती है जब जीत की पक्की संभावना हो - गुरिल्ला युद्ध के इस माओवादी नियम का आपने अच्छी तरह पालन किया जिसका अंदाजा लगाना प्रतिक्रियावादी शासक वर्गों के लिए नामुमकिन है।

और यह हमला एक ऐसे समय में हुआ जब हमारे चंद साथी दुश्मन के इस आतंकी अभियान और उसकी क्रूरता को देख घबराकर और आत्मविश्वास खोकर क्रांतिकारी खेमे से भाग गए थे और दुश्मन के सामने घुटने भी टेक दिए थे।

और यह हमला ऐसे समय में हुआ जबकि दुश्मन के चौतरफा भारी हमले के चलते हमारे सामने कई प्रतिकूल परिस्थितियां पैदा हुई थीं। कॉर्पेट सेक्यूरिटी के नाम से दुश्मन ने कदम-कदम पर पुलिस व अर्ध-सैनिक बलों के कैम्प-थाने खोलकर पूरे दण्डकारण्य को खाकी छावनी में बदल डाला। सरकारी सशस्त्र बलों के बेस कैम्प से महज 3 किलोमीटर की दूरी पर किए गए इस हमले का बेहद सकारात्मक पहलू यह था कि तमाम प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद आप लोगों ने बढ़िया कमान, लाजवाब योजना, सही तैयारियां, सूचनाएं इकट्ठी करने का पुख्ता बंदोबस्त और हमले के बेहतरीन संचालन की बदौलत इस ऐतिहासिक कारनामे को सफलता के मुकाम तक पहुंचाया। सीमित संसाधनों और सीमित स्रोतों के साथ लड़ना गुरिल्ला युद्ध का एक विशिष्ट लक्षण है, हम सभी इसको जानते हैं। बलों की संख्या, आधुनिक हथियारों की अधिकता, संसाधनों की बहुलता आदि की दुष्टि से दुश्मन लम्बे समय तक हमसे कई गुना बेहतर स्थिति में रहेगा और हमारे मुकाबले वह बेहद अनुकूल स्थिति में रहेगा। लेकिन आप लोगों ने इस लड़ाई में

अपनी प्रतिकूलताओं को अनुकूलता में बदल दिया और दुश्मन की अनुकूलताओं को बेअसर कर दिया। हमारे पास मौजूद हथियारों और गोलीबारूद का ही बेहतर उपयोग करते हुए गजब की तेजी और तूफानी आक्रमता का बेहतरीन तालमेल करते हुए इस हमले को सफल बनाया। इस तरह दुश्मन की अनुकूलता व्यवहार में तार-तार हो गई। जान की परवाह बिल्कुल किए बिना, दुश्मन पर तेजी से चढ़ाई करते हुए और दुश्मन के नजदीक तक जाकर उससे लोहा लेकर बड़ी संख्या में शत्रु बलों का सफाया करने के साथ-साथ उसके तमाम अस्त्र-शस्त्रों को छीन लेने में आप लोगों ने बेहतरीन मिसाल पेश की।

इस लड़ाई की एक और विशेषता यह है कि आप लोगों ने सामान्य भौगोलिक धरातल पर भी उच्च स्तर की लड़ाई का नमूना पेश किया। मौजूद धरातल में ही दुश्मन को अपेक्षाकृत प्रतिकूल भौगोलिक धरातल में धकेलकर आपने उसकी पूरी तरह घेराबंदी की। और उसका पूरी तरह से उन्मूलन करने में सफलता हासिल की।

दण्डकारण्य में, खासकर पश्चिम व दक्षिण बस्तर के इलाकों में 2005 से जारी फासीवादी सलवा जुडूम के तहत और पिछले आठ महीनों से जारी बर्बरतापूर्ण ऑपरेशन ग्रीनहंट के तहत शत्रु बलों ने क्या-क्या किया और क्या-क्या कर रहे हैं हम सभी जानते हैं। सैकड़ों जनता की निर्मम व अमानवीय तरीके से हत्या की। सैकड़ों महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार किया और कई महिलाओं की हत्याएं कीं। 2 साल के बच्चे से लेकर 70 साल के बुजुर्ग तक, हर उम्र के लोगों पर उन दरिंदों ने जुल्म ढाए। सैकड़ों गांवों के हजारों घरों को जलाया। फसलों को जलाया। सामानों को लूटा। मुरगों व बकरों को उठाकर खाया। अकथनीय व अमानवीय अत्याचारों का एक भयावह सिलसिला चलाया जोकि अभी भी जारी है। जब आप लोगों ने इन आतंकी भाड़े के बलों पर धावा बोला, अपने राजनीतिक लक्ष्य को प्राप्त करने के जज़्बे के साथ-साथ निश्चित रूप से आपके मन में ऐसे सारे जुल्मों और अत्याचारों की तसवीर जरूर कौंधी होगी। आपकी आंखों में आतंकी पुलिस, एसपीओ व अर्ध-सैनिक बलों के हाथों जलाए गए गांवों की तस्वीर जरूर उभरी होगी। बलात्कार की शिकार मां-बहनों, अपने बेटों व बेटियों को खोने वाले माता-पिता, अपने मां-बाप को खोने वाली संतानों और ऐसे सभी लोगों के आक्रोश भरे आंसुओं के एहसास ने आपको निश्चित रूप से उद्वेलित किया। उनसे हमारा रिश्ता न सिर्फ पारिवारिक है, बल्कि राजनीतिक भी है क्योंकि माओवादी आंदोलन की बुनियाद ही वे लोग हैं। दुश्मन हमारी पार्टी के नेतृत्वकारी कॉमरेडों को साजिश के तहत पकड़कर बाद में झूठी मुठभेड़ों में लगातार हत्या कर रहा है। पिछले साल हमारे प्यारे नेता कॉमरेड पटेल सुधाकर और अभी 12 मार्च को कॉमरेड शाखमूरी अप्पाराव की उसने बर्बर हत्या की। आपरेशन ग्रीन हंट के नाम से दुश्मन छत्तीसगढ़ के अलावा, बिहार-झारखण्ड, ओड़िशा, आंध्र, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा, कर्नाटक आदि राज्यों में हत्या, जुल्म, यातनाओं और अत्याचारों का नंगा नाच कर रहा है। ऑपरेशन ग्रीन हंट के नाम से लालगढ़ से लेकर सूर्जागढ़ तक फैले हुए व्यापक आदिवासी इलाके को बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और बड़े पूंजीपतियों के हवाले करने की मंशा से जारी अन्यायपूर्ण युद्ध का समूचा परिदृश्य आपके दिमाग के पटल पर घूमा। शोषित जनता के सच्चे सेवक और उनके उत्तम बेटे और बेटियां होने के नाते आपने उन सबकी तरफ से शानदार बदला लिया जो उनके तमाम जुल्मों और अत्याचारों को सालों से झेलते आ रहे हैं।

कम्युनिस्ट चेतना और बलिदान की सर्वोच्च भावना के प्रदर्शन के बिना यह सफलता संभव नहीं हो सकती थी। आप सभी कॉमरेड इससे ओतप्रोत थे। अदम्य साहस के साथ लड़ने की प्रेरणा यहीं से आपको प्राप्त हुई थी। जनता, पार्टी, जन संगठनों और जनताना सरकार की रक्षा करने और हमारे संघर्ष को मजबूती से आगे बढ़ाने के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगाने वाली चेतना की बदौलत ही आप लोगों ने यह कार्यनीतिक जीत हासिल की। इस सच्चाई के बावजूद भी कि शत्रु बल मरते दम तक लड़ते रहे, फिर भी उसका पूरी तरह से सफाया करने में आप कामयाब हो गए। इसके बावजूद भी कि हमारे कई कॉमरेड हताहत हो रहे थे, फिर भी आप लोग उसकी जरा भी परवाह किए बिना आगे बढ़ते गए और दुश्मन के खिलाफ बुलंद हौसलों से लड़ते गए। घायल होकर भी हमारे कई कॉमरेडों ने लड़ाई को पूरे जोशोखरोश के साथ जारी रखा। इस कामयाबी से यह सच्चाई फिर एक बार साबित हो जाती है कि एक कमजोर ताकत भी मजबूत ताकत को मात दे सकती है, बशर्तेकि उसकी जड़ें जनता में मजबूत हों।

माओवादी गुरिल्ला युद्ध का एक बुनियादी नियम यह है कि कार्यनीतिगत रूप से दुश्मन पर हमलों में हम एक के खिलाफ दस लोगों को तैनात करते हैं। व्यवहार में जब हम इस नियम को लागू करते हैं, दुश्मन की संख्या ज्यादा होने के बावजूद भी उसे हम टुकड़ों में बांटकर किसी एक टुकड़े पर हम अपेक्षाकृत बरतर जोर लगाते हैं ताकि उसका पूरी तरह सफाया किया जा सके। इस हमले में आप उस इलाके में दुश्मन की भारी तैनाती के बावजूद भी उसकी एक कम्पनी पर आप लोगों ने अपनी अपेक्षाकृत बरतर ताकत को केन्द्रित किया। और इसकी सफलता का यह भी एक प्रमुख पहलू रहा। इस कार्रवाई के लिए आवश्यक बलों का केन्द्रीकरण, उनकी सुचारू व सटीक तैनाती, जन मिलिशिया का बेहतर इस्तेमाल और उस इलाके की क्रांतिकारी जनता का सक्रिय सहयोग - इन सभी का इस सफलता में योगदान रहा।

इस हमले का प्रभाव काफी जबर्दस्त रहा। दुश्मन की पहलकदमी पर चोट करने में, विभिन्न शत्रु बलों के बीच अंतरविरोधों को बढ़ाने में और लुटेरे शासक वर्गों के बीच अंतरविरोध तेज करने में इसके प्रभाव को देखा जा सकता है। जन मुक्ति गुरिल्ला सेना जहां चाहे और जब चाहे, यहां तक कि दुश्मन के बेस कैम्पों के इर्दगिर्द भी और ठीक कैम्पों पर भी हमला कर उसके भाड़े के सशस्त्र बलों का सफाया कर सकती है, यह सोचकर दुश्मन के अंदर हड़कम्प मच गई। इस हमले

ने दुश्मन के खेमे में लाल आतंक पैदा किया। इस हमले के बाद पगलाए हुए दुश्मन ने ऐलान किया कि माओवादी आंदोलन का सफाया करने के लिए एक नया बल गठित किया जाएगा। इससे हमें उसकी हताशा की ही झलक मिल जाती है। मौजूदा बलों के साथ माओवादी आंदोलन को खत्म कर सकने के उसके तमाम दावों की धज्जियां उड़ गई हैं। अपने बलों के गिरे हुए मनोबल को ऊपर उठाने की नाकाम कोशिश के तहत दुश्मन ने इस हमले के बाद ढेर सारी सुविधाओं का ऐलान किया। कई इन्सेंटिव देने की घोषणा की। इस हमले के बाद दुश्मन ने और भी बड़े पैमाने पैसे बहाने और जनता पर और ज्यादा क्रूरता प्रदर्शित करने पर उतरू होगा। इस पागलपन व मूर्खता से उसका जनता से अलगाव और भी बढ़ेगा और उसके खिलाफ जनता में आक्रोश भी उतना ही बढ़ जाएगा।

इस कार्रवाई से देश का समूचा क्रांतिकारी खेमा उत्साहित हो उठा। इससे पार्टी और पीएलजीए के कतारों को तथा क्रांतिकारी जनता को काफी प्रेरणा मिली। यह हमारे लिए एक उच्च स्तर की उपलब्धि है। उच्च स्तर की युद्ध कार्रवाइयों में यह एक नया अनुभव है। इससे समूची पार्टी, पीएलजीए और जनता को गुरिल्ला युद्ध को और तेज करने की प्रेरणा मिली है। जनता को जनयुद्ध की अपराजेयता पर विश्वास दुगुना हुआ। इस सफल कार्रवाई से हमें अपने राजनीतिक कार्यों, जन कार्यों और सांगठनिक कार्यों को सुचारू रूप से संचालित करने में मदद मिली है। इस कार्रवाई में हमें हासिल हुए अस्त्र-शस्त्रों से हमें न सिर्फ अपनी गुरिल्ला शक्तियों को विस्तारित व सुदृढ़ करने, बल्कि जनयुद्ध को मजबूती से जारी रखने में मदद मिली है। सीमित संसाधनों और सीमित स्रोतों के साथ की गई इस कार्रवाई से अपने संसाधनों और स्रोतों को बढ़ाने में मदद मिली है। कांकेर, राजनांदगांव, नारायणपुर, बस्तर व गढ़चिरोली जिलों में 'ऑपरेशन त्रिशूल' के नाम से जारी बर्बर हमले का मुकाबला करने और प्रतिरोधी युद्ध को तेज करने में वहां की जनता को इस हमले से काफी प्रेरणा मिलेगी।

इस सफल कार्रवाई से समूची पार्टी, पीएलजीए और जनता को काफी कुछ सीखने को मिला है जिससे हमें आने वाले दिनों में युद्ध कार्रवाइयों के बेहतर संचालन में मदद मिलेगी। इस शौर्यपूर्ण कार्रवाई में हताहत हुए कॉमरेडों के लड़ाकूपन से हमें यह सीख मिली है कि अगर हम इस तरह अदम्य साहस व फौलादी इरादों के साथ लड़ते हैं तो हमें ऐसी कई और उपलब्धियां हासिल हो सकती हैं। यह हमारे सभी स्तरों के बलों, कमानों और कमेटियों की जिम्मेदारी है कि वे युद्ध कार्रवाइयों में तेजी व व्यापकता लाएं। बलों के केन्द्रीकरण में प्रगति लाने में और गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध में बदलने की प्रक्रिया में यह कार्रवाई एक मील का पत्थर साबित होगी।

कॉमरेडो, आप लोगों ने जो कामयाबी हासिल की इसका देश भर में व्यापक रूप से प्रचारित करने की जरूरत है। इस कार्रवाई में शहीद हुए साथियों की शानदार कुरबानी और मौत को भी मात देने वाले उनके इंकलाबी जज़्बे के बारे में जोर शोर से प्रचार करने की जरूरत है। मैं उम्मीद करता हूं कि आपकी कमान ने इस दिशा में कदम बढ़ाया होगा। कार्रवाई की समीक्षा के साथ-साथ शहीदों की जीवनियों का संकलन किया होगा। इस मौके पर आप लोगों को यह भी नहीं भूलना चाहिए कि दुश्मन और भी खूंखार रूप धारण कर हम पर पलटवार करने की कोशिश करेगा। अपनी इस शर्मनाक पराजय से उबरने के लिए और इसका बदला लेने के लिए कई साजिशें रचेगा। आपकी कमान को चाहिए कि वह इसे ध्यान में रखते हुए दुश्मन की हर कोशिश को नाकाम करने की योजना बनाए। आप लोगों को हर प्रकार की तैयारियां करनी होंगी ताकि ऐसी कार्रवाइयों को आम बनाया जा सके। आपकी कमान को यह भी करना चाहिए कि वह अपने लड़ाकू बलों को विशेष बलों के रूप में प्रशिक्षित व सुगठित करे। हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि लड़ाई को उच्च स्तर पर विकसित करने की दिशा में यह कार्रवाई एक पूर्वाभ्यास है।

यह हमला एक ऐसी परिस्थिति में हुआ जबकि देश के अंदर राजनीतिक हालात क्रांति के लिए बेहद अनुकूल बने हुए हैं। वर्तमान सड़ी-गली, शोषणकारी, दमनकारी और अन्यायपूर्ण व्यवस्था के खिलाफ देश भर में लोग कई मुद्दों को लेकर लड़ रहे हैं। इस सफल हमले से उन तमाम लोगों के दिलोदिमाग में जबर्दस्त खुशी का संचार हुआ है जो किसी न किसी रूप से इस शोषक-व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष का परचम उठाए रखा है। और उनके अंदर हमारी पार्टी के नेतृत्व में जारी माओवादी जनयुद्ध पर विश्वास बढ़ने लगा है। अगर हम इस परिस्थिति का फायदा उठाकर देश के मेहनकश व शोषित लोगों को संगठित कर क्रांतिकारी संघर्ष में उतार सकते हैं तो निश्चित रूप से हमारा वर्तमान जनयुद्ध लम्बे-लम्बे डग भरते हुए विजय की मंजिल की ओर आगे बढ़ सकता है।

आखिर में, मैं फिर एक बार हमारी केन्द्रीय कमेटी की तरफ से और हमारी समूची पार्टी और पीएलजीए की तरफ से आपकी कमान, विभिन्न स्तरों के कमाण्डरों और बहादुर योद्धाओं का अभिनंदन करता हूं। इस कार्रवाई में शहीद हुए कॉमरेड्स रुकमति, वागाल, विज्जाल, इंगाल, राजू, मंगू, रामाल और रतन की बहादुराना शहादत को मैं लाल-लाल सलाम पेश करता हूं। शहीद साथियों के माता-पिता, परिजनों, दोस्तों और कॉमरेडों के प्रति मैं गहरी संवेदना प्रकट करता हूं।

इस कामना के साथ कि आप जनता के सक्रिय समर्थन से कई और कामयाबियां हासिल करते हुए आगे बढ़ें, आपके बल और ज्यादा मजबूत हों और दिन-ब-दिन आपके फॉर्मेशनों में वृद्धि हो...

क्रांतिकारी अभिनंदन के साथ,

(गणपति)
महासचिव,
भाकपा (माओवादी)

पूर्वी रीजनल ब्यूरो का संदेश

दंतेवाड़ा (ताड़िमेट्ला) का शानदार एम्बुश जवाबी कार्रवाई की उज्जवल मिसाल है!

प्रिय कॉमरेड सचिव,

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

ऑपरेशन ग्रीन हण्ट जैसे बर्बर सैनिक अभियान का मुंहतोड़, जवाबी, शानदार, शौर्यपूर्ण व अब तक की सबसे उन्नत व सबसे बड़ी प्रतिरोधात्मक कार्रवाई के उज्जवल मिसालस्वरूप दंतेवाड़ा का सफल डेलिबरेट एम्बुश के लिए पूर्वी रीजनल ब्यूरो और पूर्वी रीजनल कमांड की ओर से मैं आपको, स्पेशल जोनल कमिटी के सचिव सहित समूची स्पेशल जोनल कमिटी को, राज्य मिलिटरी कमिशन को, लड़ाई में अंशग्रहणकारी सभी वीर कमांडरों और बहादुर योद्धाओं एवं साहसी लोकल मिलिशिया को क्रांतिकारी व गरमजोशी भरा लाल सलाम पेश करता हूँ। मेरी राय के अनुसार यह एक समयोचित व असाधारण महत्व रखने वाली सैनिक व राजनैतिक कार्रवाई है। साथ ही, यह भारी एम्बुश गुणात्मक रूप से तथा युद्धकला के दृष्टिकोण से बहुत-ही उन्नत व सफल कार्रवाई साबित हुई। सच कहा जाय तो यह एम्बुश दुश्मन की फौज का व्यापक पैमाने पर उन्मूलन के समतुल्य है जहां पर योजनाबद्ध ढंग से कई बारूदी सुरंग का विस्फोट के जरिए व्यापक संख्या में दुश्मन की फौज को सफाया कर उनके सारे हथियार सहित सभी कुछ जब्त कर उन्हें निश्चिन्ह किया गया है। जिसको कि दुश्मन को पूरी तरह नेस्तानाबूद किया गया कहा जा सकता है।

जिस समय अमरीकी साम्राज्यवाद के खिदमतगार सोनिया-मनमोहन-चिदम्बरम फासिस्ट गुट करीब 75 हजार से लेकर एक लाख आत्याधुनिक हथियारों से लैस व उन्नत युद्धकला में प्रशिक्षित विभिन्न प्रकार के आक्रामक अर्द्ध-सैनिक बलों को छत्तीसगढ़, झारखण्ड, बिहार, ओड़िशा, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, आंध्रप्रदेश आदि प्रांतों के विशाल क्षेत्रों में तैनात कर ऑपरेशन ग्रीन हण्ट के नाम से सही मायने में देश की सबसे वंचित जनता और उनकी रहनुमाई पार्टी भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) को रौंद डालने के लिए युद्ध शुरू कर दिया है तथा एक श्वेत आतंक का वातावरण पैदा किया है। उस वक्त दंतेवाड़ा सफल एम्बुश ने और एक बार यह साबित किया कि तमाम प्रतिक्रियावादी दरअसल कागजी बाघ हैं। वह देखने में भयंकर होता है, पर जनता को गोलबंद कर तथा उस पर आधारित होकर पीएलजीए द्वारा साहस व बुद्धि के साथ गुरिल्ला युद्ध के दांवपेंच को ठोस स्थिति के अनुसार लचीला ढंग से लागू कर पाने से अंत तक उसे पराजित कर पाना नामुमकिन नहीं है। वस्तुतः, दंतेवाड़ा सफल एम्बुश आज तमाम भारत के क्रांतिकारी खेमे में खुशी की लहर पैदा की है, उनके मनोबल को बढ़ाया है तथा कम शक्ति लेकर भी शक्तिशाली दुश्मन की ताकत को थोड़ा-थोड़ा कर कैसे नष्ट किया जा सकता है उसके लिए प्रेरित किया है। दूसरी ओर, तमाम दलाल दुश्मन व प्रतिक्रियावादियों के खेमे में निराशा पैदा की है, उसके मनोबल को गिराया है और भीतर से उन्हें कमजोर किया है।

ऐसी स्थिति में दंतेवाड़ा सफल डेलिबरेट एम्बुश के फलस्वरूप पहलकदमी अपने हाथ में लेने का एक मौका हमारे हाथ में आया है। इसे कतई हमारे हाथ से निकलने नहीं देना चाहिए। इसलिए हमें अपनी पहलकदमी को सौ गुना बढ़ाकर ऑपरेशन ग्रीन हण्ट जैसे बर्बर अभियान का सक्रिय व सफल प्रतिरोध के लिए गुरिल्ला कायदे में दुश्मन की ताकत पर छोटी, मध्यम व मौके के अनुसार अपेक्षाकृत बड़ी किस्म की कार्रवाई हेतु ठोस योजना अपनाने की जरूरत है। साथ ही, दुश्मन को हैरान-परेशान के लिए भी, एक-एक इलाके के अनुसार मूलतः मध्यवर्ती शक्ति व लोकल मिलिशिया के जरिए लगातार कुछ न कुछ कार्रवाई की योजना अपनाने की जरूरत है।

दंतेवाड़ा सफल व शानदार एम्बुश आज इस बात को स्पष्ट रूप से दिखा रहा है कि फासिस्ट सरगना चिदम्बरम व आडवाणी यानी कांग्रेस-बीजेपी और सामाजिक फासीवादी सी.पी.एम. में कोई बुनियादी फर्क नहीं है। अर्थात्, कांग्रेस-बीजेपी और सी.पी.एम. के जन विरोधी व क्रांति विरोधी चरित्र में, रूपों में कुछ फर्क को छोड़कर, दरअसल अंतर्वस्तु में कोई बुनियादी फर्क नहीं है। दंतेवाड़ा शानदार एम्बुश ने तमाम प्रगतिशील, जनवादी व क्रांतिकारी शिविर और प्रतिक्रियावादी व संशोधनवादी शिविर - इन दोनों शिविरों के बीच और स्पष्ट ध्रुवीकरण करने में भी काफी मदद की है। कौन जनता के पक्ष में और कौन जनता के खिलाफ में, कौन न्याय के पक्ष में और कौन अन्याय के पक्ष में - यह भी दंतेवाड़ा एम्बुश के जरिए आज पहले की अपेक्षा और ज्यादा स्पष्ट होते जा रहा है।

कामरेडो, इस सफल एम्बुश के बाद जो अनुकूल स्थिति हमारे सामने आई है, मुझे पूरी उम्मीद है कि इस अनुकूल स्थिति का फायदा उठाकर आप पीएलजीए में नए रिक्रूटमेंट, एलजीएस, प्लाटून, कम्पनी तथा बटालियन का निर्माण, इलाका विस्तार, पार्टी को और सुदृढ़करण व बोल्शेविकरण, जन संगठन व जन आंदोलन को और व्यापक व विस्तार करने तथा क्रांतिकारी किसान कमिटी को और मजबूत करते हुए जहां पर संभव वहां क्रांतिकारी जन कमिटी का यानी जनसत्ता का निर्माण करने आदि कामों को तालमेलपूर्ण ढंग से आगे बढ़ाने के लिए तमाम जरूरी कदम उठाएंगे। मुझे इसकी भी पूरी उम्मीद है कि इस प्रक्रिया

को आगे बढ़ाकर ही हम गुरिल्ला युद्ध को चयालमान युद्ध में, पीएलजीए को पीएलए में और गुरिल्ला जोन को आधार क्षेत्र में बदलने में सक्षम होंगे।

अंत में, मैं यही कहना चाहता हूं कि अभी भी समग्र रूप से हमारे लिए स्थिति कठिन और चुनौतीपूर्ण है। पर, हमने इस चुनौती को स्वीकार कर मौजूदा क्रांति को आगे बढ़ाने हेतु गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध में, पीएलजीए को पीएलए में और गुरिल्ला जोन को आधार क्षेत्र में बदल देने का कार्यभार ग्रहण किया है। हजारों दिक्कतों और बहुत से कामरेडों की शहादत के बावजूद हम आगे बढ़ने में दृढ़प्रतिज्ञ हैं। क्योंकि हमारी क्रांति की रहनुमाई भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) है जिसकी एक सही लाइन, नीति व पद्धति है, जिसके बल पर हम किसी भी चुनौती अथवा कठिनाई को झेलते हुए उसे पार कर सकते हैं, मंजिल की ओर दृढ़कदम बढ़ सकते हैं।

भारतीय क्रांति की अग्रगति के इस चरण में, हमारे पोलिटब्यूरो (पीबी), केन्द्रीय कमेटी (सीसी) व केन्द्रीय सैन्य कमिशन (सीएमसी) के दिशा-निर्देशन को दृढ़तापूर्वक अमल में लाकर और नई-नई सफलताएं आप हासिल करेंगे, इसी उम्मीद के साथ आप सभी को और एक बार दंतेवाड़ा के सफल, शानदार, शौर्यपूर्ण व वीरतापूर्ण एम्बुश की कार्रवाई के लिए मेरा तहेदिल का क्रांतिकारी व गरमजोशी भरा लाल सलाम।

क्रांतिकारी अभिनन्दन के साथ,

किशन दा

पूर्वी रीजनल ब्यूरो

तारीख: 6. 04. 10

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी
(माओवादी)

ताड़िमेट्ला एम्बुश के दौरान हुए शहीदों को शत्-शत् लाल सलाम!

प्रिय कॉमरेड सचिव, डीके एसजेडसी

दंतेवाड़ा के शानदार एम्बुश के महत्व को बुलन्द करते हुए पूर्वी रीजनल ब्यूरो व कमांड की ओर से मैंने अपना विचार दिनांक 6 अप्रैल 2010 को ही एक पत्र के रूप में प्रस्तुत किया था। पर, 8/4 और 9/4 के बीबीसी द्वारा प्रसारित समाचार के माध्यम से एसजेडसी प्रवक्ता द्वारा भेजी गई यह सूचना कि दंतेवाड़ा एम्बुश के दौरान हमारे भी आठ कामरेडों ने (जिसमें दो सेक्शन कमाण्डर, दो डिप्यूटी कमांडर और चार पीएलजीए सदस्य शामिल हैं) शहादत दी है, इस बात की जानकारी मिली। यद्यपि प्यारे कामरेडों के शहीद होने की घटना बहुत ही दुखद है, फिर भी, ऐसे एम्बुश को सफल करते समय शौर्यपूर्ण ढंग से अमूल्य प्राणों की कुर्बानी देना कभी-कभी अनिवार्य हो जाता है। दंतेवाड़ा एम्बुश के दौरान हमारे जो आठ कामरेड शहीद हुए हैं, उन वीर शहीदों के प्रति मैं भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। इन लोगों ने अपने प्राणों को न्योछावर कर इस शानदार एम्बुश को सफल बनाने की जो उज्ज्वल मिसाल पेश की है, वो हम सबों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। पूर्वी रीजनल ब्यूरो, पूर्वी रीजनल कमांड और तमाम कतारों की तरफ से मैं और एक बार फिर इन वीर व महान शहीदों के प्रति शत्-शत् लाल सलाम पेश करता हूं।

कामरेडो, प्यारे कामरेडों की शहादतों ने हमारी आखों में जरूर आंसू भर दिया है। ये आठ कामरेड सदा-सदा के लिए हमसे बिछुड़ जाने से हम बहुत ही मर्माहत हैं। पर, जिस बहादुरी व वीरता के साथ उन्होंने दुश्मन को नेस्तनाबूद कर लड़ाई में जीत हासिल करने में मदद पहुंचाई है, वह हर समय के लिए हमारा मार्गदर्शक व प्रेरणा का स्रोत बना हुआ रहेगा। इसलिए हम आखों से आंसू पोंछ लिए हैं और आंसू को क्रोध में बदल दिए हैं और इनके अधूरे सपने व कार्यों को पूरा करने की शपथ से लैस होकर दुश्मन पर और बड़ा हमला करने के लिए खुद को तैयार कर लिये हैं।

साथियो, जनता के लिए इनके आत्मबलिदान हिमालय पहाड़ से भी भारी है। वे अमर शहीद हमारे अंदर, जनता के अंदर और क्रान्तिकारी संघर्ष के अंदर सदा जिंदा रहेंगे। हम उनके अधूरे सपनों को यानी नई जनवादी क्रान्ति को सफल करते हुए समाजवाद व साम्यवाद की स्थापना करने के सपनों को साकार करके ही तमाम शहीदों की हत्या का राजनीतिक बदला लेंगे।

दंतेवाड़ा एम्बुश के दौरान शहीद हुए वीर शहीदों, तुझे मेरा लाल सलाम!

दंतेवाड़ा एम्बुश के दौरान शहीद हुए अमर शहीदों, तुझे मेरा लाल सलाम!

क्रांतिकारी अभिनन्दन के साथ,

किशन दा

पूर्वी रीजनल ब्यूरो

पूर्वी रीजनल कमाण्ड

तारीख: 09.04.10

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

अपने लहू से भारत के क्रांतिकारी जनयुद्ध के इतिहास में नया अध्याय जोड़ने वाले ताड़िमेट्ला वीर शहीदों को लाल-लाल सलाम!

(ताड़िमेट्ला एम्बुश में शहीद हुए 8 कॉमरेडों की जीवनियों का संक्षिप्त चित्रण हम यहां पेश कर रहे हैं जो हमें प्राप्त हुईं। - सम्पादकमण्डल)

कॉमरेड माड़िवी रुकमती

कॉमरेड रुकमती (26) का जन्म पश्चिम बस्तर डिवीजन (बीजापुर जिला) के कुटरू के पास मंगापेटा में हुआ था। मध्यम वर्ग के बंजारा परिवार में जन्मी कॉमरेड रुकमति के पिता का नाम मंगू और मां का नाम चंपा है। जब वह छोटी थीं तब उनके माता-पिता जमीन की तलाश में मुकरम गांव में आकर बसे थे। चौथीं कक्षा तक पढ़ाई के बाद उन्हें घर का कामकाज संभालना पड़ा था। घर में खाना बनाने के अलावा गाय-बकरी चराने के लिए भी जाती थीं। गांव में जब भी पार्टी का गुरिल्ला दस्ता आकर मीटिंग करता था तो वह ध्यान से सुना करती थीं। गरीब आदिवासियों की परेशानियों से वह पहले से ही परिचित थीं। वह जानती थीं कि महिलाओं पर सरकारी अधिकारियों का जुल्म क्या होता है। उस इलाके में जमीन को लेकर वन विभाग वालों ने जनता को किस तरह परेशान किया था, यह भी जानती थीं। इसी समझ ने उन्हें केएएमएस (क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन) के करीब लाया। केएएमएस में एक साल काम करने के बाद पीएलजीए में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में भर्ती होने की इच्छा उन्होंने पार्टी कमेटी के सामने रखी। पार्टी ने उसे स्वीकार भी किया।

फरवरी 2004 में वह पीएलजीए में भर्ती हो गईं। उस समय उनकी उम्र 20 साल थी। सबसे पहले उन्होंने नेशनल पार्क इलाके में ही काम किया। डेढ़ साल बाद अक्टूबर 2005 में उन्हें नव निर्मित कम्पनी-2 में स्थानांतरित किया गया था। तब तक बर्बर सलवा जुडूम के खिलाफ प्रतिरोधी संघर्ष पूरे जोर पर था। लेकिन जरा भी संकोच किए बगैर वह पीएलजीए के प्रधान बलों में शामिल हो गईं। उसी समय सलवा जुडूम का कहर उनके गांव पर भी टूटा था। उनके माता-पिता को पुराने गांव में भगा दिया गया था। उस समय पुलिस ने यह अफवाह भी उड़ाई थी कि उसने रुकमती को मार डाला। कई दिनों तक उनके माता-पिता काफी दुखी थे क्योंकि उन्हें सच पता नहीं था।

कम्पनी-2 में भर्ती होने के बाद रुकमती जुडूम-पीड़ित जनता की रक्षक बनी थीं। सलवा जुडूम को हराने के लिए कम्पनी-2 द्वारा की गई कई फौजी कार्रवाइयों में उनकी भागीदारी रही। इस तरह जनता के जानमाल की रक्षा करने में उन्होंने अपना योगदान दिया। दिसम्बर 2005 में धान कटाई के समय पहरा देकर लोगों की धान काटने में सहायता की। उस समय रक्षा जिम्मेदारियों को निभाने के साथ-साथ कॉमरेड रुकमती ने जनता के साथ मिलकर श्रम भी किया। वह फौजी रणकौशल सीखने में काफी उत्साह दिखाती थीं। ग्राउण्ड में नियमित रूप में भाग लेते हुए अपनी क्षमता बढ़ाने की हर दम कोशिश करती थीं। 2006 में उन्हें पार्टी सदस्यता प्रदान की गई। सरकारी दमन का मुकाबला करने के दौरान ही पार्टी ने एक नई कम्पनी का निर्माण करने का फैसला लिया था। इस तरह नव गठित कम्पनी-3 में उन्हें शामिल किया गया। 2007 में कम्पनी-3 ने जितनी भी कार्रवाइयां की थीं, उन सभी में कॉमरेड रुकमती की भागीदारी रही, जोकि पूरे दण्डकारण्य आंदोलन के लिए प्रेरणादायक था। उरपलमेट्टा, ताड़िमेट्ला, बट्टिगुड़ा और अन्य कार्रवाइयों में उन्होंने अपनी फौजी क्षमता का प्रदर्शन किया था। उनके इस विकासक्रम को देखते हुए कम्पनी के पार्टी नेतृत्व ने मार्च 2008 में उन्हें सेक्शन डिप्यूटी कमाण्डर की जिम्मेदारी दी। इसके बाद बढ़ी हुई जिम्मेदारी के साथ उन्होंने अपने काम को जारी रखा। चुनाव बहिष्कार, टीसीओसी जैसे राजनीतिक-फौजी अभियानों में उन्होंने अपनी जिम्मेदारी निभाई। अप्रैल 2009 में मिनपा के पास हुए ऐम्बुश में और किष्टारम हेलिपैड व पालोड़ में किए गए हमलों में तथा पुलिस के हथियार छीन लेने में उनकी भूमिका रही। एक तरफ फौजी कार्रवाइयों में अनुभव हासिल करते हुए ही दूसरी तरफ अपनी राजनीतिक क्षमता बढ़ाने के लिए भी कॉमरेड रुकमती ने पूरा प्रयास किया। इसे देखते हुए पार्टी ने उन्हें जून 2009 में प्लटून पार्टी कमेटी सदस्य के रूप में पदोन्नति दी। उनकी कार्य-क्षमता को देखते हुए उन्हें सप्लाई सेक्शन की कमाण्डर के रूप में नियुक्त किया गया था। इस काम में कॉमरेड रुकमती ने छह महीनों तक योगदान दिया।

2007 में कॉमरेड रुकमती ने अपनी ही कम्पनी में काम करने वाले एक कॉमरेड से प्यार किया और दोनों ने पार्टी की अनुमति से शादी कर ली। दोनों कॉमरेडों ने वैवाहिक जीवन में आने वाली समस्याओं को आलोचना और आत्मालोचना की पद्धति से दूर करने की कोशिश की। अगस्त 2009 में सैन्य फार्मेशन में विकास करते हुए गुरिल्ला बटालियन गठित करने का फैसला हुआ था। यह वही समय था जब केन्द्र और राज्य सरकारों ने 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' के नाम से देश भर में एक व्यापक व विनाशकारी दमन अभियान छेड़ दिया जो दरअसल जनता के खिलाफ युद्ध है। इस तरह कॉमरेड रुकमती पीएलजीए की पहली बटालियन की सदस्या बन गईं। बाद में बटालियन में उन्हें दूसरी कम्पनी में सेक्शन कमाण्डर की जिम्मेदारी दी गई। बटालियन के गठन के कुछ ही दिनों बाद कोबरा बलों के साथ हुई लड़ाई में कॉमरेड रुकमती ने बहादुरी के साथ भाग लिया और अपने सेक्शन का नेतृत्व किया। दुश्मन के ऑपरेशन ग्रीन हंट के खिलाफ पार्टी ने टीसीओसी अभियान चलाया जिसके

तहत 6 अप्रैल को ताड़िमेटला के पास ऐतिहासिक हमला किया गया। इस हमले को लगभग पूरा करके दुश्मन के सारे हथियार छीन लेने के सिलसिले में जब कॉमरेड रुकमती जाकर मारे गए दुश्मन बलों से हथियार उठा रही थीं, तभी एक गोला फटने से उनके सिर और गले में गहरी चोटें आई थीं। गंभीर रूप से घायल अवस्था में साथी कॉमरेडों ने उन्हें उठाकर कैम्प तक लाया था। जब गुरिल्ला डॉक्टर उन्हें बचाने की कोशिश कर ही रहे थे, 7 घण्टे बाद उन्होंने दम तोड़ दिया। दूसरे दिन सभी शहीदों के साथ कॉमरेड रुकमती का भी अंतिम संस्कार किया गया जिसमें सैकड़ों लोगों ने भाग लिया। जब उनकी चिता जल उठी क्रांतिकारी नारों से जंगल-पहाड़ गूंज उठे। आइए, इस बहादुर व नौजवान कॉमरेड की विरासत को जारी रखते हुए ताड़िमेट्ला जैसी सैकड़ों फौजी कार्रवाइयों में दुश्मन को धूल चटाने और उसके ऑपरेशन ग्रीन हंट को हराने की कसम खाएं।

कॉमरेड पोड़ियम वागाल

23 साल के नौजवान कॉमरेड वागाल का जन्म दक्षिण बस्तर डिवीजन (जिला दंतेवाड़ा) के कोंटा इलाके के रेगडगट्टा गांव में हुआ था। पोड़ियम लख्मू और लिंगे की पांच संतानों में वागाल चौथी संतान थे। बचपन से ही क्रांतिकारी गीतों से प्रेरित होकर कॉमरेड वागाल बाल संगठन में शामिल हुए थे। बाल संगठन में रहते हुए उन्होंने कई सभा-सम्मेलनों में भाग लिया था। बड़े होने के बाद क्रांतिकारी प्रचार के अभियानों में भाग लिया करते थे। कॉमरेड वागाल के दादा और पिता जगदलपुर के नजदीक गांव कुना के रहने वाले थे। वहां से जमीन की कमी के कारण गांव रेगड़ में आ बसे थे। गरीब आदिवासी परिवार में पैदा हुए वागाल के तीन बड़े भाई और एक छोटा भाई हैं। उनका छोटा भाई भी फिलहाल पार्टी में काम कर रहा है।

रेगड़ गांव में सरकारी स्कूल न होने के कारण कॉमरेड वागाल को पढ़ने का मौका नहीं मिला था। बाल संगठन में रहते हुए उन्होंने जनताना सरकार द्वारा संचालित रात पाठशाला में थोड़ा बहुत लिखना-पढ़ना सीखा था। बाल संगठन में उन्होंने सक्रिय रूप से काम किया था। जनताना सरकार के प्रचार कार्यक्रमों के साथ-साथ कृषि विकास के कामों में भाग लिया करते थे। रेगड़ गांव का इतिहास तीखे वर्ग-संघर्ष से भरा है। इस गांव के जमींदार और प्रतिक्रांतिकारी मुखिया लोग गरीब जनता को दबाकर रखा करते थे। काफी संघर्ष के बाद ही वो झुक गए और जनता खुलकर क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने लगी थी। बाद में सरकारी दमन के खिलाफ भी इस गांव के लोगों ने काफी प्रतिरोध किया। गांव में छापेमारी कर संगठन के नेताओं को पकड़ने की कोशिश करने पर गांव की महिलाओं और पुरुषों ने कई बार प्रतिरोध कर उन्हें छुड़ा लिया था। कई बार तो थाने में घुसकर भी लोगों ने अपने साथियों को छुड़ा लाया था। कई बार पुलिस के साथ इस गांव की जनता से नोंकझोंक हुई थी। शोषक सरकारों को यह गांव फूटी आंख नहीं सुहाता था। हालांकि उस समय कॉमरेड वागाल छोटे थे, लेकिन उन पर इस सबका गहरा प्रभाव था।

दो साल तक बाल संगठन में काम करने के बाद कॉमरेड वागाल की सक्रियता को देखते हुए जनताना सरकार ने ग्राम सुरक्षा दस्ते में सदस्य के रूप में चुन लिया। उन्होंने इस जिम्मेदारी को बेहिचक अपने कंधों पर ले लिया। सलवा जुडूमी हमलों से अपने गांव और गांव की जनता को बचाने के लिए उन्होंने पहरेदारी, गश्त आदि कामों में हिम्मत के साथ भाग लिया। 2006 में इस गांव पर सरकारी बलों का हमला हुआ था, जैसे किसी दुश्मन देश पर सेना का हमला होता हो। हेलिकॉप्टर से उतरे सशस्त्र बलों ने गांव में 90 साल के एक बूढ़े को गोली मार दी। कई घरों में आग लगा दी। वागाल के घर को भी जला दिया गया था। मिलिशिया में काम कर रहे कॉमरेड वागाल ने इस बर्बरता को नजदीक से देखा था। जनता को इस हमले से बचाने के लिए सभी को एक सुरक्षित जगह पर ले जाने के बाद अपने परम्परागत हथियारों से मिलिशिया के कॉमरेडों ने आतंकी बलों पर हमला भी किया था जिसमें वागाल भी शामिल थे। बाद में एर्राबोर जुडूम शिविर पर किए गए हमले में कॉमरेड वागाल की भूमिका रही। दर्जनों जुडूमी गुण्डों को मार गिराने में उन्होंने वीरता से भाग लिया। दिसम्बर 2005 में भेज्जी थाने से निकट हाट बाजार में एक पुलिस वाले पर हमला कर एक एसएलआर छीन लाने की कार्रवाई में भी कॉमरेड वागाल की भूमिका रही। सलवा जुडूम के खिलाफ प्रतिरोध के दौरान काफी मुश्किलों का भी सामना किया था उन्होंने। गांव पर सैकड़ों की संख्या में पुलिस व गुण्डे हमले करते थे और सभी ग्रामीण जंगलों में भाग जाते थे। सारे घर जला देते थे। खाने को कुछ नहीं मिलता था। कई दिनों तक भूखे रहना भी पड़ता था। सारी मुश्किलों को प्रत्यक्ष देखने और झेलने के बाद उन्होंने समझ लिया कि इस व्यवस्था को बदलने वाली क्रांति को सफल बनाए बिना इन मुश्किलों से निजात नहीं मिलने वाली है। इसीलिए उन्होंने जून 2006 से पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनकर सैनिक यूनिट में काम संभाला।

जून 2006 से एक साल तक कॉमरेड वागाल ने पलटन-4 में सदस्य के रूप में काम किया था। बाद में एक नेतृत्वकारी कॉमरेड के गॉर्ड के रूप में काम किया। बाद में उनका तबादला कम्पनी-8 में हुआ था। बाद में कम्पनी के नेतृत्व ने उन्हें एलएमजी मैन की जिम्मेदारी दी थी। 2009 अगस्त में बनाई गई पहली बटालियन में कॉमरेड वागाल को शामिल किया गया। वहां भी उन्हें एलएमजी मैन की ही जिम्मेदारी रही।

फरवरी 2009 में कॉमरेड वागाल को पार्टी सदस्यता दी गई थी। और उनकी चेतना के स्तर को देखते हुए फरवरी 2010 में पलटन पार्टी कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया। पार्टी के हर निर्णय को अमल करने में कॉमरेड वागाल आगे रहा करते थे। जो भी जिम्मेदारी सौंप देने पर लगन के साथ उसे निभाने की कोशिश करते थे।

फौजी मोर्चे पर कॉमरेड वागाल एक उच्च दर्जे के कॉमरेड

रहे। अपनी जान पर खेलते हुए फौजी कार्रवाइयों को सफलता दिलाने को हर दम तत्पर रहते थे। अपनी फौजी रणकौशल को बढ़ाने पर हमेशा आतुर रहा करते थे। 2007 में उरपलमेट्टा कार्रवाई को सफल बनाने में उनका योगदान रहा। कोंटा इलाके में पीएलजीए द्वारा की गई कई छोटी-बड़ी कार्रवाइयों में उनका योगदान रहा। 2007 में पलटन-4 और स्थानीय बलों ने मिलकर बंडा के पास मिजो बलों पर एक हमला किया था जिसमें 10 आतंकी मिजो जवानों को मार गिराया गया था। 2008 में बंडा के पास दूसरी बार किए गए ऐम्बुश में भी उनकी भागीदारी रही जिसमें 4 एसपीओ का सफाया किया गया और 5 को आत्मसमर्पण करवाया गया था। 2009 में मिनपा में हुए ऐम्बुश में भी उन्होंने बहादुरी का प्रदर्शन किया था जिसमें 12 सीआरपीएफ वालों का सफाया किया गया था और छह हथियार छीन लिए गए थे। किष्टारम के पास किए गए हमले में भी उनकी भूमिका रही।

2009 के मध्य में केन्द्र-राज्य सरकारों ने एक भारी हमला छेड़ दिया जिसे ऑपरेशन ग्रीन हंट का नाम दिया गया। इसमें कोबरा बलों को उतारकर उनके बारे में इतना प्रचार किया गया था मानों वो आकर सबको काट जाएंगे। लेकिन 17 सितम्बर 2009 को पालचेलमा के पास पीएलजीए की बटालियन ने दुश्मन बलों को घेरकर छह को मार डाला जिसमें दो अधिकारी शामिल थे। उनके सारे हथियार भी छीन लिए गए थे। उस हमले में भी कॉमरेड वागाल ने एलएमजी मैन के रूप में बहादुरी से लड़ा था।

ताड़िमेट्ला की लड़ाई उनकी आखिरी लड़ाई थी जोकि एक ऐतिहासिक लड़ाई थी। इस कार्रवाई को सफल बनाने में शुरू से लेकर आखिर तक उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसमें भी कॉमरेड वागाल ने अपनी एलएमजी से कई दुश्मनों को मार गिराया। जब दुश्मन को पीछे से घेरकर मेड़ की आड़ लेकर लड़ रहे थे तब एलएमजी के लिए पोजिशन अनुकूल नहीं था। तब उन्होंने अपनी एलएमजी कमाण्डर को देकर उनकी एके-47 लेकर पोजिशन बदला और कई सारे दुश्मनों का खात्मा किया। उसी समय दूसरी ओर पोजिशन लिए हुए दुश्मनों ने निशाना साधकर गोली चला दी जो उनके सिर में जा लगी। इस तरह एक जांबाज योद्धा का शौर्यपूर्ण सफरनामा अचानक समाप्त हुआ।

पूरी कार्रवाई को सफलता के मुकाम तक पहुंचाने के बाद कॉमरेड वागाल की लाश को उठा ले जाया गया। अगले दिन उनका अंतिम संस्कार किया गया जो सैकड़ों स्थानीय लोगों की उपस्थिति में संपन्न हुआ। चूंकि उनका परिवार नजदीक नहीं था, इसलिए शव को उनके सुपुर्द नहीं करवा पाए। क्रांतिकारी गीतों और नारों के साथ अंतिम संस्कार संपन्न हुआ।

कॉमरेड विज्जाल (उरसा सुधरू)

25 साल के आदिवासी नौजवान कॉमरेड विज्जा का जन्म पश्चिम बस्तर डिवीजन के भैरमगढ़ इलाके के ग्राम पामरा में हुआ था। माता-पिता की चार संतानों में वह दूसरी संतान थे। घर पर उनका नाम उरसा सुधरू था। कॉमरेड विज्जा जब छोटे थे तभी उनके माता-पिता गुजर गए थे। इससे इन चार बच्चों पर जैसे मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। खाने-पीने और कपड़ों के लिए भी उन्हें काफी परेशानी होती थी। इन्हीं तकलीफों ने उन्हें क्रांतिकारी आंदोलन की ओर खींच लाया। बचपन से ही कॉमरेड सुधरू क्रांतिकारी राजनीति से प्रेरित हुए थे। इसलिए बाल संगठन में वह सक्रिय कार्यकर्ता बने थे। जब बड़े हुए तो सहज ही हथियार उठाया। अपने भाई-बहन को भी पार्टी में शामिल होने का प्रोत्साहन दिया जिससे उनके एक भाई और बहन फिलहाल पार्टी में काम कर रहे हैं।

पार्टी में भर्ती होने से पहले कॉमरेड विज्जा ने जन मिलिशिया में सक्रिय काम किया था। उसमें काम करते-करते पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनने का मन बना लिया था। मई 2005 में उन्हें भर्ती कर लिया गया और एक साल तक वहीं भैरमगढ़ एलओएस में काम किया। लेकिन कॉमरेड विज्जाल की फौजी क्षमताओं को देखते हुए अगस्त 2006 में कम्पनी-3 में सदस्य के रूप में भेजा गया। उसके बाद फौजी मामलों में उन्होंने ज्यादा ध्यान देते हुए सीखने का पूरा प्रयास किया। घर में रहते समय उन्हें पढ़ाई-लिखाई का मौका नहीं मिला था। लेकिन पार्टी में भर्ती होने के बाद ध्यान लगाकर पढ़ना-लिखना सीख लिया। कम्पनी-3 में जाने के बाद उन्हें पार्टी सदस्यता प्रदान की गई।

कम्पनी-3 में रहते हुए उन्होंने अनेक कार्रवाइयों में भाग लिया। कम्पनी में रहते हुए कॉमरेड विज्जाल ने शहीद कॉमरेड चंदू, जोकि पिछले साल अप्रैल में मिनपा ऐम्बुश में शहीद हुए थे, के गॉर्ड के रूप में काम किया था। किसी भी काम को उन्होंने करने से इनकार कभी नहीं किया। खासकर फौजी कार्रवाइयों के दौरान उन्होंने कई बार नेतृत्वकारी कॉमरेडों को बचाया था। अगस्त 2009 से वह नव गठित बटालियन का सदस्य बन गया। जनता के लिए आखिरी दम तक लड़ने का दृढ़ संकल्प था उनमें। इसीलिए अपनी कमजोरियों को भी पहचानते हुए उन्हें दूर करने की कोशिश करते थे। बटालियन में काम करने के दौरान उनके अनुभव और चेतना को देखते हुए सेक्शन डिप्यूटी कमाण्डर के रूप में उन्हें जिम्मेदारी दी गई थी।

जहां तक फौजी कार्रवाइयों में उनके योगदान का सवाल है, 2007 में उरपलमेट्टा से लेकर अपनी आखिरी ताड़िमेट्ला लड़ाई तक कई कार्रवाइयों में उनकी जबर्दस्त भूमिका रही। अगस्त 2007 में ताड़िमेट्ला के ही पास एक ऐम्बुश किया गया था जिसमें 12 भाड़े के जवान मारे गए थे जिनमें हेमंत मण्डावी नामक खूंखार पुलिस दरोगा भी शामिल था। उस कार्रवाई में कॉमरेड विज्जा की बढ़िया भूमिका रही। दिसम्बर 2007 में हुई बट्टिगुड़ा कार्रवाई में उन्होंने गॉर्ड के रूप में रहते हुए नेतृत्व की रक्षा करते हुए ही दुश्मन से लोहा लिया था। 2008 में बंडा के पास किए गए ऐम्बुश में भी वह शामिल थे। 2009 में हुए

मिनपा ऐम्बुश में भी उनका योगदान रहा। और 17 सितम्बर 2010 को सिंगनमडगू के पास कोबरा बलों पर किए गए सफल ऐम्बुश में भी कॉमरेड विज्जा शामिल थे।

ऑपरेशन ग्रीन हंट के खिलाफ चलाए जा रहे टीसीओसी के तहत 6 अप्रैल को ताड़िमेट्ला के पास किए गए शौर्यपूर्ण ऐम्बुश की सफलता में भी उनका अहम योगदान रहा। कई दुश्मनों को मार गिराने में उन्होंने पहलकदमी और बहादुरी का प्रदर्शन किया। फायरिंग के दौरान दुश्मन का हथियार छीनकर उसी से लड़ाई जारी रखी और जब दोनों तरफ से ताबड़तोड़ गोलीबारी होने लगी थी, तब कॉमरेड विज्जा के सीने में गोली लगी जिससे वह वहीं ढेर हो गए। गोलीबारी के बीचोबीच ही शहीद विज्जा की लाश को साथियों ने उठा लाया और सुरक्षित जगह पर पहुंचाया। पूरा ऐम्बुश खत्म होने के बाद लाश को ले जाकर अगले दिन जनता और पीएलजीए के साथियों ने मिलकर उनका अंतिम संस्कार किया। आइए, अपनी जान को जोखिम में डालकर इस ऐम्बुश की सफलता में पूरा योगदान देने वाले इस वीर शहीद को लाल सलाम पेश करें।

कॉमरेड सोड़ी इंगाल

कॉमरेड सोड़ी इंगाल (22) का जन्म दक्षिण बस्तर (दंतेवाड़ा जिला) डिवीजन के किष्टारम एरिया के भूटालगांव के एक गरीब आदिवासी परिवार में हुआ था। उनकी एक बहन है। माता-पिता उसी समय गुजर गए थे जब वह बहुत छोटे थे। मां-बाप के गुजर जाने के बाद वह अपने सौतेले भाई के पास रहने लगे थे। शुरू से ही गरीबी ने उन्हें जैसे बांधकर रखा हुआ था। थोड़ी सी जमीन तो थी पर बारिश के भरोसे पर चलती थी खेती। बाद में उनके भाई भी खत्म हुए थे।

भूटाल गांव एक ऐसा गांव है जहां क्रांतिकारी वर्ग संघर्ष बहुत पहले ही खड़ा हुआ था। चूंकि यह गांव आंध्रप्रदेश और छत्तीसगढ़ की सीमा पर बसा है, इसलिए दोनों राज्यों की पुलिस ने काफी दबाव डाला, दमन लादा। फिर भी यह गांव टस से मस नहीं हुआ। कॉमरेड इंगाल पर बचपन से ही इस संघर्ष का प्रभाव रहा। तभी से वह बाल संगठन में शमिल हुए थे। जवान होने के बाद वह मिलिशिया का सदस्य बन गए। सलवा जुडूम ने जब दक्षिण बस्तर में तबाही शुरू कर दी, तब 2006 में कॉमरेड इंगाल ने पीएलजीए में पूर्णकालिक कार्यकर्ता के रूप में भर्ती होने का फैसला लिया। पार्टी की किष्टारम एरिया कमेटी ने उन्हें भर्ती कर 3 महीने तक उसी इलाके में काम सौंपा था। बाद में कम्पनी-3 में उनका तबादला किया गया जिसमें उनके फौजी कौशल विकासित हुए थे। सभी साथियों से वह मिलजुलकर रहते थे। वह हंसमुख कॉमरेड थे जो अपने सीधासादापन के लिए जाने जाते थे। और वह मेहनती कॉमरेड भी थे। फौजी कार्रवाइयों में उनकी भूमिका हमेशा शौर्यपूर्ण रही थी। 2007 के आखिर में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई।

कॉमरेड इंगाल पीएलजीए में भर्ती होने के बाद ही पढ़ना-लिखना सीख लिया है। पार्टी की पत्रिकाओं को पढ़ने लायक बन गए। बाद में वह बटालियन के सदस्य बन गए। बाद में बटालियन पार्टी कमेटी ने उन्हें सेक्शन उप-कमाण्डर की जिम्मेदारी दी। इस जिम्मेदारी को उन्होंने आखिर तक निष्ठा से निभाया।

फौजी कार्रवाइयों में उनकी भागीदारी का जहां तक सवाल है, कम्पनी-3 द्वारा की गई लगभग सभी कार्रवाइयों में उनकी भूमिका रही। जुलाई 2007 में उन्होंने उरपलमेट्टा ऐम्बुश को सफल बनाने में योगदान दिया था। उसी साल के अगस्त में ताड़िमेट्ला के पास हुए एक और वीरतापूर्ण हमले में भी उनका योगदान रहा। अक्टूबर में तोंगूड़ा के पास किए गए एक और साहसिक हमले में भी उनका जबर्दस्त योगदान रहा। दिसम्बर में बट्टिगूड़ेम के पास किए गए एक और हमले में उनकी भूमिका शानदार रही। 2008 में बंडा के पास किए गए हमले में कॉमरेड इंगाल की भूमिका रही जिसमें उन्होंने दुश्मनों को पीछे से घेरने का काम किया था। 2009 में मिनपा एम्बुश, किष्टारम हेलिपैड, पालोड़ी और सितम्बर में सिंगनमडुगू में कोबरा कमाण्डों पर किए हमलों में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई थी। ऑपरेशन ग्रीन हंट को पराजित करने के लक्ष्य से 6 अप्रैल 2010 को किए गए ताड़िमेट्ला ऐम्बुश में उन्होंने वीरगति को प्राप्त किया। दरअसल दुश्मन को घेरने के प्रयास के तहत पहले ही चरण में कॉमरेड इंगाल को गोला लगने वह मौके पर ही गिर पड़े। उस समय दोनों तरफ से भीषण गोलीबारी हो रही थी। उसके बीच ही साथियों ने कॉमरेड इंगाल की लाश को सुरक्षित जगह पर लाया। इस तरह इस जांबाज नौजवान की शहादत एक ऐतिहासिक ऐम्बुश में हुई है। आइए, कॉमरेड इंगाल के अधूरे लक्ष्य को पूरा करने की शपथ लें और शोषणविहीन नए लोकतांत्रिक भारत के निर्माण का संकल्प लें।

कॉमरेड राजू

दक्षिण बस्तर डिवीजन (बीजापुर जिला) के ऊसूर ब्लॉक के गांव कोण्डापल्ली में कॉमरेड राजू (23) का जन्म हुआ था। शुरू से ही क्रांतिकारी गतिविधियों से प्रभावित कॉमरेड राजू ने पहले जन मिलिशिया में काम किया था। सलवा जुडूम के जुल्म-अत्याचारों को प्रत्यक्ष देखने वाले कॉमरेड राजू ने 2006 में पीएलजीए में भर्ती होने का फैसला लिया था। उन्हें 2007 में रीजनल कम्पनी-2 में स्थानांतरित किया गया था जिसमें रहकर उन्होंने ऐतिहासिक नयागढ़ ऑपरेशन और दामनजोड़ी (नाल्को) हमले में भाग लिया था। कॉमरेड राजू हंसमुख स्वभाव के थे जो सभी से घुलमिलकर रहते थे। 6 अप्रैल की लड़ाई में उन्होंने अपनी बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए जंगेमैदान में अपनी जान कुरबान कर दी। आइए, कॉमरेड राजू के अधूरे लक्ष्य को पूरा करने तक आराम नहीं करने का संकल्प लें।

कॉमरेड मड़काम मंगू

कॉमरेड मड़काम मंगू (23) का जन्म दक्षिण बस्तर

डिवीजन (बीजापुर जिला) के ऊसूर ब्लॉक के गांव सिंगम में हुआ था। गरीब कोया आदिवासियों के परिवार में जन्म लेने वाले मंगू अपने सोलवें साल से ही क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने लगे थे। पहले जन संगठन और बाद में जन मिलिशिया में काम करने के बाद उन्होंने 2006 में पीएलजीए में भर्ती हुए थे। घर पर उन्होंने पांचवीं कक्षा तक पढ़ाई की थी। 2006 से रीजनल कम्पनी-2 में शामिल होने वाले कॉमरेड मंगू ने नयागढ़, दामनजोड़ी जैसी कार्रवाइयों में भाग लेकर अपने पराक्रम का प्रदर्शन किया। संचार के साधनों के प्रयोग में भी कॉमरेड मंगू ने अच्छी-खासी पकड़ बना ली थी। 6 अप्रैल की ऐतिहासिक ताड़िमेट्ला लड़ाई में उन्होंने दुश्मन के नजदीक जाकर आमने-सामने लड़ते हुए अपने सीने पर गोली खाई। कॉमरेड मंगू की शहादत को बस्तर की संघर्षशील जनता सदा याद रखेगी।

कॉमरेड सलवम रामाल

कॉमरेड रामाल (26) का जन्म दक्षिण बस्तर डिवीजन (दंतेवाड़ा जिला) के जेगुरगोण्डा एरिया के गांव मोरपल्ली में एक गरीब आदिवासी परिवार में हुआ था। बचपन से ही रामाल अपने माता-पिता के साथ मिलकर सभा-सम्मेलनों में भाग लिया करते थे। जब भी उनके गांव में गुरिल्ला दस्ता का आगमन होता तो वह वहां जरूर अपनी उपस्थिति देते थे। सरकारों की घोर लापरवाही के कारण गांव में कोई स्कूल नहीं थी। इसलिए कॉमरेड रामाल को घर में रहकर पढ़ाई करने का मौका नहीं मिला था। माता-पिता के साथ खेतों में जाकर काम करना ही सीखा था। छोटी उम्र से ही उनका लगाव क्रांतिकारी गीतों की तरफ पर था। सहज ही, वह गांव में बाल संगठन का सदस्य बन गया। बड़े होकर पीएलजीए में भर्ती होने का सपना उन्होंने बचपन से ही पाले रखा था। बड़े होने के बाद उन्हें जन मिलिशिया में शामिल किया गया था। मिलिशिया में रहकर उन्होंने कई बार दुश्मन को हैरान-परेशान करने वाली कार्रवाइयों में भाग लिया था। पार्टी द्वारा बुलाए गए बंद, हड़ताल आदि कार्यक्रमों में वह बढ़-चढ़कर भाग लेते थे। जेगुरगोण्डा इलाके में 2006 में सलवा जुडूम ने बर्बरता का नंगा प्रदर्शन किया था। गांवों को जलाना, लोगों को मारकर फेंक देना, आदि दुश्मन की क्रूर कार्रवाइयों को कॉमरेड रामाल ने प्रत्यक्ष देखा था।

घर में रहते हुए कॉमरेड रामाल की शादी हुई थी। और उनकी एक बच्ची भी थी। लेकिन जब उन्होंने यह समझा कि वर्तमान व्यवस्था को जड़ से बदले बिना गरीबी, शेषण और जुल्म-अत्याचारों को समाप्त करना नामुमकिन है, उन्होंने फैसला लिया कि अपनी बीवी और बच्ची को छोड़कर बंदूक उठाई जाए। इस तरह 2006 में ही कॉमरेड रामाल पीएलजीए में भर्ती हुए। सबसे पहले उन्होंने जेगुरगोण्डा एरिया कमेटी के तहत बोड़केल एलओएस में काम किया था। कुछ दिनों बाद उन्हें एलजीएस में स्थानांतरित किया गया। 2006 के आखिर में निर्मित पलटन-10 में उन्हें सदस्य के रूप में लिया गया। यहां उन्होंने जन सेना के अनुशासन को सीखने के साथ-साथ पढ़ना-लिखना भी सीख लिया। उसी दौरान उन्हें पार्टी सदस्यता प्रदान की गई। 2008 में जब 8वीं कम्पनी का निर्माण हुआ था, तब उन्हें उसमें शामिल किया गया। बाद में अगस्त 2009 में उन्हें बटालियन के सदस्य के रूप में ले लिया गया। बटालियन में काम करते हुए एक साल के अंदर ही वह एक अच्छे लड़ाकू के रूप में उभरे थे।

17 सितम्बर 2009 को सिंगनमडुगू में कोबरा बलों को घेरकर 6 भाड़े के कुत्तों का सफाया करने की कार्रवाई में उन्होंने बहादुरी से भाग लिया। इसके अलावा किष्टारम हेलिपैड और पालोड़ी में किए गए हमलों में भी कॉमरेड रामाल ने अपना योगदान दिया था। अपनी आखिरी व ऐतिहासिक लड़ाई में उन्होंने भी अपने पराक्रम का पूरा प्रदर्शन किया। दुश्मन की गोलियों की बरसात की परवाह न करते हुए वह तेजी से आगे बढ़े थे और काफी संघर्ष के बाद उन्हें दुश्मन की गोली लगी थी। उनके कंधे से फेफड़े में गोली घुस जाने से वह बुरी तरह घायल हुए थे। अपनी घायल अवस्था में भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी ताकि साथियों के मनोबल पर बुरा असर न पड़ सके। ऐम्बुश को सफल करने के बाद डेरा तक ले जाने के बाद इलाज के दौरान ही कॉमरेड रामाल ने आखिरी सांस ली। अंतिम संस्कार के लिए कॉमरेड रामाल के शव को उनके गृहग्राम पहुंचाया गया था जहां जनता और परिवार ने मिलकर पूरे सम्मान के साथ उन्हें अंतिम विदाई दी।

कॉमरेड रतन

माड़ डिवीजन के (बीजापुर जिला) भैरमगढ़ ब्लॉक के नेत्तुरवाया गांव में एक गरीब आदिवासी परिवार में कॉमरेड रतन (25) का जन्म हुआ था। जब वह 18 साल के थे तभी से उन्होंने डीऐकेएमएस और बाद में मिलिशिया में काम करना शुरू किया। फासीवादी सलवा जुडूम के खिलाफ चलाए गए प्रतिरोधी संघर्ष में उन्होंने जोश के साथ भाग लिया था। 2005 में वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में पीएलजीए में भर्ती हुए थे। 2007 से उन्हें रीजनल कम्पनी में काम करने के लिए भेजा गया था। उसमें रहते हुए उन्होंने नयागढ़, दामनजोड़ी, बंडा आदि ऐम्बुशों में भाग लिया था। पीएलजीए में एक अनुशासनबद्ध सैनिक की छवि बनी थी उनकी। 6 अप्रैल की लड़ाई में उन्होंने पहलकदमी और बहादुरी का बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए वीरगति को प्राप्त किया।

इन सभी नौजवान कॉमरेडों ने अपने छोटे से क्रांतिकारी जीवन में ही जो आदर्श प्रस्तुत किए, लड़ाई के दौरान वीरता का जो प्रदर्शन किया और गोलियों के तूफान में भी उन्होंने दुश्मनों का सफाया करते हुए अपने प्राणों को जिस तरह न्यौछावर कर दिया, यह तमाम पीएलजीए सैनिकों और देश के तमाम नौजवानों के लिए अनुसरणीय है। आइए, इन सभी शहीदों को फिर एक बार तहेदिल से बंद मुट्ठियों से सलाम करें और उनके रास्ते पर आगे बढ़ते हुए दण्डकारण्य को आधार इलाके में बदलने का संकल्प लें। ✶

देश की निर्धनतम जनता के खिलाफ जारी जंग नाजायज है!
शोषक-लुटेरों और देश के दुश्मनों की सेवा में मरना निरर्थक है!!
दण्डकारण्य में तैनात सीआरपीएफ, कोबरा, बीएसएफ, आईटीबीपी, एसएसबी, मिजो, पुलिस व कमाण्डो बलों के जवानों और छोटे अधिकारियों से माओवादियों की अपील

6 अप्रैल 2010 को दंतेवाड़ा जिले के ताड़िमेट्ला के पास हमारी पीएलजीए ने सीआरपीएफ की 62वीं बटालियन की एक कम्पनी पर हमला किया जिसमें 76 जवान मारे गए थे और 6 अन्य घायल हुए थे। इस घटना को लेकर काफी शोर मचाया गया। पूंजीपतियों की पक्षधर मीडिया ने इसे 'दंतेवाड़ा नरसंहार' कहना शुरू किया। लेकिन यह घटना किन परिस्थितियों में और क्यों हुई थी, इस पहलू को जनता के सामने रखने की कोशिश किसी ने नहीं की। खासकर पिछले 8 महीनों से ऑपरेशन ग्रीन हंट के तहत दण्डकारण्य में लगातार हो रहे आदिवासियों के नरसंहारों के परिणामस्वरूप ही आपको इतनी संख्या में जानें गंवानी पड़ीं। इसकी जिम्मेदारी केन्द्र और राज्य सरकारों की है जिन्होंने आपको जनता के खिलाफ नाजायज युद्ध में झोंक दिया।

इस बर्बर युद्ध के तहत आपने - यानी पुलिस, अर्ध-सैनिक बलों और एसपीओं ने 10 अगस्त 2009 से लेकर 6 अप्रैल 2010 तक बस्तर क्षेत्र में 125 से ज्यादा आदिवासियों की हत्या की। महिलाओं के साथ बलात्कार, गांव जलाना, मुरगी-बकरी समेत सारे सामान को लूटना, लोगों को उठाकर ले जाना, थानों में यातनाएं देना, झूठे केसों में फंसाकर जेलों में डालना आदि बर्बरतम करतूतों को आप लोगों ने लगातार जारी रखा। आपके हाथों में मारे गए लोगों में 99 प्रतिशत निहत्थे और निर्दोष आदिवासी थे। प्राय: सभी को आप लोगों ने पकड़कर या दौड़ा-दौड़ाकर गोली मार दी थी। वास्तविक मुठभेड़ में इक्के-दुक्के क्रांतिकारियों को ही आपने मारा, जबकि बाकी सभी मठभेड़ें झूठी ही थीं। इसे आप ही अच्छी तरह जानते हैं। वेच्चापाड़, पालाचेलमा, गोमपाड़, गुमियापाल, कुटरेम, ताकिलोड़, ओंगनार आदि गांवों में आप लोगों ने कई नरसंहार किए, समूचे दण्डकारण्य में हजारों लोगों की बेरहमी से पिटाई की, सैकड़ों आदिवासी बहू-बेटियों के साथ सामूहिक बलात्कार किया, कई घरों को जलाया, सामान को ध्वस्त किया .... गोमपाड़ में आपके कोबरा जवानों ने 12 ग्रामीणों की हत्या के अलावा दो साल का नन्हा बच्चा सुरेश की उंगलियां काट दीं, पालाचेलमा में आपके लोगों ने जिन 12 निर्दोष लोगों को गोलियों से भून डाला उनमें करीब 70 साल के तीन उम्रदराज लोग भी शामिल थे, ताकिलोड़ में एक साथ 7 नौजवानों को पकड़कर निर्मम तरीके से हत्या की, ओंगनार में अपने घर में खाना बना रही युवती रमोली वड्डे को घर से बाहर घसीट लाकर चार अन्य युवाओं के साथ सरेआम गोली मार दी, 4 अप्रैल को, यानी ताड़िमेट्ला घटना से मात्र दो दिन पहले नारायणपुर जिले के चिनारी गांव में आप लोगों ने 5 घरों में आग लगाई..... ये सभी घटनाएं आपको याद हों या न हों पर हम नहीं भूले हैं। यहां की जनता नहीं भूली है।

6 अप्रैल 2010 की सुबह जो कुछ भी हुआ, उसे लुटेरी सरकारें और उनके तलवे चाटने वाली मीडिया जो भी कहें, वह आदिवासी जनता पर जारी तमाम बर्बरता और पाशविकता की वाजिब और जरूरी प्रतिक्रिया थी। उस दिन की लड़ाई में हमारे आठ नौजवान साथी अपनी जान कुरबान कर गए जिस पर हमें गर्व भी है और दुख भी। यहां जब देश की सरकारों ने जनता को मौत और तबाही के सिवाए कुछ नहीं दिया, तो लड़कर ही मरें - यही संकल्प यहां की जनता ने ले रखा है। इसलिए हमारी हरेक कार्रवाई में जनता सक्रिय सहयोग कर रही है। आप अपने दिमाग में से आपके अफसरों, नेता-मंत्रियों और मीडिया के झूठे प्रचार को निकाल बाहर कर दीजिए। तमाम गलतफहमियों से खुद को मुक्त कर यह समझें कि आप यहां जो कुछ कर रहे हैं वह 'देशभक्ति' कतई नहीं है। माओवादी आंदोलन आतंकवाद नहीं है, देश की निर्धनतम आदिवासियों और अन्य तमाम शोषित-मेहनतकश जनता का न्यायपूर्ण आंदोलन है। दरअसल माओवादी आंदोलन उन देशद्रोहियों के खिलाफ है जो देश की सारी सम्पदाओं को साम्राज्यवादियों के हवाले करने के लिए व्यापक जनता को बेघरबार कर यहां के जल-जंगल-जमीन का विनाश करने पर आमादा हैं; जो सैकड़ों-हजारों करोड़ रुपए के घोटाले कर देश की जनता को गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी और बेमौत की गर्त में धकेल रहे हैं; तथा जो लाखों करोड़ रुपयों का काला धन स्विस बैंकों में छुपाकर 'लोकतंत्र' के नाम से नोटतंत्र चला रहे हैं।

हां, हमें मालूम है कि आपने जनता के खिलाफ जो भी जुल्म किए, हत्याएं कीं और अत्याचार किए, आपके बड़े अधिकारियों के कहने पर ही, सरकारों के आदेश के मुताबिक ही किया। हम जानते हैं कि यहां की जनता के खिलाफ छेड़े गए एक अन्यायपूर्ण युद्ध में आपको जबरन घसीटा गया है। हम समझते हैं कि आपमें से बहुत-से लोग इसे नहीं चाहते। न चाहते हुए भी हमारे खिलाफ लड़ने को मजबूर हुए हैं... सिर्फ रोजी-रोटी के लिए, अपने बीवी-बच्चों को पालने-पोसने के लिए। हमें अफसोस है कि 6 अप्रैल की लड़ाई में आपका

काफी खून बहा। लेकिन यहां पर खासकर 2005 से लेकर खून के प्यासे लुटेरे शासक वर्गों द्वारा लगातार जारी आदिवासियों के कत्लेआम को रोकने के लिए हमें यह कदम उठाने पर मजबूर होना पड़ा। इसके अलावा कोई विकल्प ही नहीं बचा था। आप खुद सोचिए... अपने दिल से पूछिए... अगर किसी ने आपका घर जला दिया, आपकी मां-बहनों का अपमान किया और आपके बीवी-बच्चों को मार डाला, आपके घर का सारा सामान तोड़ डाला तो आप उसे क्या करेंगे? 6 अप्रैल को हमने जो भी किया था वो यही था।

हमने इससे पहले भी कई बार आप लोगों से अपील की थी। अभी भी कर रहे हैं। जनता पर जुल्म न करें और यह घृणित नौकरी त्याग कर इज्जत की कोई दूसरी नौकरी करें। नौकरी करनी ही है तो कम से कम हम पर और हमारी जनता पर हमलों में शामिल न हों। आमने-सामने लड़ाई की स्थिति में अपना हथियार डाल दें। पीएलजीए आपको नहीं मारेगी।

दरअसल लुटेरी सरकारें और आपके भ्रष्ट अफसर आपको जनता के खिलाफ उकसा रहे हैं। हमारे बारे में आपके दिलोदिमाग में गलत जानकारियां भर रहे हैं। चूंकि मीडिया भी उन्हीं के पक्ष में खबरें देती है, इसलिए आमतौर पर हमारे खिलाफ दुष्प्रचार ही किया जाता है। इन सबका असर आप पर होने की पूरी संभावना है। आपसे हमारी विनम्र अपील है - अपनी आंखें खोलकर सच्चाई को समझिए। हम आपके दुश्मन नहीं हैं। यहां की जनता आपकी दुश्मन नहीं है, बल्कि आप भी गरीब व मध्यम किसान-मजदूर परिवारों से आए हैं। दरअसल आप बलि के बकरे भर हैं। सोनिया-मनमोहन-चिदम्बरम गिरोह द्वारा देश की अत्यंत दबी-कुचली जनता के खिलाफ ऑपरेशन ग्रीन हंट के नाम से जो युद्ध छेड़ा गया, वह दरअसल इन इलाकों को माओवादियों से 'मुक्त' कर बड़े पूंजीपतियों और विदेशी पूंजीपतियों के हवाले करने के लिए है। आपको मालूम होना चाहिए कि घने व हरे-भरे जंगलों वाला यह इलाका अपार खनिज संपदाओं का भण्डार है। इसी को लूटने के लिए यह युद्ध थोपा गया है यहां की जनता पर और उसकी रक्षा में खड़ी हमारी पार्टी पर। इस 'आपरेशन ग्रीनहंट' का कमाण्डर-इन-चीफ केन्द्रीय गृहमंत्री चिदम्बरम हैं जो एक समय बदनाम बहुराष्ट्रीय कम्पनी एनरॉन के वकील थे और वित्तमंत्री बनने से पहले वेदांता नामक एक लुटेरी कम्पनी के निर्देशकमण्डल में सदस्य थे। और प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह अंतरराष्ट्रीय मुद्रा संस्थाओं का अव्वल नम्बर दलाल हैं, जिनकी आधी उम्र एक अधिकारी के रूप में विश्व बैंक, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और दूसरे बैंकों की सेवा में गुजरी है। गृह सचिव के रूप में नियुक्त जी.के. पिल्लै, जो मनमोहन सिंह का चहेता है, की खासियत यह है कि उन्होंने खुद देश में 235 विशेष आर्थिक क्षेत्रों (सेज) को मंजूरी दी है जिसके एवज में लाखों लोगों की जमीन चली गई। आए दिन नक्सलवादियों को 'लुटेरे' व 'हत्यारे' कहकर गाली-गलौज तक करने वाले छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री रमनसिंह खुद बड़े-बड़े ठेकेदारों, माइनिंग माफिया और टाटा, एस्सार, जिंदल, मित्तल जैसे बड़े-बड़े पूंजीपति घरानों को ठेके देने और एमओयू करने के एवज में हर साल सैकड़ों करोड़ रुपए की काली कमाई करने वाले नम्बर एक दलाल हैं। आपके सभी बड़े अधिकारी जैसे कि विश्वरंजन, विजयरामन, लांगकुमेर, नलिनी प्रभात, मुकेश गुप्ता... हर माह वेतन के रूप में जितना पाते हैं उससे दर्जनों गुना ज्यादा पैसे घूस, दलाली और हेराफेरियों से कमा लेते हैं। डीआईजी कल्लूरी जैसे बलात्कारी व खूंखार जानवर मानवजाति के नाम पर ही कलंक हैं। इन सबको अच्छी तरह मालूम है कि देश में साम्राज्यवाद-शासित जन-विरोधी नीतियों को बेरोकटोक लागू करने और लूटखसोट मचाने की राह में माओवादी आंदोलन ही बहुत बड़ी बाधा के रूप में खड़ा है। इन सबकी सहभागिता से यह 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' चल रहा है जिसमें आपका इस्तेमाल सिर्फ मोहरों के रूप में किया जा रहा हैं।

ताड़िमेट्ला की घटना के बाद लुटेरे शासक वर्गों ने कई लाख रुपए का मुआवजा घोषित किया और खूब घड़ियाली आंसू बहाए। वो चाह रहे हैं कि इस तरह के प्रोत्साहन देकर आप लोगों को और ज्यादा उकसाया जाए। वास्तव में उन लोगों को आपकी जान के प्रति जरा भी चिंता नहीं है। क्योंकि जनता के खिलाफ जारी लुटेरों की इस लड़ाई में आखिर मारने वाले और मरने वाले दोनों गरीब ही हैं। चिदम्बरम, सोनिया, मनमोहनसिंह या रमनसिंह अपने बेटों को तो नहीं भेजेंगे। वो लोग हजारों करोड़ रुपए पानी की तरह खर्च कर आप लोगों को और ज्यादा संख्या में झोंकते जाएंगे। इसलिए सोचना आपको है। हम एक स्पष्ट लक्ष्य से कि इस लुटेरी व्यवस्था को खत्म कर शोषणविहीन और हर प्रकार के उत्पीड़न व भेदभाव से मुक्त समाज की स्थापना के लिए लड़ रहे हैं। लेकिन आप लोग हमारे पक्ष के होते हुए भी हमारे सांझे दुश्मनों और उनकी व्यवस्था की रक्षा के लिए लड़ रहे हैं... महज रोजी-रोटी के लिए! मुट्ठी भर पैसों के लिए!!

इसलिए जवानो, सोचिए और सही कदम उठाइए। आप हमारे खिलाफ जो लड़ाई लड़ रहे हैं वह निरर्थक है। अन्यायपूर्ण है। छोड़ दीजिए इसे। अपने अफसरों और सरकारों के आदेशों का पालन करने से इनकार कर दीजिए। आम जनता और हमारे खिलाफ बंदूक मत उठाइए। हत्या, बलात्कार, गांव जलाने, सामान लूटने आदि अमानवीय व असंवैधानिक कार्रवाइयों से दूर रहिए। हो सके तो... अपनी बंदूक देश के दुश्मन शोषक-लुटेरों के सीने पर तान दें।

क्रांतिकारी अभिनंदन के साथ,

दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

23 अप्रैल 2010 **भाकपा (माओवादी)**

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

प्रेस विज्ञप्ति

7 मई 2010

'पुनर्वास' पैकेज की आड़ में छत्तीसगढ़ सरकार की निर्लज्ज दलाली की निंदा करो!
आदिवासियों की जमीनें जबरन टाटा के हवाले करने की घिनौनी कोशिशों का विरोध करो!!
जल-जंगल-जमीन पर अधिकार हमारा है!!!

हाल ही में छत्तीसगढ़ सरकार ने बस्तर के लोहण्डीगुड़ा क्षेत्र में प्रस्तावित टाटा स्टील प्लांट के लिए जमीन अधिग्रहण प्रक्रिया को तेज करने की मंशा से एक प्रलोभनकारी 'पुनर्वास' पैकेज सामने लाया। बस्तर कलेक्टर मनोहर परास्ते द्वारा घोषित इस पैकेज के तहत जिनकी जमीनें छिन जाएंगी उन लोगों को 4 हजार रूपए प्रति माह के हिसाब से तब तक गुजारा भत्ता मिलेगा जब तक कि टाटा स्टील प्लांट की शुरूआत नहीं हो जाती। इसके लिए आनन-फानन में खातेदारों के नाम से बैंक अकाउण्ट खोले जा रहे हैं। लोगों को जमीनें देने की सहमति देने के साथ-साथ अपने खेतों में खम्भे भी गाड़ने होंगे जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि कहां से जमीनें हड़पी जाएंगी। सीध ा-सीधा कहा जाए तो लोगों को पैसों से खरीदने का बेशर्म हथकण्डा है यह। और यह छत्तीसगढ़ सरकार के लिए नई बात भी नहीं है।

गौरतलब है कि जून 2005 में टाटा के साथ छत्तीसगढ़ सरकार का एमओयू हुआ था। इसके तहत टाटा 10 हजार करोड़ रूपए की लागत से 50 लाख टन की सालाना क्षमता वाला इस्पात संयंत्र लगाने वाली है। इसके लिए लोहण्डीगुड़ा इलाके को उपयुक्त मान लिया गया क्योंकि यहां की जमीन समतल है और इंद्रावती नदी के तट पर बसे होने के कारण पानी की भी कोई कमी नहीं होगी। इस विवादास्पद इस्पात कम्पनी के लिए दस गांवों को उजाड़ दिए जाने की बात कम्पनी खुद कह रही है। लेकिन वास्तविकता यह है कि इसके लिए बेलर, कुम्हली, छिंदगांव, बेलियापाल, बंडाजी, दाबापाल, धुरागांव, उसरीबेड़ा, छिंदबहार, मारीकोडेर, मांदर, गड़दा, एरमूर, सुरगुड़ा, गडिया, पारापुर, छोटे परोदा, एरपुण्ड, मामडपाल आदि कई गांवों की जमीनें हड़पने की साजिश चल रही है। इसमें ज्यादा नुकसान होने वाला गांव बेलियापाल है क्योंकि यहां की पूरी जमीन अधि ग्रहित होने वाली है। इसके बाद, सबसे ज्यादा जमीन 946 एकड़ बड़ांजी गांव की है। यहां के 359 मकानों को जमींदोज किया जायेगा। धुरागांव की 880 एकड़ जमीन का अधिग्रहण होना है। प्रशासन ने इस गांव की जमीन का अधिग्रहण कर लिया है और किसानों से कहा जा रहा है कि वे यहां से अपना कब्जा हटाएं।

दरअसल जनता इसका शुरू से विरोध कर रही है। इसे देखते हुये पूरी योजना का खुलासा नहीं किया जा रहा है। सच्चाई यह है कि कारखाने के लिये उत्पादित माल के यार्ड के लिये, भट्टी से निकाले जाने वाले राखड़ के ढ़ेर लगाने के लिये और कर्मचारियों के आवास (टाऊनशिप) के लिये 15-20 हजार एकड़ जमीन की जरूरत होगी। टाटा के काम में रमन सरकार ने कितनी गोपनीयता दिखाई, इस बात का अंदाजा इस उदहारण से लगाया जा सकता है कि इसके साथ हुए एमओयू (समझौता-पत्र) का खुलासा विधानसभा तक में करने से रमनसिंह ने मना कर दिया था।

जनता के विरोध को दबाने और आदिवासियों की जमीनें हड़पने के लिए ग्रामसभाओं के नाम से बस्तर में शुरू से ही ढोंग रचा जा रहा है। नगरनार, धुरली और लोहंडीगुड़ा में ग्रामसभा के आयोजन के नाम से जो भी हुआ है सरकारी ढकोसले को समझने के लिए काफी है। 6 जून 2006 को सबसे पहले बेलर में ग्रामसभा बुलाई गई थी, लेकिन जनता के प्रबल विरोध को देखते हुये उसे रद्द करना पड़ा। इसके बाद कलेक्टर ने भारी सुरक्षा बंदोबस्त के साथ ग्रामसभा कराई और ग्रामीणों को आतंकित करके उनका 'अनुमोदन' लिया गया। जो लोग विरोध कर रहे हैं उनके खिलाफ झूठे मुकदमे दर्ज किए गए। पिछले साल 12 अक्टूबर को टाटा के समर्थन में आयोजित 'जन सुनवाई' एक और ढकोसला थी, जिसमें यहां तक कि सादे कपड़ों में महिला पुलिसकर्मियों को भी शामिल कराया गया था और उन्हें 'स्थानीय लोगों' के रूप में दिखाने की कोशिश की गई थी। के.आर. पिस्दा, दिनेश श्रीवास्तव, गणेशशंकर मिश्र और अब मनोहर परास्ते - बस्तर में नियुक्त सभी कलेक्टरों ने पंचायत राज और पेसा कानून की धज्जियां उड़ाईं और खुद को टाटा के वफादार दलाल साबित किया।

टाटा के प्रबंधन और पुलिस-प्रशासन 'फूट डालो और राज करो' की घृणित नीति पर चल रहे हैं। उन्होंने पूरे इलाके में दलालों को सक्रिय कर रखा है। दलाली करने वाले लोगों को बहला-फुसलाकर, नौकरी-पैसे का लालच देकर कुछ लोगों को 'मनवा रहे' हैं। कुछ लोगों ने टाटा से मुआवजा ले भी लिया। आए दिन सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में तथा पुनर्वास पैकेज में टाटा कम्पनी की साख पर कहानियां गढ़कर मीडिया में प्रचारित किया जा रहा है। जबकि कलिंगनगर, सिंगूर जैसी ताजातरीन घटनाओं में लोगों का खून बहाने वाले उसके दमनकारी चेहरे पर

परदा डालने की कोशिश की जा रही है। महेंद्र कर्मा और बलीराम कश्यप के साथ-साथ बस्तर के तमाम बड़े पुलिस व प्रशासनिक अधिकारी, स्थानीय थानेदार से लेकर कलेक्टर तक सभी टाटा की दलाली में लगे हुए हैं। टाटा का रास्ता साफ करने और जनता को आतंकित करने के लिए बड़ांजी, घोटिया आदि जगहों पर पुलिस थाने खोले गए हैं और इसी इलाके के कुछ और गांवों में थाने खोले जाने वाले हैं। इसका मतलब है, रमन सरकार एक तरफ पैसों से लोगों के विरोध को दबाने की कोशिश कर रही है और दूसरी तरफ पुलिसिया दमन को बढ़ाने की सोच रही है। सरकारों के दमनकारी 'ऑपरेशन ग्रीन हंट' का मूल उद्देश्य यही है जो आज देश के अन्य इलाकों के साथ-साथ दण्डकारण्य के व्यापक इलाकों में चलाया जा रहा है।

पहले कुल 10 गांवों के 1365 परिवारों को खातेदार बनाया गया था जिनकी जमीनें अधिग्रहित होनी हैं। लेकिन अब टाटा और उसके तलवे चाटने वाला प्रशासन बता रहे हैं कि कुल 1707 खातेदार हैं। चूंकि इस इलाके की जनता शुरू से ही टाटा का पुरजोर विरोध कर रही है, इसलिए 'फूट डालो और राज करो' वाली अपनी कुटिल नीति के तहत टाटा प्रबंधन लोगों को और परिवारों को बांटने और तोड़ने का काम कर रहा है। भाई-भाई और बाप-बेटे के बीच विभाजन कर कुछ को अपने पक्ष में कर रहा है। तमाम कानूनों का उल्लंघन करते हुए जमीनों के नए पट्टे जारी किए जा रहे हैं और खातेदारों की संख्या बढ़ाई जा रही है।

लोहण्डीगुड़ा इलाके की जनता से भाकपा (माओवादी) की स्पेशल जोनल कमेटी अपील करती है कि आप टाटा प्रबंधन, सरकारी प्रशासन-तंत्र और उनके दलालों के तमाम षड़यंत्रों और दमनकारी कदमों का कड़ा विरोध करें। साम-दाम-दण्ड-भेद के उपायों से लोगों में फूट डालकर कुछ लोगों के हाथों में मुआवजा पकड़ाकर उसे 'स्वीकृति' के रूप में चित्रित कर यह प्रचारित कर रहे हैं कि करीब 70 प्रतिशत लोग जमीनें देने को तैयार हो गए। ऐसे में हम लोगों का आह्वान करते हैं कि मुआवजा भी वापस न दें और जमीनें भी न छोड़ें। दोनों पर आपका अधिकार है क्योंकि शुरू से ही आपके साथ टाटा प्रबंधन और नेता-अफसर छलावा करते आ रहे हैं। और इस ताजा सरकारी 'पुनर्वास' पैकेज को रद्दी के टोकरे में फेंक दें। टाटा को लोहण्डीगुड़ा इलाके से मार भागाएं।

टाटा प्रबंधन को हमारी चेतावनी है कि अगर आप इस तरह की कुटिल चालों से लोगों को दबाने और खरीदने की कोशिश करेंगे तो जनता आपको सही सबक सिखाएगी। लोहण्डीगुड़ा टाटा की जागीर नहीं, अतः आप लोग बोरिया-बिस्तर बांधकर बस्तर से चले जाएं। इस चेतावनी को अनसुना कर इस इलाके में कदम रखने और अपनी गतिविधियां जारी रखने पर जनता की तरफ से गंभीर प्रतिक्रिया होगी, उसके लिए आप खुद जिम्मेदार होंगे। टाटा की जी-हुजूरी में लगे बस्तर कलेक्टर मनोहर परास्ते समेत सरकारी प्रशासन के सभी छोटे-बड़े अफसरों को हमारी चेतावनी है कि जनता को धोखा देने की कोशिशें बंद करें, वरना आपको जन अदालत में घसीटा जाएगा। टाटा के नए-पुराने दलालों को हम यह सूचित करना चाहते हैं कि ऐसी ही हरकतों से बाज नहीं आने पर विमल मेश्राम को पिछले साल सजा मिली थी, इसलिए आप यह काम बंद करें।

(गुड्सा उसेण्डी)
प्रवक्ता
दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

टाटा के दलाल तहसीलदार डीआर मार्गिया की हुई पिटाई!

9 मई 2010 के दिन लोहण्डीगुड़ा इलाके की जनता ने अपने संघर्ष को जारी रखते हुए टाटा के दलाल तहसीलदार को पीटकर भगा दिया। टाटा की दलाली खाए पुलिस-प्रशासन टाटा के लिए जमीन छीनने की कोशिशों में बढ़-चढ़कर भाग ले रहा है। इसके तहत अधिकारी लोहण्डीगुड़ा क्षेत्र के लोगों को जबरन राजी करवाने के प्रयास कर रहे थे। खातेदारों को बहला-फुसलाकर या डरा-धमकाकर और कहीं-कहीं परिवारों के अंदर फूट डालकर भी टाटा के लिए जमीन देने की 'सहमति' हासिल कर रहे हैं। इसको लेकर क्षेत्र की जनता में जबर्दस्त रोष था। दूसरी तरफ टाटा प्रबंधन जनता के दिलोदिमाग को जीत लेने के हथकण्डे अपना रहा है। खेलकूद का प्रशिक्षण के नाम से नौजवानों को बुलाकर उन्हें पैसे आदि प्रलोभन देकर जनता के हित में काम करने का ढोंग कर रहा है। कुछ युवाओं को टाटा के लोगों ने पुलिस में भी भर्ती करवाया। इसके अलावा अस्पताल भी खोला ताकि लोगों के दिलोदिमाग में टाटा कम्पनी के प्रति अच्छी छवि बन सके। इस तरह वह इस इलाके में पहले 10 गांवों और बाद में पूरी योजना को लागू करने के बाद पूरे 35 गांवों के लोगों की जिंदगी में जो तबाही लाने वाली है, उस पर परदा डालने की कोशिश कर रही है। लेकिन जनता ने टाटा की हर हलचल पर नजर रखी हुई है। उसके दलाल चाहे किसी भी भेष में आएं, जनता पहचान रही है। इसी सिलसिले में 9 मई को टाटा के दलाल तहसीलदार मार्गिया एक जेसीबी मशीन को लेकर आया हुआ था ताकि टाटा द्वारा प्रस्तावित आईटीआई के निर्माण के लिए जगह साफ की जा सके। लेकिन लोगों ने इसके खिलाफ पहले ही अपने आपको संगठित कर रखा था। और आते ही उसकी धुनाई कर भगा दिया। हालांकि पुलिस वालों ने बाद में कुछ नौजवानों को गिरफ्तार कर पिटाई के केस में फंसा दिया, लेकिन लोगों के दिलों में टाटा के प्रति नफरत की जो आग जल रही है उसे बुझाना नामुमकिन है। ★

राशन दुकानों को गांवों से पुलिस थानों में बदलने की सरकारी साजिश का विरोध करो!
ऑपरेशन ग्रीन हंट के तहत चावल को रोककर जनता को भूखों मरवाने की
केन्द्र-राज्य सरकारों की अमानवीय नीतियों के खिलाफ आवाज उठाओ!!

पिछले 8 महीनों से जारी ऑपरेशन ग्रीन हंट के तहत केन्द्र सरकार व छत्तीसगढ़ सरकार ने बस्तर क्षेत्र में अमानवीय अत्याचार और हत्याकाण्ड का सिलसिला तेज कर दिया। निर्दोष लोगों को नक्सलवादी बताकर गोली मार देने और मुठभेड़ की कहानियां गढ़ देने के साथ-साथ कई गांवों व घरों को जलाने की घटनाएं लगातार जारी हैं। महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार की घटनाएं बढ़ी हैं। खाकी वर्दी पहने लाइसेंसी गुण्डों द्वारा गांवों पर हमले कर खासकर नौजवानों और हमारी पार्टी के हमदर्दों को गिरफ्तार कर गैर-कानूनी ढंग से कई दिनों-हफ्तों तक हिरासत में रख अमानवीय यातनाएं दी जा रही हैं। कइयों को झूठे केसों में फंसाकर जेल भेजा जा रहा है। एसपीओ बनने का दबाव डालकर कई मासूम लोगों को मुखबिरी के जाल में फंसाया जा रहा है।

दमन के उपरोक्त तरीकों के अलावा जनता के जीवन को अस्तव्यस्त करने की नीयत से रमन सरकार कई अमानवीय नीतियां लागू कर रही है। हाट बाजारों को बंद करवाने, हाट बाजारों में ले जाए जाने वाले सामानों की तलाशी लेकर आवश्यक वस्तुओं को जब्त कर लेने और राशन दुकानों को बंद कर थानों के परिसर में ले जाने की जन-विरोधी नीतियों पर अमल किया जा रहा है। सरकारी व पुलिस अमले के बड़े अधिकारियों का तर्क है कि जनता जो राशन ले जाती है उसमें से एक हिस्सा माओवादियों के पास पहुंच रहा है, इसलिए गांवों से राशन दुकानें हटाकर विकासखण्ड व जिला मुख्यालयों में पुलिस थाना परिसर में खोली गई हैं। उदाहरण के लिए माड़ इलाके के कई गांवों में राशन दुकानों को बंद कर कुकड़ाझोर और कुरसनार बेस कैम्पों में चावल बेचा जा रहा है। और दंतेवाड़ा जिले में किरंदुल इलाके के कुआकोण्डा ब्लॉक में गुमियापाल, हिरोली, समेली, चोरनार आदि सारे ग्राम पंचायतों में राशन दुकानें बंद कर दी गईं। पश्चिम व दक्षिण बस्तर के इलाकों में स्थिति बेहद खराब है जहां लोगों को तथाकथित राहत शिविरों में जाकर कड़ी धूप में लंबी-लंबी लाइनें लगानी पड़ती हैं और कसमें दिलानी पड़ती हैं कि वे अपने लिए चावल लेने आए हैं न कि माओवादियों को देने के लिए। सब जगह बहाना यही है कि राशन दुकानों से लोग चावल खरीदकर माओवादियों को देते हैं। इस साल दण्डकारण्य के कई इलाकों में भयंकर अकाल पड़ा है। फसलें नहीं हुईं। लोगों को राशन दुकानों से चावल खरीदना पड़ रहा है। लेकिन दुकानों को बंद करवाकर उन्हें थानों में बदलने से लोग चावल खरीद नहीं पा रहे हैं। कोई भी शरीफ इंसान, खासकर महिलाएं पुलिस थाने के अंदर जाने से ही कतराती हैं। इसलिए लोग भूख से तड़पना पसंद करेंगे लेकिन थानों में जाना नहीं चाहेंगे। जो लोग चावल के लिए मजबूरी में थाना परिसर में जाते हैं उन्हें पुलिस व अर्ध-सैनिक बलों के अधिकारी बेहद परेशान करते हैं। माओवादियों का अता-पता बताने और मुखबिरी करने का दबाव डाला जाता है। जो लोग इससे इनकार करते हैं उन्हें माओवादी या माओवादी समर्थक बताकर गिरफ्तार कर यातनाएं दी जाती हैं। वास्तव में लोगों पर दबाव डालकर, यहां तक कि उन्हें भूख से तड़पाकर क्रांतिकारी आंदोलन से अलग करने के इरादे से ही राशन दुकानों को बंद करवाया जा रहा है।

सच यह है कि जबसे सलवा जुडूम शुरू हुआ तभी से इस तरह की कुटिल योजनाओं को लागू किया जा रहा है और यह प्रक्रिया अब तेज कर दी गई है। यहां तक कि राशन कार्ड बनाने का काम भी थानों से जोड़ा गया है। पंचायत सचिवों को थानों में बैठाकर वहीं से कार्ड दिलवाए जा रहे हैं। राशन दुकानों के संचालन में पहले से व्याप्त भ्रष्टाचार अब पुलिस के संरक्षण में ज्यादा पलने-फूलने लगेगा। सरकारी 'राहत' शिविरों में राशन वितरण के नाम पर हो रही बंदरबांट को कौन नहीं जानता? एक तरफ सरकारें 2 रूपए का चावल योजना को लेकर ढिंढ़ोरा पीट लेती हैं और आदिवासियों के विकास की बड़ी-बड़ी बातें करती हैं, तो दूसरी तरफ गांवों में स्थित राशन दुकानों में ताले जड़कर लोगों को चावल तक मिलने नहीं देती हैं। इराक में अमेरिकी साम्राज्यवादियों और फिलिस्तीन के अनेक इलाकों में इज्राएली यहूदीवादियों द्वारा कई पाबंदियां लगाकर यहां तक नन्हे बच्चों को भी दूध के लिए तड़पाने में और यहां बस्तर क्षेत्र में लोगों को चावल से भी वंचित करने में फर्क क्या है? आए दिन नक्सलवादियों को 'विकास विरोधी' कहकर प्रचारित करने वाली सरकारें आदिवासियों को चावल बंद कर भुखमरी की तरफ धकेलकर किस तरह विकास लाना चाह रही हैं? क्या इससे यह स्पष्ट नहीं हो रहा है कि ऑपरेशन ग्रीन हंट का मतलब सिर्फ माओवादियों के खिलाफ नहीं, बल्कि समूची शोषित जनता के खिलाफ युद्ध है।

हम तमाम जनवादियों से अपील करते हैं कि केन्द्र-राज्य सरकारों की तमाम दमनकारी व प्रतिबंधात्मक कार्रवाइयों के खिलाफ आवाज उठाएं। हम बस्तर के तमाम आदिवासियों, आदिवासी संगठनों और आदिवासियों के शुभचिंतकों से अपील करते हैं कि बस्तरवासियों को संविधान द्वारा प्राप्त न्यूनतम अधिकारों से भी महरूम करने वाली सरकारी नीतियों को वापस लेने की मांग करते हुए संघर्ष करें। हमारी अपील है कि आप सरकार से यह मांग करें कि वह राशन दुकानों को बहाल करे और राशन के वितरण और राशन कार्ड बांटने में पुलिस का हस्तक्षेप बंद करे। ★

9 मई 2010

तमिल राष्ट्र के मुक्ति संग्राम के महानायक प्रभाकरण और उनके साथियों की मौत से तमिलों का संघर्ष नहीं रुकेगा! तमिल ईलम संघर्ष की पराजय से शिक्षा हासिल कर साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष को तेज करो!!

(....पिछले अंक से जारी)

भारतीय विस्तारवादियों की भूमिका

शुरू से ही भारतीय सरकार ने हमेशा अपने विस्तारवादी हितों को ध्यान में रखते हुए ही श्रीलंका में दखलंदाजी की। तमिलों की बदहाली पर दिखावटी सहानुभूति दर्शाते हुए भारत सरकार ने परदे के पीछे से हमेशा सिंहली-बौद्ध अंधराष्ट्रवादी शासक वर्गों का समर्थन किया। 1949 में जब सिंहली शासक वर्गों ने सत्ता संभाली, उसने भारतीय मूल के बागान मजदूरों को मताधिकार से वंचित करने के फैसले में सहमति दी। 10 लाख से ज्यादा तमिल बागान मजदूरों को देशविहीन बनाने वाले 1949 के नागरिकता कानून लागू करने में भी भारत सरकार की सहमति थी। 1971 में जब सिरिमाओ बंडारनाइके सरकार जेवीपी के विद्रोह के खतरे से जूझ रही थी तब भारत सरकार ने विद्रोह को कुचलने में पूरी मदद की क्योंकि वह नहीं चाहती थी कि श्रीलंका में उसे हासिल महत्वपूर्ण दर्जा चीन को मिले। 1974 में भी, इसी वजह से, तमिलनाडु की जनता और राज्य सरकार के विरोध को दरकिनार कर तमिलनाडु का कच्चत्तीवु नामक मछुवारों का एक बहुत पुराना बंदरगाह-द्वीप श्रीलंका को दे दिया। इसके परिणामस्वरूप आज तमिलनाडु के 400 से ज्यादा मछवारों को श्रीलंकाई नौसेना द्वारा मार डाला गया और हजारों अन्य को गिरफ्तार कर यातनाएं दी गईं। लाखों रुपए की कीमत के मछुवारों के नाव, जाल और अन्य सामग्रियों को ध्वस्त कर दिया गया। सैकड़ों विरोध प्रदर्शनों और मछुवारों द्वारा की गई हड़तालों के बावजूद तथा विभिन्न तबकों के लोगों व सभी राजनीतिक पार्टियों के द्वारा अपीलें की जाने के बावजूद भी मछुवारों की सुरक्षा की मांग को भारत सरकार ने इस बहाने से ठुकरा दिया कि ये मछुवारे एलटीटीई की मदद करते हैं।

प्रभाकरण

भारत सरकार ने अपने विस्तारवादी हितों के साधने के लिए या तो श्रीलंकाई अंधराष्ट्रवादियों का तुष्टीकरण किया या फिर तमिल मसले के जरिए उन पर दबाव डाला। 1993 में जब श्रीलंका में तमिल-विरोधी दंगे भड़के थे, दखलंदाजी करने की ताक में बैठी भारत सरकार ने तुरंत ही खुद को आगे बढ़ाते हुए एलटीटीई को हथियार मुहैया करवाए और भारत में प्रशिक्षण शिविर खोल दिए। 1985 में उत्तरी श्रीलंका में तमिलों पर की गई बमबारी का विरोध करने के बहाने भारतीय वायुसेना के जेट विमानों ने तमाम अंतरराष्ट्रीय नियम-कायदों का उल्लंघन करते हुए श्रीलंका के क्षेत्र में घुसकर खाना और दवाइयां गिराईं।

1987 में भारत-श्रीलंका समझौते पर भारतीय व श्रीलंकाई सरकारों ने हस्ताक्षर किया था। उस समझौते से भारत सरकार का मकसद मसले का समाधान करना नहीं था और न ही उत्पीड़ित तमिलों को कुछ सहायता देना था, बल्कि समूचे श्रीलंका को अपने प्रभाव में लाना था। उसने सभी तमिल ग्रुपों को सचमुच धमकी ही दी कि वे उसकी बात मानें। जब एलटीटीई और तमिल ईलम की जनता ने उस समझौते का विरोध किया, उसने फौजी ऑपरेशन्स शुरू कर दिए ताकि उनकी वास्तविक आकांक्षाओं को कुचला जा सके। हालांकि अपनी राष्ट्रीय मुक्ति हासिल करने की खातिर संघर्ष में आने वाली किसी भी दिक्कत का सामना करने को संकल्पबद्ध हुई जनता पर भारत सरकार अपनी इच्छाएं थोपने में विफल हो गई। और अपमानजनक पराजय के बाद उसे वहां से वापस आना पड़ा। राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन को कमजोर करने और उसे अपनी विस्तारवादी महत्वाकांक्षाओं को आगे बढ़ाने के साधन में बदलने के लिए भारत सरकार ने अपने खुफिया विभाग रॉ (रीसर्च एण्ड एनालिसिस विंग) के जरिए एलटीटीई में फूट डालने और उसमें गद्दार घुसाने की साजिशें कीं। ईपीआरएलएफ, ईएनडीएलएफ जैसे ग्रुपों को उसने अपनी कठपुतली बना लिया। उन्हें हर प्रकार की सुरक्षा दी और पृथक ईलम के लिए जारी संघर्ष का विरोध किया। उसने महेन्द्रराजा महतैया जैसे अपने दलालों, जो एलटीटीई में दूसरे नंबर पर था, के जरिए एलटीटीई के प्रमुख प्रभाकरण की हत्या करने की कई कोशिशें कीं। लेकिन भारतीय शासकों की ऐसी सभी कोशिशों को एलटीटीई ने निर्दयता से रौंद डाला।

भारत सरकार ने सिंहली सरकार को सभी फौजी सहायता देकर तमिल जनता के खिलाफ किए गए जातिसंहारक युद्ध में वास्तव में भाग लिया। उसने श्रीलंका को न सिर्फ अत्याधुनिक हथियार, राडार और अन्य युद्ध मशीनें दीं, बल्कि अपने सैनिकों को श्रीलंका भेजा ताकि श्रीलंकाई सैनिकों को प्रशिक्षण दिया जा सके। कुछ मौकों पर तो 'फील्ड ट्रेनिंग' भी दिया। जब

तमिलनाडु की जनता और कुछ क्रांतिकारी व राष्ट्रीय संगठनों ने इस अपराध में लिप्तता का आरोप लगाया, तब सरकार ने तथ्यों को तोड़ने-मरोड़ने की कोशिश की। लेकिन अंततः वह यह स्वीकारने पर मजबूर हो गई कि कथित तौर पर 'आत्मरक्षात्मक उद्देश्य' के लिए उसने हथियारों की आपूर्ति की। राजीव गांधी की हत्या के बहाने उसने भारत में एलटीटीई पर प्रतिबंध लगा दिया और इस तरह भारत में, खासकर तमिलनाडु में तमिल ईलम के जारी न्यायपूर्ण संघर्ष के प्रति अपना समर्थन प्रकट करने के जनता के जनवादी अधिकारों का हनन किया। उसने राज्य सरकार पर दबाव डाला कि ईलम संघर्ष का समर्थन करने वालों को गिरफ्तार किया जाए। दर्जनों तमिल राष्ट्रवादियों और क्रांतिकारियों को इस संघर्ष का समर्थन करने के कारण राष्ट्रीय सुरक्षा कानून और अन्य काले कानूनों के तहत गिरफ्तार किया गया। एलटीटीई के नावों (स्पीडबोट्स) और अन्य सप्लाई जहाजों की निगरानी के लिए भारत सरकार ने अपनी नौसेना और कोस्टगॉर्डों का इस्तेमाल किया। कई मौकों पर उसने श्रीलंकाई नौसेना को सूचनाएं दीं जिससे ईलम संघर्ष को भारी नुकसान हुआ। तमिलनाडु के मछुवारों को एलटीटीई को बीड़ी सप्लाई करने, लुंगी, बैटरी सेल आदि की सप्लाई करने के कमजोर आरोपों में गिरफ्तार किया गया। उसने अपने दूतावासों, ब्राह्मणवादी सुब्रमण्य स्वामी जैसे अपने दलालों और 'राष्ट्रीय' (विरोधी) अखबार 'दि हिंदु' के जरिए राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष के खिलाफ, खासकर एलटीटीई के खिलाफ बड़ा दुष्प्रचार अभियान चलाया।

अधीकृत रूप से 1983 से जारी इस युद्ध में 70 हजार से ज्यादा लोगों के मारे जाने का अनुमान है जिनके नाम सूचीबद्ध किए गए हैं। हालांकि वाशिंगटन विश्वविद्यालय और हारवर्ड मेडिकल स्कूल द्वारा किए गए स्वतंत्र अध्ययन के मुताबिक मारे गए लोगों की संख्या 3,38,000 से ज्यादा हो सकती है। अक्टूबर 2008 और मई 2009 के बीच जब यह जतिसंहारक युद्ध अपने चरम पर पहुंचा था, 50 हजार लोग मारे गए और उससे दुगनी संख्या में लोग घायल हो गए। भारतीय सरकार ने इन जघन्य हत्याओं के खण्डन में एक शब्द भी नहीं कहा। कुछ रिपोर्टों के मुताबिक भारत सरकार ने एलटीटीई के राजनीतिक प्रमुख नडेशन और एक अन्य अग्रणी नेता पुलिदेवन को आश्वस्त किया था कि वे हथियार डाल दें और श्रीलंकाई सेना के सामने सरेंडर कर दें और उसने यह भी कहा बताया गया कि वह श्रीलंकाई राष्ट्रपति से इस बाबत बात कर चुकी है और वह उन्हें माफी देने को तैयार है। भारत द्वारा दिए गए आश्वासन पर भरोसा करते हुए वे सफेद झण्डा पकड़कर बाहर आए तो उन्हें नजदीक से गोली मार दी गई। नडेशन की पत्नी, जो मूलतः एक सिंहली थीं, निहत्थी थीं और उन्होंने इस भयानक अपराध का प्रतिरोध किया था, उन्हें भी क्रूरतापूर्वक गोली मार दी गई। जिस दिन श्रीलंकाई सरकार ने एलटीटीई प्रमुख प्रभाकरण को मारने का दावा किया था, ऐसी रिपोर्ट थी कि उस वक्त सिर्फ दो दिनों के अंदर 20 हजार के करीब नागरिकों की हत्या कर दी गई।

प्रभाकरण की हत्या की खबर प्रसारित कर इन भयानक कत्लेआमों पर चुप्पी साध ली गई। खून के प्यासे श्रीलंकाई सैनिकों ने मारी गई महिला टाइगर्स के साथ अत्याचार कर उसके वीडियो क्लिप्स इंटरनेट पर डाल दिए। मृत महिला टाइगरों के शरीर के अंगों को बाजार में मांस की तरह बेचा इन दरिंदों ने। दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश होने का ढोंग करने वाले शासकों ने इस पर जरा भी आपत्ति दर्ज नहीं की। उलटे, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार एम.के. नारायणन ने हत्यारे श्रीलंकाई सेना प्रमुख सरत फेनसेका की 'दुनिया का महानतम सेना प्रमुख' कहकर तारीफ की। पिछले छह महीनों में भारत की यूपीए सरकार ने श्रीलंका सरकार से एक बार भी नहीं कहा कि वह आम नागरिकों की हत्याएं बंद करे। उन नव-नात्सियों से सिर्फ यही 'अपील' करती रही कि कई और 'नो फायर जोन' (एनएफजेड - ऐसे इलाके जहां पर गोलीबारी नहीं करनी है) बना दें ताकि नागरिक शरण ले सकें। जबकि यह साफ जाहिर था कि भाड़े की सेना तथाकथित एनएफजेडों पर भी बमबारी करते हुए हजारों महिलाओं, बच्चों और बूढ़ों की हत्या कर रही थी। यह जनता को गुमराह करने के हथकण्डे के अलावा कुछ नहीं था। भारत सरकार की भूमिका को फासीवादी महिंदा राजपक्से ने खूब सराहा जब उसने यह कहा "भारत सरकार से मिली मदद और समर्थन बहुत ही संतोषजनक है।" जब श्रीलंकाई सरकार ने यह घोषणा की कि युद्ध समाप्त हो गया, कोलोंबो में ऐसे पोस्टर देखे गए जिसमें मुक्ति संघर्ष को कुचलने में भारत सरकार से मिले समर्थन को सराहा गया था। इस जाति-संहारक युद्ध के समापन के बाद भी भारत सरकार ने अपने सैनिकों को रवाना किया ताकि एलटीटीई द्वारा बिछाई गई बारूदी सुरंगों को हटाया जा सके। ईलम संघर्ष को तमिलनाडु की जनता से प्राप्त समर्थन और ईलम तमिलों के साथ उनके सदियों पुराने जातिगत व जन्मजात संबंधों की जरा भी कद्र न करते हुए भारतीय शासकों ने अपनी विस्तारवादी योजनाएं लागू कीं। ऐसा कहना अतिरंजन नहीं होगा कि भारत सरकार से सांठगांठ के साथ श्रीलंकाई सरकार द्वारा लड़ा गया युद्ध था यह।

1985-89 के बीच श्रीलंका में भारतीय उच्च आयोग के रूप में काम करने वाले जे.एन. दीक्षित ने एक दशक पहले, 1998 में श्रीलंकाई तमिलों के मसले को लेकर भारत सरकार के हितों के बारे में बिना किसी गोपनीयता के खुलेआम कहा थाः

"...तमिल मिलिटेन्सी को भारत से मिली मदद श्रीलंका को अमेरिका, इज्राएल और पाकिस्तान से मिल रहे ठोस व व्यापक फौजी और खुफिया सहयोग के बदले में थी। यह अनुमान था कि इनकी उपस्थिति भारत को रणनीतिक खतरा पहुंचा सकती है।..." फिर इसी विचार को व्यक्त करते हुए विदेश मंत्री प्रणब मुखर्जी ने मार्च 2009 में यूं कहा थाः "अपनी उत्सुकता से हमें उस द्वीप के रणनीतिक महत्व को नहीं भूलना चाहिए। यह उनकी सुरक्षा का ही मामला नहीं है, बल्कि हमारी सुरक्षा से भी नजदीक से जुड़ा हुआ मामला है। यह तो स्पष्ट ही है कि हमारे पिछवाड़े में दूसरे अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों का रहना हमें हरगिज पसंद नहीं होगा।"

श्रीलंका में भारत की दखलंदाजी सिर्फ उसकी भू-राजनैतिक अहमियत के अनुसार ही नहीं हुई थी। बेइंतहा मुनाफाखोरी से वे पूरे श्रीलंका को ही लूटने का नापाक इरादा पाले हुए थे। 1990-96 के बीच भारत के श्रीलंका को निर्यात 556 प्रतिशत बढ़े थे। 1998 में भारत-श्रीलंका द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौते पर दस्तखत किए गए जिसके अनुसार भारत से श्रीलंका में आयात किए जाने वाली चीजों पर कर की सम्पूर्ण छूट दे दी गई और इस समझौते के बाद श्रीलंका से भारत के व्यापार में उछाल आई। भारत के दलाल पूंजीपतियों ने श्रीलंका में भारी पैमाने पर निवेश किया। सिएट इंडिया, एशियन पेंट्स, एल एण्ड टी, अशोक लीलैण्ड, ताज ग्रुप होटल्स, टाटा टी, एसीसी, अल्ट्र-टेक एण्ड अंबुजा सिमेंट्स, रामको ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीस, इंडियन आइल कार्पोरेशन, महिंद्रा एण्ड महिंद्रा, काडिला ड्रग कम्पनी, एक्साइड बैटरीस, टीवीएस, ब्रिटानिया, अन्साल रियल एस्टेट, जेट एअरवेज, सहारा एण्ड इंडियन एअरवेज, आइसीआइसीआइ, यूटीआइ, एलआइसी, अरविंद मिल्स, एअरटेल, और कई अन्य बड़े पूंजीपति घरानों ने श्रीलंका में अपना व्यापार शुरू किया। भारत के निवेश 2000 में 16वें स्थान पर थे, जबकि 2005 तक बढ़कर 4वें स्थान में पहुंचे। 2002 में भारत ने चीन की बड़ी पेट्रोलियम कम्पनी साइनोपेक को श्रीलंका में आने से रोका। श्रीलंका पर ट्रिंकोमली भारी पेट्रोलियम स्टोरेज इंडियन आइल कार्पोरेशन को दे देने का दबाव डाला और आगामी 35 सालों में 100 से ज्यादा पेट्रोल बंक स्थापित करने के लिए साढ़े सात करोड़ डॉलर के पूंजीनिवेश करने का समझौता कर लिया। इसके बदले में एलटीटीई के खिलाफ जारी श्रीलंका के युद्ध में सभी प्रकार का सैन्य सहयोग देने को राजी हुई। हिंदू महासागर में सी टाइगर्स की गतिविधियों पर निगरानी रखने में भारत सरकार ने श्रीलंका की नौसेना की मदद कर उन्हें खुफिया सूचनाएं उपलब्ध करवाईं।

अब ये गिद्ध श्रीलंका के उत्तरी और पूर्वी इलाकों के 'पुनरनिर्माण' के नाम से जारी लूट में हिस्सेदारी के लिए होड़ मचा रहे हैं। दोनों देशों के बीच 2,292 करोड़ रुपए के खर्च से समुद्र के अंदर से बिजली लाइन बिछाने वाले बिजली नेटवर्क के लिए भारत व श्रीलंका के बीच जल्द ही एमओयू पर दस्तखत होने वाले हैं।

चाहे 'मदद' के नाम से या फिर विरोध में भी तमिल ईलम का मुद्दा भारत सरकर के लिए श्रीलंका के खिलाफ इस्तेमाल करने के एक साधन के अलावा कुछ नहीं है। 1987 से पहले उसने अपना प्रभुत्व बढ़ाने के लिए अंधराष्ट्रवादी श्रीलंका के खिलाफ जारी ईलम संघर्ष को 'मदद' देने की भूमिका निभाई थी। जब एक बार काबू पाया गया तब 'रक्षक' ने ठीक उससे विपरीत भूमिका अपनाकर एलटीटीई को हराने में श्रीलंकाई शासकों की मदद करना शुरू किया जो तमिलों की पृथक मातृभूमि के लिए समझौताहीन संघर्ष कर रही थी। एलटीटीई का सफाया करने से न सिर्फ श्रीलंका में 'शांति' बहाल करने में मदद मिलेगी, बल्कि तमिलनाडु में भी 'शांति' स्थापित हो जाएगी क्योंकि तमिल राष्ट्र की भावनाएं हमेशा राष्ट्रीयताओं के जेलखाने के रूप में मौजूद भारत के विरुद्ध रहेंगी। वह हमेशा डरती रही कि कहीं तमिलनाडु में राष्ट्रीय संघर्ष न भड़क उठे। सशस्त्र संघर्ष ही नहीं, बल्कि किसी भी रूप में जब राष्ट्रीय आंदोलन उभरता है तो उसे दिल्ली के शासकों से निश्चित रूप से बेरहम दमन का ही सामना करना पड़ता है। कश्मीर, पंजाब, असम, नागालैण्ड, मणिपुर, गोरखालैण्ड आदि में पिछले 52 सालों से जारी राष्ट्रीय आंदोलन ही इस बात का गवाह हैं।

ढोंगी अंतराष्ट्रीय समुदाय की भूमिका

हिंदू महासागर में एक अत्यंत प्रमुख व एक रणनीतिक इलाके में मौजूद देश है श्रीलंका। हिंदू महासागर में 47 देश मौजूद हैं। चारों तरफ कई द्वीप भी हैं। इस इलाके पर नियंत्रण के लिए मुख्य रूप से चीन और अमेरिका/भारत कोशिश कर रहे हैं। डिगो गार्षिया में अमेरिका के नौसेनिक व वायुसैनिक अड्डे हैं। भारत के इलाके न सिर्फ हिंदू महासागर के चारों तरफ फैले हुए हैं, बल्कि माल्दीव पर भी उसका खासा प्रभाव है। म्यानमार के नजदीक स्थित कोको द्वीपों में चीन का एक अड्डा है। हिंदू महासागर एक महत्वपूर्ण जल मार्ग है। दुनिया भर में कंटेनरों (भारी जहाजों) के जरिए रवाना होने वाले माल का आधा हिस्सा, थोक माल का एक तिहाई हिस्सा और तेल परिवहन का दो तिहाई हिस्सा इसी से होता है। इस मार्ग से पेट्रोलियम के उत्पाद भी भारी पैमाने पर रवाना किए जाते हैं।

5 मार्च 2007 को अमेरिका ने श्रीलंका के साथ 10 साल के लिए एक्विजिशन और क्रास-सर्वीसिंग का समझौता कर लिया। इसके अनुसार अन्य सुविधाओं के साथ-साथ युद्ध सामग्रि की आपूर्ति और ईंधन भरने की सुविधाएं भी उसे मिल जाएंगी। ट्रिंकोमली में अमेरिका का 'वाइस ऑफ अमेरिका' का ढांचा पहले से ही है। इसे निगरानी की जरूरतों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है, 1987 के भारत-श्रीलंका समझौते के मुताबिक ही भारत को यह आश्वासन मिला हुआ है - "विदेशी प्रसारण संस्थाओं के साथ श्रीलंका के समझौतों की वह समीक्षा करेगी और यह सुनिश्चित करेगी कि श्रीलंका में वे जो भी निर्माण करेंगे उनका उपयोग सार्वजनिक प्रसारण को छोड़ फौजी व खुफिया हितों के लिए न होने पाए। ट्रिंकोमली या श्रीलंका के अन्य बंदरगाह भारत के हितों को नुकसान पहुंचाकर किसी दूसरे देश के फौजी हितों को काम न आएं, यह आश्वासन दिया जा चुका है।" वह ऐसा समय था जब अमेरिका और सोवियत संघ के बीच संघर्ष चरम पर पहुंच चुका था। भारत का झुकाव सोवियत संघ की तरफ था। तब से अंतर्राष्ट्रीय समीकरण बदल गए। भारत अब इस इलाके में अमेरिका के पिट्ठू की तरह काम कर रहा है।

1993 से तेल को मुख्य रूप से आयात कर लेने वाला देश चीन तेल के उपभोग में अमेरिका के बाद दूसरे स्थान पर है।

2000-04 के बीच दुनिया भर में कच्चे तेल की बढ़ी हुयी मांग में 40 प्रतिशत चीन का रहा है। अपनी आर्थिक प्रगति को निरंतर बरकरार रखने के लिए चीन को ईंधन के स्रोत अहम होंगे। इसलिए उसने तेल आपूर्ति के लिए अहम माने जाने वाले जल मार्गों और रवाना मार्गों को हथियाने की कोशिशें तेज कीं। 2005 वाली सुनामी की तबाही के बाद गाल का पुनर्निर्माण करने के लिए चीन ने 40 लाख डॉलर की अतिरिक्त 'सहायता' की। क्योंकि वहां उसकी हथियार आपूर्ति करने वाली नारिंगो का हथियार गोदाम है। 2007 में जब इस गोदाम को बंद करवाया गया तब उसने पाली टेक्नालजीस से और भी सस्ते दामों पर अत्याधुनिक हथियार देने पर सहमति व्यक्त की। इसके मुताबिक अप्रैल 2007 में पाली टेक्नालजीस ने श्रीलंका को 365 लाख डॉलर कीमत के हथियार दे दिए। संचार व्यवस्था के लिए देशव्यापी ढांचा बनाने के लिए चीनी हुवेई को 1500 लाख डॉलर का ठेका दिया गया जिसके चीनी खुफिया विभाग एमएसएस से काफी नजदीकी रिश्ते हैं। श्रीलंका के दक्षिणी तटवर्ती क्षेत्र में हंबनगोटा के पास एक बंदरगाह बनाने का भी चीन ने श्रीलंका के साथ करार किया ताकि उसके तेल के टैंकरों की सुरक्षा की गारंटी हो सके। हाल ही में, जून 2009 में, चौथे ईलम युद्ध की समाप्ति के बाद उसने नोरोच्चोलाइ कोयला परियोजना के लिए 8910 लाख डॉलर के एक करार पर हस्ताक्षर किए। चीनी कम्पनियों को एक आर्थिक जोन को आवंटित कर उसे 33 सालों तक लागू करने के एक समझौते पर दस्तखत किए गए। हुयचिन होल्डिंग्स लिमिटेड आगामी तीन सालों के अंदर मिरिगमा जोन में 280 लाख डॉलर का निवेश करने जा रही है। पहली बार किसी ठोस इलाके को एक विदेशी संस्था के हवाले कर दिया गया। वह भी कोलोंबो के नजदीक। श्रीलंका में चीन की घुसपैठ बढ़ रही है। यह अमेरिका-भारत गठजोड़ के लिए चिंता का विषय है।

ये मुख्य देश हैं जिन्होंने अपने रणनीतिक भू-राजनैतिक व आर्थिक हितों के अनुरूप श्रीलंका में राष्ट्रीय समस्या के प्रति नीतियां अपनाईं। जब श्रीलंकाई सेना युद्ध का समापन कर रही थी तब अमेरिकी साम्राज्यवादियों ने 'निर्दोष' लोगों की हत्याओं और 'मानवीय संकट' को लेकर शोर मचाया। हालांकि 50 हजार से ज्यादा नागरिकों की मौत का कारण बना यह जाति संहारक युद्ध सितम्बर 2008 से ही जारी है, लेकिन इस युद्ध को रोकने के लिए उसने कोई ठोस कदम नहीं उठाया। वह अब मानवाधिकारों के हनन और 'निरपराध' लोगों की 'बदहाली' पर घड़ियाली आंसू बहा रहा है, लेकिन वह सब श्रीलंकाई सरकार को परोक्ष रूप से यह चेतावनी देने के लिए कि वह उसके हितों को नुकसान पहुंचाने वाला कोई कदम न उठाए और चीन को पास आने मत दे। ज्यों-ज्यों चीन श्रीलंका में बड़े पैमाने पर घुसपैठ कर रहा है, त्यों-त्यों अमेरिका अपना दबाव बढ़ाता जा रहा है। श्रीलंका के राष्ट्रपति महिंदा राजपक्से का सलाहकार रहे एक अमेरिकी वकील ने अमेरिकी अदालत में श्रीलंका के युद्ध अपराधों पर मामला दायर करने के लिए फाइल तैयार की। दिलचस्प बात यह है कि महिंदा राजपक्से का छोटा भाई गोटाबाया राजपक्से और सेना प्रमुख फोनसेका दोनों को भी अमेरिकी नागरिकता प्राप्त है। श्रीलंका में चीन के साथ जारी होड़ में अमेरिका इस बात को लेकर कभी भी श्रीलंका सरकार पर दबाव डाल सकता है।

चीन ने नव-नात्सियों को अत्याधुनिक हथियार और सहायता देने के अलावा हजारों नागरिकों की हत्या के लिए श्रीलंका के खिलाफ राष्ट्र संघ के सुरक्षा परिषद में प्रस्ताव पारित करने की कोशिशों को भी रोका। भारत सरकार ने भी इस प्रस्ताव का विरोध करने के साथ-साथ उसके खिलाफ वोट डालने के लिए कुछ अन्य देशों के साथ कुनबापरस्ती कर यही भूमिका निभाई।

एनएफजेड में नागरिकों के हालात की पड़ताल करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपने प्रतिनिधि के रूप में विजय नंबियार को भेजा। इसने ऐसी घोषणा की जैसे श्रीलंका की कोई गलती ही नहीं थी। यहां यह बताना मुनासिब होगा कि इसका एक भाई सतीष नंबियार रक्षा मामलों में श्रीलंका सरकार के एक सलाहकार के रूप में कार्यरत है। एक भाई यह सलाह देता है कि राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन का निर्दयतापूर्वक दमन कैसे किया जाए और दूसरा भाई यह देखता है कि 'मानवाधिकारों' का उल्लंघन कैसे हुआ है। नस्लकशी पूरी होने के तुरंत बाद स्थिति का 'जायजा' लेने पहुंचे संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव पर भी गंभीर आरोप लगाए गए। दरअसल उसने निर्दोष लोगों की हत्याओं समेत श्रीलंकाई फासीवादी सैनिकों के कई अन्य युद्ध अपराधों पर परदा डाला। दरअसल राष्ट्रसंघ ने एक प्रस्ताव पारित किया जिसमें एलटीटीई आतंकवादियों पर श्रीलंकाई सरकार की जीत की तरीफ की गई। जेनीवा स्थित राष्ट्रसंघ के दफ्तर के सामने एक ईलम तमिल के साथ कुल 14 तमिलों ने अपनी जानें लीं, फिर भी इस पर किसी के कान में जूं तक नहीं रेंगी।

दुनिया भर में जनमत और विरोध की जरा भी परवाह न करते हुए ये सारी प्रतिक्रियावादी ताकतें एकजुट हो गईं। कई सालों से सुनियोजित तरीके से चलाए जा रहे जाति संहारक कार्यक्रमों का शिकार बन रही ईलम जनता अपनी मातृभूमि और आजादी के लिए जो न्यायपूर्ण संघर्ष करते आ रही है, उसका दमन करने के लिए नागरिक समाज के सारे जनवादी उसूलों का निर्लज्जता से उल्लंघन किया गया। इराक में, अफगानिस्तान में और अब पाकिस्तान के स्वात घाटी में ये प्रतिक्रियावादी ऐसे ही कत्लेआम मचा रहे हैं। ये सब इस बात का सबूत है कि अपने व्यापार हितों के लिए ये हत्यारे कितने ही नीचतापूर्ण अपराध कर सकते हैं। ऊपर से देखने पर इनके बीच फर्क दिखाई पड़ने के बावजूद वह सिर्फ इसी बात को लेकर है कि अपने साम्राज्यवादी/विस्तारवादी हितों को पूरा करने में इस इलाके पर किसका पलड़ा भारी होने वाला है।

एलटीटीई की पराजय - सबक

तीन दशकों से ज्यादा समय तक राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष को सफलतापूर्वक संचालित करने वाली एलटीटीई चौथे ईलम युद्ध में न सिर्फ पराजित हुई, बल्कि उसने अपने सारे आधार इलाके खो दिए। उसके सर्वोच्च नेता प्रभाकरण समेत हजारों सैनिक मारे गए या फिर घायल हुए। गिरफ्तार भी किए गए। फिर से इन सभी को इकट्ठा कर पृथक मातृभूमि के लिए संघर्ष करना उसके लिए काफी मुश्किल होगा। काफी समय भी लगेगा। शोषण, अन्याय और दमन के खिलाफ लड़ने वालों को, खासकर सशस्त्र संघर्ष करने वाले सभी लोगों को एलटीटीई की अगुवाई में चला युद्ध प्रेरणास्पद रहा। एलटीटीई की पराजय न सिर्फ तमिल ईलम की जनता को बल्कि शोषकों के खिलाफ सशस्त्र लड़ाई करने वाले सभी लोगों के लिए भारी नुकसान है। इस संघर्ष का समर्थन कर उसके प्रति हमदर्दी रखने वाले सभी में इतनी शक्तिशाली व जुझारू ताकत का इस तरह पराजित होना सहज ही काफी निराशा भर देता है। इसलिए दुनिया भर में सभी राष्ट्रीयताओं के आंदोलनों को, भारत में तथा दक्षिण एशिया में सशस्त्र संघर्ष करने वाली सभी ताकतों के लिए उसकी पराजय के कारणों को समझना और उससे सबक लेना बेहद जरूरी है।

अतः निम्न लिखित मुख्य बिंदुओं को ध्यान में रखने की जरूरत होगी -

1) एलटीटीई तीन दशकों से ज्यादा समय तक राष्ट्रीय मुक्ति युद्ध को चलाने वाली एक जुझारू संस्था के रूप में रही। इस पूरे दौर में उसने कई उतार-चढ़ाव देखे। अब उसने अपने सारे आधार क्षेत्र गंवा दिए। लेकिन उसने कभी भी, कितनी ही कठिन परिस्थितियों में भी अपने पृथक 'तमिल ईलम' के लक्ष्य से समझौता नहीं किया। फिर भी उसका सिद्धांत और वर्गीय आधार पूंजीवादी स्वभाव का ही था। इसलिए वह तमिल ईलम के, जो उसकी दिली तमन्ना थी, दुश्मनों और दोस्तों में फर्क नहीं कर सकी। अपनी खुद की जनता के प्रति उसकी नीति में भी समस्या थी। उत्तरी व पूर्वी श्रीलंका, जोकि तमिल ईलम का हिस्सा है, के निवासरत ईलम तमिलों, मुसलमानों, श्रीलंका के मध्य इलाके के प्लांटेशन में रहने वाले तमिलों, सिंहली जनता, तमिल ईलम को हर प्रकार की मदद करने वाले भारत के तमिलों, तमिलनाडु की बुर्जआई पार्टियों, भारत सरकार, साम्राज्यवादियों - इन विभिन्न ताकतों को उसने बुर्जुआई दृष्टिकोण से ही देखा। उसने शासक वर्गों और उत्पीड़ित जन समुदायों के बीच वर्ग-भिन्नताओं को ध्यान में नहीं लिया जब वह सिंहली-बौद्ध अंधराष्ट्रवाद के साथ पेश आई थी और उसने सिंहली श्रमिक जनता को भी निशाना बनाया। इससे श्रीलंकाई शासक वर्गों, जो पहले से ही अंधराष्ट्रवाद पर पल रहे थे, को पर्याप्त मौके मिल गए कि उन्होंने सिंहली राष्ट्र की 'रक्षा' करने के बहाने और सिंहली जनता का ध्यान उनकी असली समस्याओं से हटाने के लिए तमिल-विरोधी नरसंहार भड़काया और तमिलों पर हर किस्म का अत्याचार किया। हालांकि पृथक मातृभूमि के लक्ष्य से जारी उनके संघर्ष के लिए सिंहली जनता का समर्थन जुटाना संभव नहीं है, फिर भी चूंकि अंधराष्ट्रवादी मनोभावनाएं हावी थीं, इसलिए निर्दोष लोगों को उसे नहीं मारना चाहिए था। ऊपर से, लंका सम समाज पार्टी (एलएसएसपी) जैसी संस्थाओं ने ईलम जनता के अलग होने का अधिकार समेत आत्मनिर्णय के अधिकार को ऊंचा उठाए रखा, इसलिए श्रीलंकाई शासक वर्गों के खिलाफ कितना कमजोर ही सही, साझा संघर्ष करने का मौका था। लेकिन अपने बुर्जुआई राष्ट्रीय दृष्टिकोण के चलते एलटीटीई ने अपने दावपेंच तैयार करते समय इन पहलुओं पर ध्यान नहीं दिया। आपनी खुद की जनता के साथ सम्बन्धों में भी उसने वर्ग-भिन्नताओं पर ध्यान नहीं दिया। और भी स्पष्ट रूप से कहा जाए तो जब श्रमिक जनता और बुर्जआ वर्ग के बीच कोई संघर्ष पैदा होता है तो एलटीटीई ने बुर्जुआ का समर्थन करने की नीति अपनाई। इसी तरह तमिलनाडु में उसने व्यापक जन समुदायों का समर्थन जुटाने की कोशिश से ज्यादा बुर्जुआ वर्ग और उसकी पार्टियों का समर्थन जुटाने पर ज्यादा ध्यान दिया। मजदूर, किसान, छात्र, नौजवान, निम्न पूंजीपति और बुद्धिजीवियों आदि व्यापक जन समुदायों ने तमिल राष्ट्रीय मनोभावनाओं के चलते स्वैच्छिक रूप से उनका समर्थन किया और तमिलों के लिए पृथक मातृभूमि की मांग को ऊंचा उठाए रखा। तमिलनाडु की जनता, क्रांतिकारियों और अन्य जनवादी ताकतों ने एलटीटीई के साथ-साथ ईलम संघर्ष के प्रति पुरजोर समर्थन प्रकट किया। लेकिन एलटीटीई ने यहां तक कि अपने काडरों को सख्त निर्देश दिए कि वे भारत में माओवादी संगठनों के साथ कोई सम्बन्ध न रखें। अंतरराष्ट्रीय स्तर भी उसने यही किया। एलटीटीई ने दुनिया भर में फैले तमिल आप्रवासियों के बीच एक मजबूत नेटवर्क खड़ा किया। लेकिन उसने संघर्षरत जनता और संगठनों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करने की कोई कोशिश नहीं की। साम्राज्यवादी सरकारों और सरकार के अंदर प्रभावशाली लोगों का समर्थन जुटाने पर उसने ज्यादा ध्यान दिया। यह न केवल राष्ट्रीय विशिष्टवादी रवैया था, उससे भी बढ़कर जनता से ज्यादा बुर्जुआ को तवज्जो देने वाला वर्ग-दृष्टिकोण था। विचारधारात्मक तौर पर एलटीटीई का यह स्पष्ट मत था कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद उसके हितों के खिलाफ है। एक समय उसने 'एक समाजवादी तमिल ईलम' का नारा दिया था। लेकिन बहुत जल्द ही उसने इस नारे को वापस लिया क्योंकि यह उसके वर्ग-हितों के खिलाफ था।

2) एलटीटीई ने मुट्ठी भर समर्पित कार्यकर्ताओं के गुरिल्ला बल के साथ राष्ट्रीय मुक्ति के लिए सशस्त्र संघर्ष शुरू किया। 1983 में 'काला जुलाई' के दौरान जब बड़े पैमाने पर तमिल-विरोधी नरसंहार मचाए गए थे, तब उसकी संख्या मात्र 30 थी। लेकिन **ईलम युद्ध 4** के शुरू होने से पहले उसकी संख्या 30 हजार से 40 हजार के बीच आंकी गई थी। श्रीलंकाई सेना ने अधीकृत रूप से यह घोषणा की कि युद्ध के आखिरी चरण में एलटीटीई के 22 हजार गुरिल्ले मारे गए और 10 हजार घायल हो गए, गिरफ्तार हो गए और समर्पण कर गए। राजनीतिक सत्ता छीनने

के लिए संघर्ष करने वाले किसी भी संगठन को दुश्मन से भूभाग छीनना और वहां अपना/जनता का शासन कायम करना जरूरी है। इसलिए गुरिल्ला युद्ध का मोर्चाबद्ध युद्ध में और गुरिल्ला सेना का नियमित/परम्परागत सेना रूपांतरण हो जाएगा। जुलाई 2006 में तमिल **ईलम युद्ध 4** के शुरू होने से पहले उत्तरी व पूर्वी श्रीलंका में एलटीटीई के नियंत्रण में 16 हजार वर्ग किलोमीटर का इलाका था जहां उसने अपना नागरिक व फौजी प्रशासन चलाया था। यहां से करीब तीन सालों के समय में वह अपने भूभागों पर धीरे-धीरे नियंत्रण खोती गई। एक साल बाद, जुलाई 2007 तक उसने तोप्पिगला में मिली पराजय के बाद पूर्वी प्रदेश के ट्रिंकोमली पर अपना नियंत्रण पूरी तरह खो दिया। सरकार ने तुरंत ही चुनाव का नाटक कराया और अपना दलाल व गद्दार करुणा की पार्टी को प्रादेशिक सरकार पर बिठा दिया। पूर्वी प्रदेश पर कब्जा करने के बाद श्रीलंकाई सेना ने उत्तरी प्रदेश पर अपने हमले को केन्द्रित किया। सितम्बर 2007 के बाद से एक के बाद एक एलटीटीई के इलाकों पर श्रीलंकाई सेना का कब्जा होता गया। इस पूरे दौर में एलटीटीई ने अपने को मोर्चाबद्ध युद्ध की शैली से ही जोड़े रखा, जबकि उसके इलाके छीन लिए गए थे और वह कमजोर पड़ती जा रही थी जिससे वह दुश्मन के हमलों का आसानी से शिकार होने लगी थी। तब भी उसने अपने मोर्चाबद्ध युद्धतंत्र को बदलकर फिर से गुरिल्ला युद्धतंत्र में नहीं बदला। मोर्चाबद्ध युद्ध का उसूल यह है कि युद्ध में जीत हासिल कर किसी स्थान पर अपना कब्जा बरकरार रखा जाए या उस पर कब्जा किया जाए। जब एक बार कब्जा ही खो जाए तब भी उसी को जारी रखना निरर्थक होगा क्योंकि उससे बाकी बचे स्थानों पर हमला केन्द्रित करने में दुश्मन को मौका मिलेगा। अपने कामकाज के इलाके को फैलाने और गुरिल्ला तरीकों को अपनाने की बजाए, जब दुश्मन अपने हमलों को तेज कर रहा था, तब एलटीटीई जनता के साथ-साथ छोटे से छोटे इलाकों में पीछे हटती गई। यह दावपेंच आत्मघाती था क्योंकि उसे युद्ध का विन्यास (maneuver) करने के लिए पर्याप्त जगह ही नहीं है। हालांकि एलटीटीई ने शून्य से शुरू कर खुद को अत्युन्नत स्तर पर विकसित किया, इसके बावजूद भी उसने युद्ध की स्थिति और जरूरतों के मुताबिक युद्ध के एक स्वरूप को दूसरे स्वरूप में बदलने में लचीला रवैया नहीं अपनाया। युद्ध के विभिन्न स्वरूपों - गुरिल्ला युद्ध, चलायमान युद्ध और मोर्चाबद्ध युद्ध - में लड़ने का खासा अनुभव प्राप्त होने के बाद भी उससे यह गलती क्यों हुई? उसने उम्मीद लगाई थी कि चूंकि हताहत नागरिकों की संख्या बढ़ रही है इसलिए विश्व समुदाय, यानी साम्राज्यवादी और भारतीय सरकारें श्रीलंकाई सरकार पर दबाव डालेंगी कि वह इस जाति संहारक युद्ध को रोक दे। लेकिन इन सभी प्रतिक्रियावादियों की दिलचस्पी, जैसा कि ऊपर देखा जा चुका है, अपने हितों को साधने में ही ज्यादा है। इनमें से किसी को भी जनता की तकलीफों की परवाह नहीं है। न ही किसी ने राष्ट्रीय उत्पीड़न के खिलाफ एक सम्मानजनक समझौता करवाने में मदद की। एलटीटीई के प्रमुख प्रभाकरण ने 1993 में एक बार कहा था "इस दुनिया में हर देश अपने ही हितों के अनुसार चलता है। न तो न्याय के नैतिक कानून और न ही जनता के अधिकार, बल्कि आर्थिक व व्यापारिक हित ही हैं जो मौजूदा दुनिया के क्रम को तय करते हैं। अंतरराष्ट्रीय सम्बन्ध और देशों के बीच कूटनीति ऐसे ही हितों के मुताबिक तय किए जाते हैं। इसलिए हम अंतरराष्ट्रीय समुदाय से हमारे लक्ष्य की नैतिक वैधता की शीघ्र मान्यता की उम्मीद नहीं कर सकते।... दरअसल, हमारे संघर्ष की सफलता हम पर निर्भर है, न कि दुनिया पर। हमारी कामयाबी हमारे खुद के प्रयासों, खुद की ताकत और खुद के संकल्प पर निर्भर है..." साम्राज्यवादियों और प्रतिक्रियावादी ताकतों के प्रति तार्किक रूप से इस तरह सही समझदारी रखने के बावजूद भी एलटीटीई इसे अमल में लाने में विफल हुई।

3) एलटीटीई पिछले तीन दशकों से श्रीलंका सरकार के खिलाफ समझौताविहीन राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष संचालित करती आयी है। हालांकि यह संघर्ष प्रत्यक्ष रूप से श्रीलंका के दलाल शासक वर्गों के खिलाफ है, वस्तुतः इसकी दिशा साम्राज्यवाद के खिलाफ भी है। लेकिन एलटीटीई की कभी कोई साम्राज्यवाद-विरोधी दिशा न रही और न ही राष्ट्रीय मुक्ति के अपने संग्राम में उसका कोई साम्राज्यवाद-विरोधी कार्यक्रम रहा। एक स्वतंत्र, आत्म-निर्भर तमिल ईलम के उसके कार्यक्रम की दिशा दलाल शासक वर्गों से एक पृथक राज्य हासिल करने की रही, साम्राज्यवादी शोषण व उत्पीड़न से मुक्ति की नहीं। इतना ही नहीं, उसने साम्राज्यवादी सरकारों को तमिल ईलम के दोस्त माना और हमेशा अपने संघर्ष के प्रति उनका समर्थन हासिल करने की कोशिश की। हाल के युद्ध में भी आखिरी पल तक उसकी यह उम्मीद थी कि अमेरिकी साम्राज्यवाद, जो विश्व जनता का नम्बर एक दुश्मन है और श्रीलंका समेत दुनिया के सभी प्रति-क्रांतिकारी शासक वर्गों का दोस्त है, उसकी मदद को आ सकता है। इससे तमिल ईलम की जनता और गुरिल्लों में साम्राज्यवादी चेतना भोंथरी हो गई।

4) जब ईलम मुक्ति युद्ध का गुरिल्ला युद्ध से मोर्चाबद्ध में रूपांतरण हुआ, आधुनिक व उच्च कोटि के हथियारों पर निर्भरता काफी बढ़ गई। अपनी आपूर्ति के लिए वह मुख्य रूप से साम्राज्यवादी देशों और अंतरराष्ट्रीय शस्त्र बाजार पर निर्भर रही। इसलिए उसने इन देशों में सत्ता में मौजूद प्रभावशाली लोगों से कुनबापरस्ती की। इसे समझकर श्रीलंकाई राष्ट्रपति राजपक्से ने अपने कूटनीतिक स्रोतों का इस्तेमाल कर शस्त्र आपूर्ति को बंद करवाया। साथ ही, यूरोप और उत्तरी अमेरिका में रहने वाले आप्रवासी तमिलों से ईलम संघर्ष को मिल रही वित्तीय मदद को भी रुकवा दिया। साम्राज्यवादियों पर निर्भरता से एलटीटीई को नुकसान हुआ क्योंकि इन देशों ने 'आतंक के खिलाफ युद्ध' में फासीवादी राजपक्से की मदद की। प्रतिक्रियावादी शासक वर्गों के खिलाफ लड़ने वाले गुरिल्लों के लिए न सिर्फ आर्थिक व राजनीतिक मामलों में, बल्कि सैन्य आपूर्तियों में आत्म-निर्भरता बेहद महत्वपूर्ण है।

5) संयुक्त मोर्चे के मामले में भी उसकी नीति त्रुटिपूर्ण रही। उन तमाम ताकतों को जिन्हें कि साझे दुश्मन के खिलाफ एकजुट किया जा सकता है, एकजुट करने में वह विफल रही। दरअसल, उसकी नीति श्रीलंका सेना के खिलाफ लड़ने वाली सभी ताकतों को एकजुट करने के खिलाफ रही। प्रभुत्व जमाने और नेतृत्वकारी स्थान पाने के लिए संघर्ष में उसने न सिर्फ दूसरे निम्न-पूंजीपति मिलिटेंट ग्रुपों के उन लोगों का सफाया किया जो अधिकांशतः श्रीलंकाई या भारत सरकार के दलाल बन चुके थे, बल्कि पृथक तमिल ईलम के लिए सही रूप से लड़ने वाली ताकतों का भी सफाया किया। नेशनल लिबरेशन फ्रण्ट ऑफ तमिल ईलम (एनएलएफटी), पीपुल्स लिबरेशन फ्रण्ट ऑफ तमिल ईलम (पीएलएफटी), प्रोलितारियन वैनगॉर्ड ऑर्गनाइजेशन (पीआरओवीओ) आदि क्रांतिकारी ताकतों को, जो मा-ले-मा विचारधारा और नई जनवादी कार्यक्रम के साथ थे, को तमिल इलाकों में काम करने की इजाजत नहीं दी। या तो उन्हें अपनी गतिविधियों को रोकने पर मजबूर किया या फिर उन्हें मार डाला।

6) तमिल ईलम के तीन इलाकों जाफना, वन्नी और पूर्वी क्षेत्र के बीच, खासकर उत्तरी व पूर्वी इलाकों के बीच क्षेत्रीय भिन्नताओं का ख्याल नहीं रखा गया। इसका करुणा जैसे गद्दारों ने फायदा उठाया और पूर्वी इलाके की जनता को एलटीटीई के खिलाफ खड़ा किया।

7) मुसलमानों के साथ गलत ढंग से पेश आने के कारण मुस्लिम समुदाय विरोधी बन गया, जोकि तमिल ईलम का हिस्सा है। अक्टूबर 1990 में जाफना से 28 हजार मुसलमानों का बलपूर्वक बहिष्कार, जिन्हें अपने साथ सामान भी नहीं ले जाने दिया गया था, तमिल ईलम के संघर्ष पर काफी गंभीर प्रभाव पड़ा। जनता में फूट डालने की ताक में बैठे शासक वर्गों ने इसका फायदा उठाया और तमिलों व मुसलमानों के बीच स्थाई खाई पैदा कर दी। मुसलमानों में से धनाढ्य लोगों ने श्रीलंकाई शासक वर्गों के साथ सांठगांठ की और मुसलमान आबादी को संघर्ष से दूर कर दिया।

8) माओवादी उक्ति 'जनता ही इतिहास की निर्माता है' की बजाए एलटीटीई की नीति यह रही कि 'नायक ही इतिहास का निर्माण करते हैं।' इसका अनुसरण करते हुए उन्होंने जनयुद्ध को विकसित करने की बजाए युद्ध को विकसित करने के पूंजीवादी पद्धतियों को अपनाया। उदाहरण के लिए भारी महाशक्ति अमेरिकी साम्राज्यवाद और उसकी कठपुतली सरकार के खिलाफ वियतनाम की महान जनता द्वारा कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चलाए गए राष्ट्रीय मुक्ति युद्ध में दुश्मन को 'सशस्त्र जनता के समंदर' में डुबोया गया था। जबकि ईलम मुक्ति युद्ध में जनता ने एलटीटीई के युद्ध का सिर्फ समर्थन किया। विशिष्ट बुर्जुआई दृष्टिकोण के चलते एलटीटीई ने श्रीलंकाई सेना के खिलाफ युद्ध में जनता को हथियारबंद नहीं किया, इसके बावजूद भी कि साढ़े तीन दशकों से जारी गृहयुद्ध में जनता ने कई भयानक अत्याचार झेले हैं। ऐतिहासिक सचाई और दुनिया भर की संघर्षरत जनता के अनुभवों का यह निचोड़ लेने में वह विफल रही कि जनता और सिर्फ जनता ही इतिहास की असली निर्माता है और कोई भी संघर्ष वह कितना जुझारू और दीर्घकालीन क्यों न हो, इससे हटने का मतलब उसे अनिवार्य रूप से पराजय का ही मुंह देखना होगा।

समापन

इन तमाम गलतियों और सीमिताओं के बावजूद एलटीटीई ने अभी तक समझौताहीन संघर्ष किया। अपने लक्ष्य के लिए उसने हजारों काडरों और नेताओं की जान कुरबान कर दी और इस तरह उसने एक शानदार परम्परा कायम की। बेशक इस ताजा युद्ध में एलटीटीई की पराजय उनके लम्बे संघर्ष के लिए बड़ा धक्का है। लेकिन तीन दशकों से जारी उनका संघर्ष और एक पृथक मातृभूमि को लेकर तमिल ईलम जनता की असली आकांक्षाएं और उनकी कुरबानियां कभी व्यर्थ नहीं जाएंगी। भले ही श्रीलंकाई सरकार ने एक बड़ी जीत हासिल की हो और भले ही एलटीटीई को कमजोर करने में समर्थ हुई हो, ऐसे आंदोलनों के विकास के लिए हालात अभी भी गंभीर बने हुए हैं। इसके अलावा, उन्होंने आखिरी दम तक बहादुरी के साथ लड़ा और दुश्मन के सामने अपना सिर नहीं झुकाया, न ही आत्मसमर्पण किया। इससे क्रांतिकारियों की आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा मिलती रहेगी और वे अतीत की गलतियों से सीखते हुए हथियार उठाएंगे।

युद्ध के खत्म होने के दो माह बाद, अभी भी 3 लाख से ज्यादा तमिल जनता एनएफजेड में जीने को मजबूर है जोकि नात्सी बंदी शिविरों से भी बदतर हैं। आज भी न तो स्वतंत्र मीडियाकर्मियों और न ही अंतरराष्ट्रीय सहायता एजेंसियों को इन शिविरों का दौरा करने की अनुमति नहीं दी जा रही है। इन शिविरों से छनकर आ रही खबरों से तमिलों के भयानक हालात का पता चलता है। नौजवान युवकों और युवतियों को सुनियोजित तरीके से उनके परिजनों से अलग किया जा रहा है और उनका कोई अता-पता नहीं चल पा रहा है। घर वापस भेजने की उनकी मांग को अभी भी स्वीकृति नहीं दी जा रही है। खाना, पानी, साफ-सफाई और अन्य बुनियादी सुविधाएं जनता को नहीं दी जा रही हैं। राजपक्से सरकार तमिल इलाकों को सिंहली बसाहटों में बदलने की योजना बना रही है, ठीक वैसे ही जैसे फिलिस्तीन में यहूदीवादियों ने किया। श्रीलंकाई सेना के प्रमुख सरत फोनसेका ने खुलेआम घोषणा की कि तमिलों को लंका में दूसरे दर्जे के नागरिकों के रूप में जीने के लिए तैयार रहना चाहिए।

अपनी गलतियों से सीखते हुए तमिल जनता न सिर्फ राष्ट्रीय उत्पीड़न व यंत्रणाओं से, बल्कि वर्गीय शोषण और उत्पीड़न से भी मुक्ति पाने का अपना लक्ष्य जब तक हासिल नहीं होगा तब तक संघर्ष जारी रखेगी। भारत में और दुनिया भर की सभी प्रगतिशील, जनवादी और क्रांतिकारी जनता श्रीलंका की तमिल जनता का समर्थन करती रहेगी जो पृथक मातृभूमि के लिए न्यायपूर्ण संघर्ष कर रही है। ✶

गोबेल्स का छत्तीसगढ़िया अवतार रमनसिंह अपने भ्रामक दावों और झूठे आरोपों से जनता को धोखा नहीं दे सकता!

छत्तीसगढ़ का मुख्यमंत्री रमनसिंह जो अब अपनी सत्ता की दूसरी 'पारी' खेल रहा है, शुरू से ही एक कट्टर संघ भक्त और कम्युनिस्ट विरोधी है। माओवादी संघर्ष को 'आतंकवाद' ठहराने के लिए हर वक्त तैयार रहने वाले इस शख़्स की मातृसंस्था आरएसएस देश में मालेगांव, मक्का मस्जिद जैसी कई जगहों पर बम विस्फोट करवाकर निर्दोष लोगों की जानें लेने के लिए बदनाम है। हजारों बेकसूर मुसलमानों व ईसाइयों और हजारों आदिवासियों के खून से रंगे संघ गिरोह का यह विश्सासपात्र सेनानी के हाथों खासतौर पर यह जिम्मेदारी है कि बस्तर के निहत्थे आदिवासियों के नरसंहारों को लगातार जारी रखा जाए। यह संघ के नरसंहारक एजेंडे का हिस्सा है ताकि कार्पोरेट लूटखसोट का रास्ता साफ किया जा सके। इसीलिए वह जहां एक तरफ दण्डकारण्य के क्रांतिकारी संघर्ष को कुचलने के लिए खुद एकीकृत कमाण्ड की अगुवाई करते हुए यहां की जनता पर आतंक, हिंसा, बलात्कार व नरसंहारों का लगातार प्रयोग कर रहा है, वहीं दूसरी तरफ इस संघर्ष को नीचा दिखाने के लिए लगातार दुष्प्रचार मुहिम की बागडोर भी अपने हाथों में ले रखी है। 25 अप्रैल 2010 को इसने बीबीसी हिंदी रेडियो के 'संडे के संडे' कार्यक्रम में बोलते हुए अपनी सरकार की उपलब्धियों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने के साथ-साथ क्रांतिकारी आंदोलन के खिलाफ जहर उगलते हुए कई झूठे और बेबुनियाद आरोप लगाए थे। इसके अलावा हाल में दिल्ली में हुई नक्सलवाद-प्रभावित राज्यों के मुख्यमंत्रियों के सम्मेलन में भी रमनसिंह ने इन्हीं आरोपों को फिर एक बार दोहराया। इस तरह वह खासकर दण्डकारण्य में पिछले 30 सालों से जारी क्रांतिकारी आंदोलन के ऊपर कीचड़ उछालने की नाकाम व नीचतापूर्ण कोशिश कर रहा है। आइए, उसके एक-एक आरोप और झूठे बयान की पड़ताल कर दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया जाए।

रमन का भरोसा सिर्फ दमन पर

उसकी सरकार की उपलब्धियों पर...

रमनसिंह के पिछले साढ़े छह साल के शासन में छत्तीसगढ़ में गरीबी, भूख, बेरोजगारी, बीमारी, अकाल, पलायन आदि समस्याएं ही बढ़ी हैं। किसानों की आत्महत्याओं के मामले में छत्तीसगढ़ प्रदेश की गिनती अब देश में सबसे ऊपर हो रही है। लाखों लोगों का पलायन बदस्तूर जारी है, बल्कि इसमें साल-दर-साल और इजाफा हो रहा है। उसके साढ़े छह सालों के शासन में आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, पंचायत कर्मी, पटवारी, शिक्षाकर्मी, वन कर्मी, डाक कर्मचारी, डॉक्टर, कोटवार... समाज के हर तबके के लोगों ने सरकार की मजदूर-विरोधी व कर्मचारी-विरोधी नीतियों के खिलाफ कई बार हड़तालें कीं। निजीकरण और भूमण्डलीकरण की नीतियों को आगे बढ़ाते हुए रमन सरकार ने अपने दूसरे कार्यकाल की शुरूआत में प्रदेश के बिजली बोर्ड का विखण्डन कर दिया। इस प्रकार उसने छत्तीसगढ़ की जनता और खासतौर पर बिजली विभाग के 13 हजार कर्मचारियों की जिंदगी के साथ खिलवाड़ किया। यह बात किसी से छिपी नहीं है कि बिजली बोर्ड का पूर्ण निजीकरण करने की नीयत से ही रमन सरकार ने शुरूआती कदम के तौर पर उसका विखण्डन किया। जनता और कर्मचारियों के पुरजोर विरोध के बावजूद भी इस फैसले को वापस नहीं लिया। भ्रष्टाचार के मामले में रमन सरकार के लगभग सभी मंत्री-विधायक बहुत आगे निकल गए। चावल घोटाला, डाम्बर घोटाला, बारदाना घोटाला, फर्नीचर घोटाला... लगभग हर किस्म का घोटाला छत्तीसगढ़ की जनता में परिचित व प्रचलित हो गया। नरेगा के कामों में भी घोटालों का बोलबाला है।

समर्थन मूल्य का अभाव, बोनस के भुगतान में गड़बड़ी आदि समस्याओं को लेकर छत्तीसगढ़ के किसानों ने चंद महीने पहले जो जबर्दस्त संघर्ष किए थे, उससे रमन सरकार के विकास के दावों की पोल अपने आप खुल जाती है।

दमन के मामले में रमन सरकार ने अपने सभी पूर्ववर्तियों को पछाड़ दिया। **दमन और रमन... सुनने में ही नहीं, बल्कि हकीकत में भी ये दोनों शब्द एक दूसरे के पूरक बने हैं।** रमन सरकार की पहली पारी के शुरूआती 6 महीनों के अंदर ही पुलिस की हिरासत में 20 से ज्यादा युवकों की मौत हो गई। गौरतलब है कि पुलिस के डंडों से मारे गए युवकों में ज्यादातर दलित व आदिवासी ही थे।

क्रांतिकारी आंदोलन के खिलाफ, खासकर बस्तर क्षेत्र में उनकी सरकार ने पिछले साढ़े छह सालों में जो कुछ भी किया, ऐसे उदाहरण इतिहास में बहुत कम ही मिलते हैं। 1000 से ज्यादा निरीह व निर्दोष आदिवासियों की हत्या, सैकड़ों आदिवासी बहू-बेटियों के साथ सामूहिक बलात्कार, 640 से ज्यादा गांवों को पूरी तरह या आंशिक रूप से जलाना, जनता की मुरगियों, बकरियों, गाय-बैलों को मारने से लेकर कपड़े, बरतन, घर के सारे सामान नष्ट कर देना, फसलें जला देना या नष्ट कर देना, 50 हजार से ज्यादा लोगों को तथाकथित राहत शिविरों में घसीटकर ले जाना, दसियों हजारों लोगों को पलायन करने पर मजबूर करना... ये सब ऐसे आंकड़े हैं जो सलवा जुडूम के दौरान जून 2005 से अगस्त 2009 तक सामने आए थे। और ऐसे बर्बर दमन अभियान को रमनसिंह सीना तानकर कहता है कि

यह 'अद्‌भुत जन-क्रांति' थी।

कुल मिलाकर कहा जाए तो पिछले साढ़े छह सालों के शासन में रमन सरकार का जोर पूरा दमन और लूट पर ही रहा। लोगों की तकलीफें इस दौरान और ज्यादा बढ़ी हैं। जनता के हित में उनकी सरकार ने कुछ भी नहीं किया। पूरे छत्तीसगढ़ में भ्रष्टाचारियों का बोलबाला है।

सड़क निर्माण - विकास का ढोंग

रमनसिंह का कहना है कि गंगलूर-बीजापुर सड़क बनाने के दौरान नक्सलवादियों ने 18-20 लोगों की हत्याएं कीं। जिस गंगलूर की बात रमनसिंह कर रहा है, दरअसल यही इलाका सलवा जुडूम का केंद्र बिंदु था। खासकर यहीं से रमन सरकार ने आदिवासियों की हत्याओं, सामूहिक बलात्कार, गांव जलाने और लोगों को मारपीट कर तथाकथित राहत शिविरों में घसीट ले जाने का सिलसिला शुरू किया था। सिर्फ हरियाल (चेरली) नामक एक गांव में रमन की पुलिस व एसपीओं ने 10 लोगों को लाईन में खड़ा कर गोली मार दी थी जिसमें एक 10 साल का बच्चा भी शामिल था। इस गंगलूर क्षेत्र में 2005 से लेकर 2009 तक सरकारी सशस्त्र बलों की ओर से जितना जुल्म हुआ और जितने अत्याचार हुए, उसका संक्षिप्त चित्रण करने के लिए भी कई हजार पन्ने लगेंगे। एक-दो गांवों के सरसरी आंकड़ों पर ही नजर डाली जाए तो मनकेली गांव पर 42 बार सलवा जुडूम ने हमला किया और 12 से ज्यादा आदिवासियों की हत्या की। कोतरापाल गांव से 14 लोगों की हत्या की। पुलादी गांव में कुल 11 लोगों की हत्या कर दी गई। इस गांव को पांच बार जला दिया गया जिसमें दर्जनों घर जलकर राख हो गए। सच यह रहा तो रमनसिंह का यह कहना कि उसने आदिवासियों के विकास के लिए गंगलूर से बीजापुर तक सड़क बनाई, भद्दा मजाक के अलावा कुछ भी नहीं है। गंगलूर इलाके में उसने आदिवासियों का जितना खून बहाया उस पर परदा डालने के लिए ही उलटे-सीधे आंकड़े पेश कर रहा है। सड़कों से लोगों को अस्पताल पहुंचाने में या जिला मुख्यालय से जोड़ने में सुविधा होगी, रमन की इस बात पर छोटा बच्चा भी यकीन नहीं कर सकता।

संघर्ष के क्षेत्रों में सड़कों का निर्माण सिर्फ और सिर्फ दो वजहों से किया जा रहा है। एक है - यहां की संपदाओं को आसानी से लूटकर ले जाने के लिए सड़कों का निर्माण जरूरी है। दूसरा - इस लूटखसोट के विरोध में खड़े माओवादी आंदोलन का सफाया करने के लिए सशस्त्र बलों को तेजी से हर तरफ रवाना करने के लिए। इन दो कारणों को न बताकर 'विकास' का नाम लेकर जो भी बताया जाता है वह बकवास के अलावा कुछ भी नहीं है।

झूठों के मामले में गोबेल्स से भी आगे!

रमनसिंह सरकार और उसका पुलिस-प्रशासन ने हमारी पार्टी पर बड़े-बड़े झूठे आरोप एक बार नहीं, कई बार लगाए - उन्हें दोहराया भी। 11 अगस्त को कांकेर जिले में केसेकोड़ी गांव में एक ही परिवार के 8 लोगों की हत्या करने का झूठा और मनगढ़ंत आरोप खुद पुलिस के डीजी ने हम पर लगाया था। बाद में यह खुलासा होने के बावजूद भी कि ऐसी कोई घटना हुई ही नहीं थी, न कोई स्पष्टीकरण दिया गया था और न ही कोई अफसोस जताया गया था। बस्तर जिले के टुंडेर गांव में 7वीं कक्षा पढ़ने वाले छात्र मंगडू को 5 जून 2009 को पुलिस और सीआरपीएफ ने गोली मार दी थी और आरोप हम पर लगाया था। गांव की जनता और खुद मंगडू के माता-पिता चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे हैं कि यह हत्या पुलिस व सीआरपीएफ वालों ने की थी। लेकिन कोई सुनने वाला नहीं। अभी हाल ही में दंतेवाड़ा जिले के दरभा क्षेत्र में किकिरपाल गांव में एक ही परिवार के तीन भाइयों के हमारी पार्टी द्वारा मारे जाने का आरोप लगाया गया था। धमतरी जिले में वन विभाग के एक डिप्यूटी रेंजर की हत्या का आरोप भी हमारी पार्टी पर लगाया गया। ये सभी आरोप सरकार और सरकारी पक्ष लेने वाला मीडिया जान-बूझकर हम पर लगा रहे हैं ताकि जनता के बीच हमारी बदनामी हो सके।

नक्सलवादियों को लुटेरे कहना उलटा चोर कोतवाल को डांटना ही!

माओवादी आंदोलन के ऊपर कीचड़ उछालने के उतावलेपन में रमनसिंह अपने आरोपों को थोड़ा टिकने लायक भी नहीं बना पा रहा। उसके तर्कों में इतना विरोधाभास है कि जरा भी विवेक का इस्तेमाल करने पर इस बात को समझ जाएंगे कि रमनसिंह का इरादा सिर्फ माओवादी आंदोलन के खिलाफ कीचड़ उछालना ही है। दरअसल रमनसिंह अपनी लूटखसोट और दमनकारी नीतियों पर परदा डालने के लिए ही माओवादी आंदोलन को नीचा दिखाने की हताशा भरी कोशिश कर रहा है। रमनसिंह एक ओर यह कहता है कि नक्सलवादी सड़कें बनाने नहीं देते और सड़क-ठेकेदारों को मारते हैं, इसीलिए उसे बीआरओ की मदद लेनी पड़ रही है। दूसरी ओर यह आरोप लगाता है कि सड़क ठेकेदारों से वे पैसा लेते हैं। जो ठेकेदार सड़क बनाता ही नहीं उससे नक्सलवादी कैसे पैसा वसूल सकेंगे, समझ से परे है। जहां तक माइनिंग कम्पनियों से पैसा लेने का सवाल है, रमनसिंह ने अपने एक इंटरव्यू में कहा था कि बस्तर में एनएमडीसी को छोड़कर कोई निजी कम्पनी की खदान ही नहीं है। उसका कहना है कि खदान के क्षेत्र में कोई निजी ठेकेदार नहीं है। तो फिर माइनिंग ठेकेदारों से नक्सलवादियों को पैसा मिलने का सवाल ही पैदा नहीं होना चाहिए। इसलिए, यही कह सकते हैं कि उसने अपने आरोपों में संतुलन खुद ही बिगाड़ लिया।

इस बात को सभी जानते हैं कि माओवादी आंदोलन के द्वारा कुछ व्यापारी-ठेकेदारों से चंदा लिया जाता है, जोकि उसकी जन वित्तीय नीति का हिस्सा है, ताकि पार्टी के कामकाज को

चलाया जा सके और जनताना सरकार के विकास कार्यों को जारी रखा जा सके। लेकिन यहां पर हमारी पार्टी साल भर में जो चंदा इकट्ठा कर लेती है, हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि छत्तीसगढ़ के किसी एक मंत्री या विधायक की सालाना वसूली से कई गुना कम है। टाटा, एस्सार, जिंदल, मित्तल जैसे बड़े पूंजीपति घरानों और विभिन्न तरह के ठेकेदारों से रमनसिंह और उसके दूसरे मंत्रियों को कितनी दलाली मिलती है और उससे वे किस तरह ऐशोआराम करते हैं सबको पता है। और माओवादी पार्टी के कार्यकर्ता-नेता और पीएलजीए के सैनिक क्या खाते हैं क्या पीते हैं, यह भी हमारे संघर्ष के इलाकों की जनता को अच्छी तरह मालूम है। अपने झूठों से रमनसिंह किसको धोखा दे सकता है? उसके सारे आरोप सचाई के आगे ताश के पत्तों की तरह ढह जाएंगे।

अगर माओवादी लुटेरे हो चुके होते तो शायद रमनसिंह को इस आंदोलन को कुचलने के लिए इतनी तकलीफ नहीं उठानी पड़ती। इतने भारी पैमाने पर सरकारी सशस्त्र बलों को उतारने की जरूरत भी नहीं पड़ती और प्रधानमंत्री को यह कहने की नौबत नहीं आती कि देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा हमसे है। दरअसल रमनसिंह में हमारी विचारधारा का, हमारी पार्टी का राजनीतिक और सैद्धांतिक रूप से मुकाबला करने का नैतिक बल नहीं है। इसीलिए वह इस प्रकार की ओछी बातें करते हुए कुतर्कों पर उतर आया है।

बहरहाल, लूट और शोषण के खिलाफ लड़ने के लिए ही जनता ने नक्सलवाद का रास्ता चुना है। अगर नक्सलवादी खुद ही लुटेरे बन गए तो जनता उनके खिलाफ भी लड़ेगी। और जनता को यह पूरा अधिकार है। लेकिन जनता को मालूम है कि हमारे देश को कौन लूट रहा है। बस्तर के जंगलों से अपार खनिज संपदा को लूटकर ले जाने के लिए कौन ताक में बैठा हुआ है और किन-किन के बीच इस बाबत एमओयू हो रहे हैं, यह भी सभी को पता है। टाटा जैसी कम्पनियों के साथ किए गए एमओयू का खुलासा जनता के सामने, यहां तक कि विधानसभा में भी करने से मना करने वाले रमनसिंह हमें 'लुटेरे' कहना ठीक वैसा ही होगा जैसे 'उलटा चोर कोटवार को डांटा'।

5 जून को ही टाटा के साथ बस्तर में 10 हजार करोड़ रूपए के स्टील प्लांट के निर्माण के लिए एमओयू किया जाना और कथित रूप से 5 जून को ही सलवा जुडूम की शुरूआत होना - इन दो तथ्यों में आपसी सम्बन्ध ही नहीं, बल्कि संयोग भी क्या बेहतर नहीं है? और सलवा जुडूम के लोगों ने टाटा के पक्ष में रैलियां भी निकालीं और जमीनें देने से विरोध करने वाले किसानों को धमकियां भी दे रखी हैं। और तो और, कृषि सम्बन्धों और भूमि सुधारों पर ग्रामीण विकास मंत्रालय की मसौदा रिपोर्ट में सलवा जुडूम के तहत बनाए गए राहत शिविरों के संचालन में सहायता देने वालों में टाटा, एस्सार जैसी कम्पनियों के नाम शामिल करना... यह कोई छोटा खेल तो नहीं हो सकता! अंत में, हम सिर्फ इतना ही कहेंगे कि 'रमनसिंह जी, आप सिर्फ टाटा और एस्सार के साथ किए गए एमओयू का प्रदेश की जनता के सामने खुलासा कर दीजिए। बस, इसका पता खुद-ब-खुद चल जाएगा कि लुटेरा कौन है'।

अर्थहीन तर्कों का अंबार

रमनसिंह को बस्तर में जमींदार नहीं दिखता। बस्तर में शोषण ही नहीं दिखता। खदानों के नाम से हो रहा विस्थापन भी नहीं दिखता। क्या रमनसिंह यह बता सकते हैं कि महेंद्र कर्मा और बलिराम कश्यप जैसे लोगों के पास कितनी जमीनें हैं? किसी न किसी तरीके से क्रांतिकारी संघर्ष को निरर्थक या अप्रासंगिक साबित करने की होड़ में रमनसिंह काफी कमजोर तर्कों का सहारा ले रहा है। बस्तर भी भारत की अर्ध-सामंती व अर्ध-औपनिवेशिक व्यवस्था का अभिन्न हिस्सा है। हमारे आंदोलन के फलस्वरूप बस्तर के संघर्ष-इलाकों के आदिवासियों ने न सिर्फ वन भूमि पर अधिकार हासिल किया, बल्कि कई कबीलाई व सामंती मुखियाओं के कब्जे से जमीन को छीन लिया। वर्तमान इतिहास को रमनसिंह धुंधला नहीं कर सकता!

क्या एनएमडीसी खुद बहुराष्ट्रीय कम्पनियों व बड़े पूंजीपतियों का दलाल नहीं है?

रमनसिंह यह कहता है कि बस्तर में उसने किसी निजी ठेकेदार को माइनिंग का काम नहीं सौम्पा है। उसका मानना है कि नक्सलवादी या उनके समर्थक यूं ही निरर्थक प्रचार कर रहे हैं ताकि सरकार को बदनाम किया जा सके। तो हम उससे यह सवाल पूछते हैं कि उसने कांकेर जिले के चारगांव लोहा खदान किस कम्पनी को पट्टे पर दिया। एनएमडीसी को या निको कम्पनी को? हम यह भी जानना चाहते हैं कि उसने हहलादी और आमदायमेट्टा की पहाड़ियों का पट्टा किसको दिया। निजी कम्पनी को या एनएमडीसी को? कुव्वेमारी पहाड़ी और बुधियारीमाड़ पहाड़ी पर से बाक्साइट निकालने का ठेका किसका है? क्या अब वह चिदम्बरम की प्रिय कम्पनी वेदांता को नहीं लाने जा रहा? बस्तर के पड़ोस में स्थित राजनांदगांव जिले के पल्लामाड़ की खदान क्या रायपुर एलायज एण्ड स्टील लिमिटेड को नहीं दिया गया जो सोलह आणे की निजी कम्पनी है? रमनसिंह भले ही इस तरह की बकवास से बाहर के कुछ लोगों को बेवकूफ बना सकता हो, पर बस्तरिया जनता को तो बिल्कुल नहीं कर सकता।

वैसे सवाल यह भी है कि एनएमडीसी किसका हित पूरा कर रहा है। जापानी साम्राज्यवादियों को 400 रुपए प्रति टन के हिसाब से लोहा बेचना क्या सरासर देशद्रोह नहीं है जबकि विश्व बाजार में उसकी कीमत 10 हजार रुपए से भी ज्यादा है? पाईप लाईन के जरिए लौह चूर्ण ले जा रही एस्सार कम्पनी क्या निजी कम्पनी है या फिर सार्वजनिक कम्पनी? और किसके हित में बस्तर के पानी को बहाकर बर्बाद करने की छूट दी गई। किसके हित में बस्तर के आदिवासी किसानों को अपनी ही नदियों के पानी से वंचित किया जा रहा है? और तो और अब

एनएमडीसी भी एक और पाइप लाइन बनाना चाहता है ताकि बचे-खुचे पानी को भी बर्बाद किया जा सके। इन सारे तथ्यों के बावजूद भी एनएमडीसी को सिर्फ सार्वजनिक कम्पनी जो भी कहेगा, उसे हम यही कह सकते हैं वह पागलों के स्वर्ग में है।

एक हाथ से गोलियां बरसाना और दूसरे हाथ से 'वार्ता' के लिए बुलाना!!

रमनसिंह ने कई बार हमारी पार्टी के साथ बातचीत की पेशकश की। एक बार तो उसने यह भी कहा था कि रात के एक बजे भी अगर नक्सलवादी वार्ता के लिए आगे आते हैं तो मैं तैयार हूं। अभी बोल रहा है कि हथियार रख दें तो मैं बातचीत के लिए तैयार हूं। और वो इस बात को ऐसा कह रहा है मानों हम पर दरियादिली दिखा रहा हो। इन शब्दों से साफ जाहिर है कि रमनसिंह सीधा-सीधा हमें सरेण्डर करने को कह रहा है। नक्सलवादी आंदोलन के बारे में काफी समझ रखने का दावा करने वाले रमनसिंह को यह तो मालूम होना चाहिए था कि हमने हथियार इसलिए नहीं उठाया कि आपका बातचीत का न्यौता मिलते ही त्याग दें। बातचीत के लिए हथियार डालने की उसकी शर्त बहुत ही अजीबोगरीब, बेतुकी और मूर्खतापूर्ण है। हमारी स्पेशल जोनल कमेटी शुरू से कहती आ रही है कि रमन सरकार बातचीत के मुद्दे को लेकर न ईमानदार है और न ही गंभीर। सिर्फ जनता को गुमराह करने के लिए या यह दिखावा करने के लिए कि वो बड़ा जनवादी सोच वाला आदमी है, इस प्रकार बीच-बीच में बातचीत का मुद्दा उछाल देता है। दमन पर ही रमन को विश्वास है... अमन पर कतई नहीं!

संविधान का उल्लंघन करने वाले कौन हैं?

हम सिद्धांतत: इस संविधान को जन-विरोधी या मजदूर-किसान विरोधी मानते हैं। इसमें कोई दो मत नहीं है। लेकिन रमनसिंह सरकार और देश की सभी सरकारें हर दिन और हर पल ठीक उसी संविधान का उल्लंघन करती हैं जिसका वे पालन करने की शपथ लेती हैं। लोगों को सरेआम गोली मार देना, गांवों को जलाना, महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार, 5वीं अनुसूची के प्रावधानों का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन, लुटेरी कम्पनियों के साथ गोपनीय समझौते, ग्रामसभा की अवहेलना कर आदिवासियों की जमीनें जबरन छीनना - क्या यह सब संविधान का उल्लंघन नहीं है? रमन सरकार और उसकी पुलिस और उसके अर्ध-सैनिक बल आज बस्तर में जो कुछ कर रहे हैं - वह संविधान के घोर उल्लंघन के अलावा कुछ नहीं है। क्या रमनसिंह यह बता सकेगा कि पिछले साढ़े छह सालों में उसने बस्तर की जनता के खिलाफ जो किया, क्या वह सब संविधान के तहत ही था? उसूली तौर से संविधान का विरोध करने वालों से निपटने के लिए संविधान का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन क्या जायज है?

और लोकतंत्र पर हमारे विश्वास को लेकर रमनसिंह जनता को बिल्कुल ही धोखा नहीं दे सकता। यह लोकतंत्र कितना सही है, कितना नहीं? यह लोकतंत्र है या नोटतंत्र? - ये सारे सवाल जनता में अब आम हो चुके हैं। यहां हम सिर्फ इतना जोड़ना चाहेंगे कि आज पूरे छत्तीसगढ़ में अगर कहीं लोकतंत्र मौजूद है तो वह सिर्फ हमारे दण्डकारण्य में जहां जनताना सरकार के नाम से जनता की भ्रूण रूपी राजसत्ता आकार लेकर मजबूत हो रही है। अगर किसी को इस पर शक है या फिर हमारा यह दावा किसी को अतिशयोक्ति लग रही है तो वो हमारे इलाकों का दौरा कर खुद अपनी आंखों से देख सकते हैं। ऐसे तमाम लोगों का स्वागत है। रायपुर या दिल्ली में अलीशान एसी बंगलों में रहकर पूरे ऐशोआराम की जिंदगी जीते हुए यह कहना कि नक्सलवादी लोकतंत्र के विरोधी हैं, नाजायज है। हास्यास्पद भी। आइए, खुद देखिए कि हमारे इलाकों में नई जनवादी राजसत्ता का निर्माण किस प्रकार हो रहा है।

रमन के मुंह से 'शांति' व 'विकास' के शब्द!!!

रमनसिंह की 'शांति' और 'विकास' की बातों से बारूद और खून की बू आती है। लगातार आदिवासियों के नरसंहारों को अंजाम देते हुए, जैसे कि सिंगारम, कोकावाड़ा, पालाचेलमा, गोमपाड़, गुमियापाल, वेच्चापाड़, ताकिलोड़, ओंगनार आदि गांवों में दर्जनों आदिवासी युवाओं का कत्लेआम करवाने वाले रमनसिंह के मुंह से ये शब्द निकलना एक त्रासदपूर्ण मजाक है। जब वो शांति की बात करता है तो वो कब्रस्तान वाली शांति होगी और जब वो विकास की बात करता है तो वो होगा बड़े पूंजीपतियों और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का विकास।

आइए, रमनसिंह के झूठे व बेसिरपैर के तर्कों और क्रांति-विरोधी दुष्प्रचार को रद्दी को टोकरे में फेंक दें। ✶

(... पेज 43 का शेष)

निर्दोष जनता पर जुल्म ढाये थे। पुलिस से मिलीभगत कर निर्दोष व पार्टी समर्थक लोगों पर झूठे केस दर्ज करवाए थे। पुलिस को पार्टी के पैसों का बड़ा डंप पकड़वाया था।

गद्दार आनंद ने दुश्मन को जनसंगठनों और सहकारी संगठनों का विवरण दिया था। पुलिस ने उनसे हजारों रुपये जुर्माने व रिश्वत के रूप में वसूल किए। हरेक गांव में लोगों पर दर्जनों झूठे केस बनवाने में उनका हाथ रहा। गांवों में पुलिस के साथ घूम-घूमकर ऐसे कामों को अंजाम दिया। थानों में पुलिस के साथ मिलकर महिला व पुरुषों को निर्वस्त्र कर अमानवीय यातनाएं देने में उसकी भूमिका थी। अहेरी एरिया की जनता को इस दरिंदे के कारण अनेक यातनाएं झेलनी पड़ी थीं। आज तक सैकड़ों जनता पर झूठे केस चल रहे हैं।

इस जनद्रोही को पीएलजीए ने खत्म कर जनता को काफी राहत पहुंचाई है। और इस बात को साबित किया है कि जनता के दुश्मन कहीं भी रहें, कितने समय बाद भी वो बच नहीं पाएंगे। जब उनकी मौत का समाचार जनता ने सुना तो खुशियां मनाई गईं। इसी गांव के एक अन्य मुखबिर, मल्लैया गावडे, जो पांच सालों से मुखबिरी कर रहा था को भी पीएलजीए ने 11 अप्रैल 2010 को मौत के घाट उतार दिया। ✶

ताकिलोड़ नरसंहार - ग्रीन हंट आतंक का एक और अध्याय

ऑपरेशन ग्रीन हंट के तहत 3 फरवरी को माड़ डिवीजन के ताकिलोड़ गांव में हुई एक मुठभेड़ में 7 माओवादियों के मारे जाने के पुलिस अधिकारियों के निर्लज्ज और झूठमूठ के बयान को प्रसार माध्यमों ने प्रचारित किया। लेकिन पिछले कुछ अरसे से दण्डकारण्य में घट रही घटनाओं पर जरा भी जानकारी रखने वालों को लगा कि यह मुठभेड़ न तो वास्तविक होगी, न ही मारे जाने वाले लोग हथियारबंद गुरिल्ले होंगे। उन्होंने अनुमान लगाया कि सिंगारम, सिंगनमडुगू, गोमपाड़, कोकावाड़ा आदि अमानवीय हत्याकाण्डों के सिलसिले में यह एक और हत्याकाण्ड हो सकता है। यह अनुमान पूरी तरह सच है!

सिंगारम आदि नरसंहारों की तर्ज पर सरकारी सशस्त्र बलों ने ताकिलोड़ गांव में भी निहत्थे लोगों को पकड़कर बेहद अमानवीय व बर्बर तरीके से यातनाएं देने के बाद गोली मार दी और अपने रिवाज के अनुसार बेशर्मी के साथ मुठभेड़ की मनगढ़ंत कहानी गढ़ डाली।

दण्डकारण्य में अंकुरित हुई जन राजसत्ता को नोचने के इरादे से साम्राज्यवादियों की शह पर देश के शासक वर्गों द्वारा जारी दमनचक्र का नाम पहले जन जागरण अभियान था, बाद में सलवा जुडूम बना और अब ग्रीन हंट है। इस दमनचक्र के तहत पार्टी और जनता पर मनमानी हिंसा जारी है। इसका हिस्सा ही है ताकिलोड़ नरसंहार।

भैरमगढ़ से निकले सौ से ज्यादा सशस्त्र बलों ने, जिसमें सीआरपीएफ, एसपीओ आदि शामिल थे, 3 फरवरी 2010 को सुबह छह बजे के समय ताकिलोड़ गांव की घेराबंदी की थी। ताकिलोड़ गांव में संचालित जनताना सरकार (जन सरकार) की स्कूल में पढ़ाने वाले रामू नामक व्यक्ति को पुलिस ने पिछले नवम्बर माह में एसपीओ बना लिया था। क्रांतिकारी आंदोलन को कुचलने की मंशा से पुलिस जनता और परिवारों में फूट डालकर कुछ लोगों को डरा-धमकाकर अपनी तरफ कर ले रही है और उन्हें अपनी ही जनता के साथ-साथ खुद के माता-पिता, भाई-बहनों और बीवी-बच्चों का दुश्मन बना रही है। शासक वर्गों द्वारा अपनाई जा रही नीचतापूर्ण साजिशों में यह एक है। इसके तहत कुछ समय पहले रामू के छोटे भाई को एसपीओ बनाकर उसके जरिए रामू को गोपनीय तरीके से एसपीओ बनाया गया था। जनताना सरकार उसे तब तक नहीं पहचान सकी थी जब तक कि रामू गद्दार बनकर गांव से भाग नहीं जाता। इस गद्दार के अलावा कुछ अन्य मुखबिरों की मदद से पुलिस ने ताकिलोड़ गांव पर हमला किया था। उसी समय उसके आसपास के गांवों धरमा, मर्रामेट्टा और जाड़कापारा पर कुछ अन्य सशस्त्र टुकड़ियों ने हमला किया था।

गांवों में घुसते ही इन गिरोहों ने अंधाधुंध गोलिबारी की। आंसू गैस के गोले छोड़े। सामने जो भी दिखा उसे डंडों से बेदम मारा। जब भयभीत होकर जनता इधर-उधर भाग रही थी, तो कुछ लोगों को दौड़ा-दौड़ाकर पकड़ लिया। इस तरह ताकिलोड़ से 14 लोगों को, जाड़कापारा से एक और मर्रामेट्टा से दो लोगों को पकड़ने में पुलिस सफल रही। पकड़े जाने वालों में ताकिलोड़ गांव के मोटू, मोटू की बेटी जो चौदह साल की है, जयराम और उसके सगे भाई आशाराम, कल्मामी अनंतराम और उसके छोटे भाई शीषू, वेको अनंतराम, राजू, रामू समेत कुछ अन्य लोग शामिल थे। जाड़कापारा गांव के इरपाल तथा मर्रामेट्टा गांव के कुयेर और एक अन्य व्यक्ति भी शामिल थे। पुलिस ने पहले उस जगह पर जाकर तलाशी ली जहां पहले स्कूल चला करती थी। लेकिन चूंकि रामू के गांव से भागकर एसपीओ बनने के बाद स्कूल को दूसरी जगह बदल दिया गया था, इसलिए स्कूल के साथ-साथ उसमें पढ़ने वाले नन्हे बच्चे पुलिस के हत्थे चढ़ जाने से बच गए। जिन लोगों को पकड़ लिया गया था, उन सभी को पुलिस जब अंधाधुंध पिटाई करते हुए हांककर ले जाने लगी थी तो ताकिलोड़ गांव की महिलाओं और बूढ़ों ने उसे रोकने की पूरी कोशिश की थी। लेकिन इस तरह रास्ता रोकने वालों की उम्र भी नहीं देखते हुए निर्मम तरीके से पिटाई की। पुलिस की इस अमानवीय करतूत से कई महिलाएं और बुजुर्ग लोग गंभीर रूप से घायल हुए थे। उनके शरीरों पर चोटें आई थीं। इस तरह काफी देर तक पुलिस का पीछा करते हुए अपने प्रिय जनों को छुड़वाने के लिए अड़ जाने वाले सभी लोगों पर पुलिस ने अपनी पाशविक ताकत और मनमानी हिंसा का प्रयोग कर उन्हें तितर-बितर किया।

जब वो इंद्रावती नदी के नजदीक पहुंच रहे थे तब उनका सामना पीएलजीए की एक पलटन से हुआ था। पीएलजीए ने पुलिस वालों पर गोलीबारी की जिससे कुछ बंदियों को पुलिस के शिकंजे से बचकर भाग जाने का मौका मिला था। इस तरह भाग जाने के बाद जो लोग बचे थे, उन्हें इंद्रावती नदी पार करवाकर वर्दियां पहना दीं। जब पुलिस वाले किसी को वर्दी पहनाते हैं तो उसके बाद क्या कुछ होने वाला है, आंदोलन वाले इलाकों में नन्हे बच्चों को भी पता है। इसलिए अपने पिता को पुलिस द्वारा वर्दी पहनाते हुए देखकर मोटू की बेटी ने रोते हुए उसे रोकने की कोशिश की। उसने गद्दार रामू के पास जाकर जोकि उसका रिश्तेदार भी था, रोते-बिलखते हुए गिड़गिड़ाया

'हमारा रिश्तेदार होकर भी तुम मेरे पिता को क्यों मरवा रहे हो? मेरे पिता ने क्या बिगाड़ा था तुम्हारा?' गुस्से में गालियां भी दीं। दोनों जयराम और आशाराम भाइयों ने एक दूसरे के गले लगकर काफी रोया जब उन्हें वर्दी पहना दी गई थी। एक दूसरे को बताया कि 'एक दूसरे की बांहों को थामकर ही मर जाएंगे।' लेकिन इस तरह के दृश्यों से पत्थर दिली पुलिसिया दरिंदों पर कोई फर्क नहीं पड़ा। इसीलिए बेटी की आंखों के सामने ही पिता को उलटे पांव पेड़ से लटका दिया। दोनों भाइयों को बुरी तरह पीट-पीटकर अलग कर पेड़ों पर से लटका दिया। इनके अलावा रामू, राजू, वेको अनंतराम और कल्मामी अनंतराम को भी पेड़ों में लटकाकर बेहद पाशविकता से यातनाएं दीं जिससे मानवता ही शर्मशार हो जाए। उनकी मांसपेशियों को चाकुओं से काट डाला। कुछ लोगों की आंखें निकाल दी गईं। जीभें काट दी गईं। इन बर्बर यातनाओं से वो जोर-जोर से चीखने-चिल्लाने लगे थे और मोटू की बेटी और कल्मामी अनंतराम का छोटा भाई कल्मामी शीषू इस पाशविकता के चश्मदीद गवाह थे। बाद में पुलिस इन सातों लोगों को गोली मार कर अपने साथ लाए वाहन में लादकर चली गई। जब उन्हें गोली मारी जा रही थी तब मोटू की बेटी और कल्मामी शीषू भागने में कामयाब हो गए।

इस तरह पुलिसिया पाशविकता का शिकार बनने वालों में से बारसा मोटू (35) की बीवी और पांच बच्चे हैं। सबसे छोटे बच्चे की उम्र महज चंद महीनों की है। कल्मामी अनंतराम (23) की बीवी और तीन बच्चे हैं। एक और मृतक वेको अनंतराम (30) है जिनकी बीवी आयते को जुडुम गिरोह ने 2007 में गांव पर किए गए हमले के दौरान पकड़कर बोटी-बोटी कर मार डाला था। उस समय वह एक नन्हे शिशु की मां थी। (उसके साथ में सिलुक नामक एक और महिला को भी गोली मार दी थी।) बाद में अनंतराम ने फिर से शादी कर ली। फिलहाल उनका एक बच्चा है जिसकी उम्र अभी एक साल पूरी नहीं हुई है। एमला जयराम (30) की बीवी और दो छोटे बच्चे हैं। एमला आशाराम (25) को भी बीवी और दो बच्चे हैं। जब यह हत्याकाण्ड हुआ तब आशाराम की पत्नी गर्भवती थी। कलमामी रामू (22) की बीवी और दो साल की नन्ही बच्ची हैं। मुरामी राजू की कुछ ही दिन पहले शादी हुई थी। पत्नी गर्भवती थी जब राजू की मौत हो गई। इन सात लोगों की हत्या के कारण ये सारे परिवार छिन्न-भिन्न हो गए।

इनमें से कोई भी भाकपा (माओवादी) का हथियारबंद गुरिल्ला नहीं था जैसा कि पुलिस ने दावा किया। ये सब अपने-अपने घरों में अपने बीवी-बच्चों के साथ अपनी जिंदगी जीने वाले लोग थे। सरकार खुलेआम यह घोषणा कर रही है कि माओवादी देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा हैं। लेकिन वह वास्तव में आम नागरिकों को भी दुश्मन मान रही है जो अपने घरों में अपनी ही जिंदगी जीना चाहते हैं। इसमें आश्चर्य भी नहीं है। समझना मुश्किल भी नहीं है इसे। शासक वर्ग जब दण्डकारण्य को, या यूं कहें कि पूरे देश को मनमाने ढंग से लूटने के लिए एड़ी-चोटी एक किए हुए हों, ऐसे में यह कहने वालों को भी कि यह जंगल हमारा है, यह घर मेरा है, मैं इसी हवा में सांस लेना चाहता हूं, इसी मिट्टी में दफन होना चाहता हूं, सरकार दुश्मन के रूप में देख रही है। सरकार और पुलिस चाहे कितना भी डराएं और भ्रमित करें, 'राहत' शिविरों में बंदी बनने से इनकार करना, एसपीओ या जनद्रोही बनने से इनकार करना, अपनी ही उंगलियों से अपनी आंखों को फोड़ने से इनकार करना - ये भी शासकों की नजर में अपराध बन गए हैं। ये इतनी बड़ी ज्यादतियां बन गए हैं कि इनकी सामूहिक हत्या कर सभी पर माओवादी का ठप्पा लगा दिया जाए।

पकड़े गए अपने लोगों को पुलिस के हाथों निर्मम तरीके से मार दिए जाने की खबर सुनकर परिवारजनों, रिश्तेदारों और ग्रामवासियों में शोक और आक्रोश की लहरें दौड़ गईं। उन्होंने तय किया कि भले ही वे उन्हें बचा नहीं पाए, लेकिन उनके शवों को ले आकर अपनी ही मिट्टी में पूरे सम्मान के साथ अंतिम संस्कार करेंगे। यहां की जनताना सरकार ने जनता का, खासकर महिलाओं का यह आह्वान किया कि शवों को लाने के लिए गोलबंद हुआ जाए। इसके लिए मृतकों की पत्नियों, माताओं समेत करीब 150 महिलाएं रातोंरात भैरमगढ़ पहुंच गईं। लेकिन मनुष्यों की हत्या कर लाशें देने से भी इनकार करने के बेहद अलोकतांत्रिक माहौल में लाशें ले आने के लिए भी उन्हें सरकारी सशस्त्र बलों से काफी जद्दोजहद करना पड़ा था। उन्होंने यह मांग तो नहीं की थी कि उनके अपनों की ली हुई जानें वापस दें। जिन्हें मार डाला गया उन्हें जिंदा करने की मांग तो नहीं की थी। उनकी मांग इतनी ही थी कि उनके अपनों को बेजान अवस्था में ही सही वापस दें। लेकिन फासीवादी शासकों और उनके पालतू कुत्ते पुलिस को यह बर्दाश्त नहीं हुई। शव लेने के लिए आने वाले सभी लोगों को उन्होंने गंदी गालियां दीं। मनमाने तरीके से लाठियों से मारा। धमकाया। मृतकों की माताओं को भी अंधाधुंध पीटा। इसमें मृतक जयराम की मां को गंभीर चोटें आईं थीं। लेकिन उन्होंने खाली हाथों वापस नहीं आने की ठान ले रखी थी। 'मारना है तो हमें भी मार दो, लेकिन हम शवों के बिना नहीं जाएंगे' कहा उन्होंने। पुलिस-एसपीओ ने उन पर न केवल शारीरक हिंसा की, बल्कि शवों पर चढ़कर पैरों से रौंदकर, नाच-कूदकर विकृत खुशी भी प्रदर्शित की जिससे वे मानसिक रूप से भी आहत हुए। इसे न देख पाने वाली कुछ महिलाओं ने पुलिस को गालियां दीं। एक मृतक की मां ने तो एक एसपीओ के मुंह पर तमाचा भी मारा था जो ऐसा कर रहा था। इस तरह महिलाओं के दृढ़ता से लड़ने के कारण ही मजबूर होकर पुलिस ने 4 तरीख के दोपहर में शव सौंप दिए। महिलाओं ने सातों शवों को ढोकर गांव में लाया। उसी रात में जनताना सरकार की अगुवाई में, आसपास के गांवों से इकट्ठी हुई सैकड़ों जनता के द्वारा राजकीय हिंसा के खिलाफ लगाए गए नारों के बीच पूरे सम्मान के साथ मृतकों का अंतिम संस्कार किया गया। 7 फरवरी को ताकिलोड़ गांव में मृतकों की

स्मृति-सभा आयोजित की गई। इस सभा में आसपास के गांवों के कई लोगों ने भाग लेकर मृतकों को श्रद्धांजली पेश की। इस अमानवीय हत्याकाण्ड का सभी ने पुरजोर स्वरों से खण्डन किया। और देश की तमाम जनता और जनवादी ताकतों से अपील की कि वे इस तरह के हत्याकाण्डों को अंजाम दे रहे ऑपरेशन ग्रीनहंट को फौरन रोकने की मांग करते हुए सरकार पर दबाव डालें।

लेकिन पुलिस के हाथों बंदी होकर जिन लोगों ने इस अमानवीय हत्याकाण्ड को अपनी आंखों से प्रत्यक्ष देखा वे कई दिनों तक मानसिक तौर पर ठीक नहीं हो पाए। मोटू की बेटी का मानसिक संतुलन बिगड़ गया। कई दिनों तक वह लड़की बिना बोल-चाल के और बिना खाए-पिए रही।

मृतकों के परिवार सदस्यों का मनोबल बढ़ाने के लिए तथा जनता, पार्टी और जनताना सरकार उनकी मदद करती रहेंगी, यह आश्वासन देने के लिए पार्टी ने मृतकों के परिवार सदस्यों के साथ एक बैठक की। उनके सुख-दुख को समझकर उन्हें जरूरी आर्थिक सहायता भी दी।

इसके बाद इस घटना के लिए जिम्मेदार लोगों में से दो मुखबिरों को पार्टी ने सजा दी।

देश के भविष्य को बचाने के लिए, देश के भविष्य के साथ जुड़े अपने अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्षरत जनता पर शासक वर्गों द्वारा किए जा रहे इस तरह के हत्याकाण्डों का खण्डन करना, इस प्रकार के जुल्मों को रोक सकने वाले आंदोलनों को तेज करना जनता और जनवादी ताकतों की न्यूनतम जिम्मेदारी है।

जनता को संघर्ष का रास्ता छोड़ने पर विवश करने के लिए ही शासक वर्ग इस तरह निहत्थी जनता की भी बर्बरतापूर्ण हत्याएं कर रहे हैं। लेकिन जब तक समस्याएं रहेंगी तब तक जनता संघर्ष के रास्ते पर चलती ही रहेगी। दमन से प्रतिरोध और भी बढ़ जाता है, लेकिन संघर्ष रुकेगा नहीं। यह इतिहास में प्रमाणित नियम है।

क्रांतिकारी प्रतिरोध को और भी बढ़ाकर ही हम शासकों के हत्याकाण्डों का अंत कर सकेंगे। इस दिशा में हमारे प्रयासों को और भी तेज करना हमारा कर्तव्य है।

कॉमरेड कुमली की निर्मम हत्या का विरोध करो!

दण्डकारण्य के जनयुद्ध के खिलाफ छेड़े गए चौतरफा हमले के तहत शासक वर्ग आज अपने मुखबिर नेटवर्क को मजबूत बना रहे हैं। जन-विरोधियों और क्रांतिकारी आंदोलन के चलते चोट खाए हुए दुष्ट मुखियाओं के अलावा साधारण लोगों को भी बहला-फुसलाकर या डरा-धमकाकर मुखबिर या एसपीओ बना रहे हैं। इस तरह एसपीओ या मुखबिर बनने वाले जनता, जन संगठनों और पेशेवर क्रांतिकारियों पर हमले कर क्रांतिकारी आंदोलन को नुकसान पहुंचा रहे हैं।

इसी श्रेणी में आने वाले लोग हैं माड़ डिवीजन के कुत्तुल गांव के केसा भैरा, मिच्चा व पिरतू तथा परसवेड़ा गांव का दल्लू। ये शुरू से ही लम्पट किस्म के तत्व रहे। चूंकि यहां पर बढ़ रहे क्रांतिकारी आंदोलन ने सभी किस्म की बुराइयों पर रोक लगा दी, इसलिए वे दबकर रहने को मजबूर हुए थे। 2005 में पश्चिम बस्तर में सलवा जुडूम शुरू होने के बाद जिस तरह पुलिस वालों ने ऐसे सभी लोगों को इकट्ठे कर अपने औजार बना लिए थे, उसी तरह यहां भी पुलिस ने उन्हें अपने नेटवर्क का हिस्सा बना लिया था। 2006 से ये लोग नारायणपुर कस्बे में रहते हुए क्रांति-विरोधी गतिविधियों को अंजाम देते आ रहे हैं। इसकी पराकाष्ठा के रूप में 10 फरवरी 2010 को इन लोगों ने कॉमरेड कुमली के साथ सामूहिक बलात्कार कर उन्हें मार डाला। कॉमरेड कुमली माड़ डिवीजन के कुत्तुल इलाके में जनताना सरकार के कृषि विभाग में पेशेवर क्रांतिकारी के रूप में काम कर रही थीं। करीब 20 साल की यह युवती कुमली 10 फरवरी के दिन दुमनार गांव में स्थित कृषि क्षेत्र में जब अकेली जाकर काम कर रही थीं, उपरोक्त चार दरिंदों के गिरोह ने उन पर हमला कर दबोच लिया। उन्होंने कुमली को उठा ले जाकर पाशविकता से बलात्कार किया और वहां से जंगल में कुछ दूर ले जाकर उनकी गला रेतकर हत्या कर दी।

कृषि क्षेत्र से कॉमरेड कुमली के नहीं लौटने पर चिंतित होकर उनके साथियों और जनता ने काफी खोजबीन की। 13 फरवरी को ग्रामीणों ने उनकी लाश को खोज निकाला। उनके मृत शरीर को देखने वालों को गहरा धक्का सा लगा था। उनकी हत्या इतनी बर्बरता से की गई थी कि वह निर्वस्त्र पड़ी हुई थीं। सिर को धड़ से पूरी तरह अलग कर दिया गया था। और हत्यारे मानवता की सारी हदें पार करते हुए जीभ को काटकर अपने साथ ले गए थे ताकि अपनी करतूत का सबूत पुलिस अधिकारियों के सामने पेश कर उसका इनाम हासिल किया जा सके। सिर्फ यही नहीं, जनता को आतंकित करने के लिए भी उन्होंने ऐसी क्रूरता बरती। पुलिस के खुफिया विभाग के क्रूर अधिकारी फ्रांसिस इंदुवार को जब क्रांतिकारियों ने गला रेतकर मार डाला था, तब शासक वर्गों ने अपने इशारों पर नाचने वाले प्रसार माध्यमों के जरिए खूब हाय तौबा मचवाई थी। लेकिन जनता की मुक्ति के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाली एक आदिवासी लड़की को जब इन्हीं शासक वर्गों के पालतू कुत्तों ने बेहद पाशविकता के साथ सामूहिक बलात्कार कर उनके गले और जीभ को काटकर हत्या की, तो इसको पार्टी द्वारा उजागर किए जाने के बावजूद भी प्रसार माध्यमों ने इस पर ध्यान नहीं दिया। क्या 'देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा' बताई जाने वाली पार्टी से जुड़ने मात्र से एक आदिवासी युवती इतनी नृशंसतापूर्ण मौत की हकदार बन जाएगी?

कुमली की निर्मम हत्या ने जनता में शासक वर्गों और उनके 'पालतू कुत्तों' के प्रति बेहद गुस्सा पैदा किया। जनता के लिए

अपने प्राणों को न्यौछावर करने वाली उत्पीड़ित जनता की इस प्यारी बेटी का शव उनके गृहग्राम पैवेर ले जाकर लोगों ने क्रांतिकारी परम्पराओं के साथ अंतिम संस्कार किया। और शपथ ली कि इस युवा क्रांतिकारी की कुरबानी को व्यर्थ जाने नहीं दिया जाएगा।

कॉमरेड कुमली की हत्या आखिर किसने की? यह समझना मुश्किल नहीं है कि पुलिस या एसपीओ ही यह काम कर सकते हैं। वरना जनता की इस चहेती की हत्या करने की सोच भी और किसी के दिमाग में क्यों आएगी? उनकी हत्या के कुछ ही दिन बाद पिरतू नामक एक एसपीओ को जन मिलिशिया साथियों ने गिरफ्तार किया। जब उस गद्दार से पूछताछ की गई तो साफ तौर पर पता चला कि इस दरिंदगी के पीछे किस-किस जनद्रोही का हाथ था। पिरतू को जन अदालत ने मौत की सजा दी। दूसरे जनद्रोहियों को भी यही सजा देने की घोषणा की।

छोटी उम्र में ही अपनी जिंदगी क्रांति को समर्पित कर जनद्रोहियों की आंखों में किरकिरा बनने वाली कॉमरेड कुमली माड़ डिवीजन के कुत्तुल इलाके के पैवेर गांव की थीं। उनका क्रांतिकारी आंदोलन में शामिल होना ही एक अद्‌भुत घटना थी। बचपन में ही मां के निधन होने से वह अपनी मौसी के संरक्षण में बड़ी हुई थीं। जवानी की दहलीज पर आते ही उन्हें टाइफाइड ने दबोच लिया जिससे उनका शरीर बुरी तरह कमजोर पड़ गया था। ऊपर से पूरे शरीर में फोड़े आए थे। चूंकि आदिवासियों में इलाज की सुविधाओं का अभाव आम बात है, इसलिए वह मौत की तरफ खिसकती गई थीं। जब वह आखिरी सांसें गिन रही थीं, तब घर वालों ने यह समझकर कि अब उनका मरना निश्चित है, घर के बाहर कचरे के ढेर पर एक खाट में लिटाकर छोड़ दिया। (एक अंधविश्वास है कि ऐसा करने से लोग बच जाते हैं।) ऐसे समय वहां गुरिल्ला दस्ता गया था। लगभग लाश जैसी स्थिति में पड़ी कुमली को उठा लाकर इलाज किया। इस तरह उन्हें पुनर्जन्म मिल गया बताया जा सकता है। बाद में उन्होंने निश्चय किया कि क्रांतिकारी आंदोलन ने उन्हें दोबारा जिंदगी जीने का जो मौका दिया, उस जिंदगी को वह उसी आंदोलन के लिए अर्पित करेगी। इस तरह वह क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़ गईं। 2007 में भर्ती होने के बाद एक साल तक उन्होंने कुत्तुल इलाके में ही एलजीएस सदस्या के रूप में काम किया। कम समय में ही उन्होंने दृढ़ संकल्प के साथ पढ़ना-लिखना सीख लिया।

लाल झण्डे में लिपटा कॉमरेड कुमली का शव

2008 में वह जनताना सरकार के कृषि विभाग में सदस्य बन गईं। वह काफी मेहनती कॉमरेड थीं। कृषि के काम में किसी भी नए तरीके को वह यूं ही पकड़ लेती थीं। उसे व्यवहार में लागू कर दिखाने को हमेशा आतुर हुआ करती थीं। आलू जैसी कई नई किस्म की फसलों को परिचित करवाने में उन्होंने अहम भूमिका निभाई।

कॉमरेड कुमली ने अपने गृहग्राम में भी कृषि क्षेत्र शुरू किया जहां पर काम करते हुए अपने गांव की जनता की कृषि पद्धति का क्रांतिकरण करने का सपना देखा था। इस तरह समूची जनता की अर्थव्यवस्था का क्रांतिकरण करने की प्रक्रिया में वह भागीदार बनी थीं। इसीलिए वह उन शासक वर्गों की दुश्मन बन गई थीं जिन्हें वैकल्पिक जन-व्यवस्था बर्दाश्त नहीं है। इसी का नतीजा है कि वह उनके हाथों कत्ल कर दी गईं।

कॉमरेड कुमली हमेशा हंसते-मुस्कराते रहने वाली कॉमरेड थीं। उनके अंदर गरीबों की सेवा करने की भावना कूट-कूटकर भरी रहती थी। जिम्मेदारी के हिसाब से वह जिस किसी भी गांव में रहतीं तो वहां के नन्हे बच्चों को गोद में उठाकर खेलाते हुए गरीब महिलाओं के काम में मदद करती थीं। खुद क्रांतिकारी आंदोलन से ही पुनर्जन्म पाने वाली कॉमरेड कुमली किसी भी गांव में बीमार लोग रहते हैं तो वहां जाकर उन्हें बड़े धैर्य व ध्यान से समझाकर दस्ते के गुरिल्ला डॉक्टरों से इलाज करवाती थीं। इस तरह वह इलाके की समूची जनता की लाड़ली बनी थीं।

वह काफी बहादुर कॉमरेड भी थीं। दुश्मन से वह कभी खौफ नहीं खाती थीं। उनके दुश्मन गिरोह के हाथों पड़ने से दो दिन पहले, रात में एसपीओ गिरोह ने कृषि विभाग के कॉमरेडों के मुकाम के करीब आकर जोर से चिल्लाया था। अगले दिन शम को उनकी टीम का एक सदस्य जब काम पर निकला था तो उस पर हमला करके पकड़ने की कोशिश भी की थी। वह बचकर भाग आया था। यह सब जान-सुनकर भी वह डरी नहीं थीं। उन्होंने अपने साथियों की हिम्मत बंधाते हुए बताया था, 'अगर दुश्मन के गुण्डे हम पर हमला करते हैं तो हम अपने पास मौजूद कुल्हाड़ियों से मुकाबला करेंगे'।

जिस दिन वह बर्बरता का शिकार बनी थीं, उस दिन भी वह काफी सावधानियां बरतते हुए ही, चारों ओर नजरें घुमाने के बाद ही काम पर लगी थीं। उस कृषि क्षेत्र के पास में एक पुराना मुकाम भी रहता है जहां दस्ते के लोग कभी-कभार रुका करते हैं। उस दिन वो दरिंदे भी उसी मुकाम में घात लगाए हुए थे। एक ने उन्हें दूर से ही आवाज दी थी। चूंकि आवाज दस्ते के मुकाम से ही आई थी, इसलिए संभवत: वह यह सोचकर उस तरफ गई होंगी कि कोई दस्ते का कॉमरेड ही उन्हीं बुला रहा है। बस, वहां छुपे हुए हत्यारों के चंगुल में वह जा फंसी।

आज कॉमरेड कुमली हमारे बीच नहीं है। वह मरकर शोषित जनता के आक्रोश में बदल गईं। उस आक्रोश से शोषक शासक वर्गों को बचाने की ताकत भला किसके पास है? ★

ऑपरेशन ग्रीनहंट के तहत ओंगनार में मुठभेड़ के नाम पर मारे गए कॉमरेड्स संतू पोटाई, फूलो वड्डे (दीपिका), कांडे पोटाई, रमोली वड्डे और दलसाय कोर्राम की निर्मम हत्याओं की निंदा करो!

7 फरवरी की सुबह के पौने नौ बजे बस्तर के नारायणपुर जिले के गांव ओंगनार में पुलिस व अर्द्ध सैनिक बलों ने ग्रामीण जनता पर अंधाधुंध गोलीबारी की। इसमें दो युवतियों समेत कुल पांच ग्रामीणों - संतू पोटाई, फूलो वड्डे (दीपिका), कांडे पोटाई, रमोली वड्डे और दलसाय कोर्राम की मौत हुई। हमेशा की तरह पुलिस इसे भी मुठभेड़ बताकर प्रचारित कर रही है। दिनदहाड़े और गांव के बीचोबीच पुलिस व अर्ध-सैनिक बलों ने इस निर्मम हत्याकाण्ड को अंजाम दिया। बस्तर क्षेत्र में केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा जारी आपरेशन ग्रीन हंट के तहत अगस्त 2009 से लेकर अभी तक 100 से ज्यादा आदिवासियों की हत्या की जा चुकी है। सिंगारम, माटवाड़ा, पोंजेर, हरियाल, गच्चनपल्ली, गोमपाडु.... नरसंहारों की इस कड़ी में रमन सरकार ने अब ओंगनार नरसंहार को शामिल कर दिया।

फूलो वड्डे

दलसाय कोर्राम

रमोली वड्डे

7 तारीख की सुबह वेड़माकोट, मूंजमेट्टा, नेलवाड़ और नारायणपुर पुलिस थाना/कैम्पों से निकल पड़े थे खून के प्यासे पुलिस व अर्ध-सैनिक बल। इन आतंकी बलों ने एक बड़े हत्याकाण्ड को अंजाम देने की कुटिल साजिश के तहत ओंगनार और उसके आसपास के गांवों में एक साथ धावा बोला। नरसंहारों के जरिए जनता में आतंक फैलाने के स्पष्ट इरादे से इन सरकारी सशस्त्र बलों ने अलग-अलग टुकड़ियों में बंटकर गांवों के साथ-साथ आसपास के जंगलों में भी जगह-जगह छापेमारी की। इन खूंखार कातिलों को देखकर यहां के गांवों के स्त्री-पुरुष और बच्चे-बूढ़े जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे थे। भागने वाली जनता पर, खासकर युवाओं पर ओंगनार गांव के पास घात लगाए बैठे सरकारी बलों ने नजदीक से अंधाधुंध गोलीबारी की। इस गोलीबारी में 5 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। मारे गए सभी लोग ओंगनार और उसके आसपास के गांवों के नौजवान थे जिन्हें पुलिस 'नक्सलवादी' घोषित कर रही है। इस छापेमारी के दौरान गांवों में जब्त की गई कुछ भरमार बंदूकों को दिखाकर पुलिस इस एकतरफा व अमानवीय गोलीबारी को वास्तविक मुठभेड़ के रूप में चित्रित करने की नाकाम कोशिश कर रही है।

मारे गए पांच आदिवासी युवाओं का परिचय इस प्रकार है -

1) **संतू पोटाई** (उम्र 25 साल) - यह ग्राम मातला के निवासी थे। इनके पिता का नाम सीताराम पोटाई है। 2004 में इनकी शादी हुई थी और इनके दो बच्चे हैं।

2) **फूलो वड्डे** (उम्र 22 साल) - यह युवती ग्राम ओंगनार की थीं। गांव में इन्हें दीपिका के नाम से भी बुलाया जाता है। गरीब परिवार में जन्मी यह युवती गाने भी गा लेती थीं।

3) **कांड़े पोटाई** (उम्र 20 साल) - ग्राम अड़ेमपाड़ के एक गरीब परिवार में इस नौजवान का जन्म हुआ था।

4) **रमोली वड्डे** (उम्र 22 साल) - यह नौजवान महिला ओनापाड़ गांव की थीं। यह गरीब किसान परिवार से थीं।

5) **दलसाय कोर्राम** (उम्र 22 साल) - मांडोकी गांव में पैदा हुए यह नौजवान एक गरीब परिवार का बेटा था। 4 साल पहले इनकी शादी हुई थी और दो बच्चे हैं।

इन पांचों नौजवानों की हत्या कर पुलिस उनकी लाशें नारायणपुर ले गई। लाशों को उनके परिजनों को सौंपने की जिम्मेदारी से पल्ला झाड़कर पुलिस ने खुद ही नारायणपुर में ही दफना दिया। इस आतंकी और बर्बरतम अभियान को और गति देने के लिए गृहमंत्री चिदम्बरम राज्यों के साथ लगातार बैठकों का दौर चला रहे हैं। हत्या और आतंक के सहारे देश के सभी आदिवासी इलाकों को मानवरहित बनाकर बड़े और विदेशी कम्पनियों की लूटखसोट के लिए माहौल बनाना ही इस ग्रीनहंट अभियान का एक मात्र लक्ष्य है। हम देश की जनता से अपील करते हैं कि ग्रीनहंट के नाम से जारी आदिवासियों के कत्लेआमों का कड़े शब्दों में विरोध करें। और सरकारों से इस हत्याकाण्ड को तत्काल रोकने की मांग करें। ✶

दण्डकारण्य संघर्ष को आगे ले जाते हुए अपने प्राणों का बलिदान देने वाले वीर शहीदों को जन-जन का लाल सलाम!

दण्डकारण्य संघर्ष को आगे ले जाने के क्रम में, ऑपरेशन ग्रीन हंट को हराने के लिए जारी प्रतिरोधी संघर्ष में कई कॉमरेडों ने अपनी जान की कुरबानी दी। बहुत से कॉमरेड ऐसे थे जो निहत्थे दुश्मन के हाथों पकड़े जाने के बाद निर्मम हत्या का शिकार बने थे, जबकि कुछ ही कॉमरेड ऐसे थे जो वास्तविक मुठभेड़ में शहीद हुए थे। चंद कॉमरेडों की मौत बीमारियों के कारण हुई है। आइए, कुछ शहीदों के जीवन इतिहास से रूबरू हुआ जाए।

कॉमरेड सुखदेव

कॉमरेड सुखदेव पूर्व बस्तर डिवीजन के गांव हड़ेली के निवासी थे। जन मिलिशिया के सदस्य कॉमरेड सुखदेव बीमारी के कारण 10 फरवरी 2010 को शहीद हो गए।

जन संगठन में काम करते हुए 15 फरवरी 2009 को वह जन मिलिशिया का सदस्य बने थे। अपने गांव में 8वीं तक पढ़ाई करने वाले कॉमरेड सुखदेव घर में सभी काम जिम्मेदारी के साथ करते थे। उसी प्रकार जन मिलिशिया या जन संगठन में भी। वह सभी काम जो पार्टी सौंपती मन लगाकर करते थे। उन्होंने अपने जन मिलिशिया के साथियों को भी पढ़ाई-लिखाई सीखाई। सभी से उनका व्यवहार बहुत अच्छा व मिलनसार रहता था। वह हमेशा नशेबाजी से दूर रहने वाले कॉमरेड थे। अपने घर वालों को ही नहीं, अपने साथियों को भी वह ऐसी चीजों से दूर रहने के लिए समझाते थे। स्थानीय जन मिलिशिया के लिए कॉमरेड सुखदेव की शहादत बड़ी क्षति है। कॉमरेड सुखदेव को लाल सलाम!

कॉमरेड चमरू

गंगालुर एरिया के गांव मैमा में कॉमरेड चमरू को 17 जनवरी के दिन पुलिस ने फायरिंग कर मार डाला। वह किसी काम से जंगल से आ रहे थे, तब हत्यारी पुलिस घात लगाए बैठी थी। कॉमरेड चमरू को देखते ही पुलिस वालों ने गोलियां चलाईं। वहीं कॉमरेड चमरू शहीद हो गए। उनकी लाश को पुलिस वाले उठाकर बीजापुर थाने में ले गए थे। गांव की महिलाओं ने जाकर वहां धरना दिया तब जाकर पुलिस वालों ने लाश को गांव वालों के हवाले किया। गांव की जनता ने क्रांतिकारी सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया। वह गांव के डीएकेएमएस अध्यक्ष थे और जनता के प्यारे नेता थे।

कॉमरेड कोरसा लखमू

गंगालुर एरिया के गांव रेगड़गट्टा में 3 फरवरी 2010 को पुलिस ने फायरिंग कर कॉमरेड कोरसा लखमू को मार डाला। 48 वर्षीय ग्रामीण कोरसा लखमू जंगल में सोए हुए थे, जो सुबह उठकर गांव की तरफ आ रहे थे। उन्हें मारकर उनकी लाश को पुलिस वाले उठाकर ले गए। रेडियो व समाचार पत्रों में एक नक्सलवादी के मारे जाने की झूठी खबर फैलाई। भोले-भाले ग्रामीण की लाश को पाने के लिए भी गांव की महिलाओं को पुलिस के साथ लड़ना पड़ा।

कॉमरेड्स हेमला सुरेश व बारसा लक्ष्मी

पश्चिम बस्तर डिवीजन के गंगालुर एरिया के अंतर्गत आने वाले गांव पालनार के निवासी थे कॉमरेड हेमला सुरेश। 35 वर्षीय एलओएस कमांडर कॉमरेड सुरेश के साथ गांव की एक अन्य महिला को मुखबिरों ने 13 फरवरी को फायरिंग कर मार डाला।

पश्चिम बस्तर डिवीजन के नेशनलपार्क एरिया में वह एलओएस कमांडर था। फरवरी 2010 में वह अपने घर वालों से मिलने के लिए अपने गांव गया हुआ था। पुलिस को जब मुखबिरों के जरिए उनके गांव आने की खबर लगी तो षड़यंत्र रचकर उन्हें मारने के लिए मुखबिरों को भेजा। कॉमरेड सुरेश दुश्मन की गोली से शहीद हो गए।

कॉमरेड सुरेश के साथ ही गांव की कॉमरेड बारसा लक्ष्मी को मार डाला। वह 18 वर्षीय युवती केएएमएस की सदस्या थीं। पुलिस वालों ने पीएलजीए की ड्रेस पहनाकर उनको भी नक्सलवादी घोषित कर दिया।

कॉमरेड मनोज (मुचाकी देवाल)

29 जनवरी 2010 के शाम 6.15 बजे रेमावण्ड में ग्रामीणों की बैठक लेते समय मुखबिर की सूचना पर गांव को और घर को घेरकर पुलिसवालों ने हमारे सांगठनिक दस्ते जो निहत्या था, पर हमला करके दस्ता सदस्य कॉमरेड मनोज को गिरफ्तार करके, यातनाएं देकर गोली मार दी। गुप्त सूचनाओं को हासिल करने में नाकाम पुलिस ने मनोज की पाशविक ढंग से हत्या की। इसके पूर्व 11 दिसंबर 2009 को तोतेर गांव के आदिवासी किसान युवक सीताराम को घर से उठा ले जाकर वर्दी पहनाकर गोली मार दी गयी थी। बाद में वयानार एलजीएस डिप्यूटी कमांडर को मुठभेड़ में मार गिराने का पुलिस ने झूठा दावा करते हुए अखबारों में बयान जारी किया था। इस घटना की मुखबिरी करने वाले को पीएलजीए ने खतम कर दिया था।

23 वर्षीय कॉमरेड मनोज (मुचाकी देवाल) दंतेवाड़ा जिले के किष्टारम एरिया के संघर्ष का प्रमुख केंद्र पालोड गांव में एक गरीब परिवार में पैदा हुए थे। मुचाकी जोगा एवं मूके दंपत्ति की दो संतानों में देवाल बड़ा था। बचपन में ही उनके सिर पर से मां का साया छिन गया था। अत्यंत गरीब परिवार का होने के कारण देवाल का बचपन हंसी-खुशी से नहीं गुजरा। परिवार की गाड़ी खींचने में बाप दूसरे के यहां नौकरी (खेती काम) करते थे। घर की साफ-सफाई से लेकर पानी लाना, खाना बनाना, बर्तन मांजने तक तमाम घरेलू कार्य करते हुए देवाल आदिवासी

बालक संगठन में सक्रिय भूमिका निभाता था। गांव में दस्ता के डेरा डालते ही देवाल हाजिर हो जाता था। थोड़ा बड़ा होने के बाद मिलिशिया में शामिल ह ुआ था। अगस्त 2007 में बतौर पूर्णकालिक कार्यकर्ता भर्ती हो गए। शहीद कॉमरेड राजू (आयतू कुंजाम) की संघर्ष-विरासत को आत्मसात करने वाले देवाल, पार्टी के द्वारा लिए गए उसके तबादले के निर्णय पर बिना किसी हिचकिचाहट के तुरंत अमल करते हुए अक्टूबर 2008 में पूर्व बस्तर पहुंच गए थे।

पीएल-18 में कुछ दिन काम करने के बाद केशकाल इलाके में कार्यरत पीएल-17 में अपनी छापामार सैनिक जिंदगी को आगे बढ़ाया। देवाल तब तक मनोज बन गया था। कॉमरेड मनोज ने तब से लेकर आखिरी सांस तक जनयुद्ध में एक जांबाज योद्धा की तरह काम किया। नवंबर 2008 में छग विध ानसभा चुनावों के दौरान बूबीट्रैप विस्फोट की दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हुआ था। इसमें मनोज के दांत टूट गए थे। छापामार डाक्टरों के द्वारा किये गए इलाज से स्वस्थ होने के तुरंत बाद मनोज फिर से लड़ाई के मोर्चे पर खड़े हो गए। जुलाई 2009 में पूर्व बस्तर डिवीजनल कमेटी ने तीन सदस्यीय एक सांगठनिक दस्ते का गठन किया था, जिसमें मनोज भी एक थे। डीवीसी के द्वारा सौंपी गई नई जिम्मेदारी को मनोज ने सहर्ष स्वीकार किया। उसी जिम्मेदारी को पूरा करने के क्रम में 29 जनवरी को रेमावण्ड में कॉमरेड मनोज पुलिस की गोली से शहीए हो गए।

फासीवादी सलवा जुडूम को मात देने वाले मनोज की माई माटी पालोड पर सैकड़ों की संख्या में कोबरा, एसटीएफ, कोया कमांडों, एसपीओ, सीआरपीएफ एवं स्थानीय पुलिस ने कई बार हमला करके पूरे गांव को जलाकर राख कर दिया था। इसके बावजूद पालोड की क्रांतिकारी जनता जनयुद्ध की राह में आगे बढ़ रही है। कॉमरेड मनोज ने अपनी जान न्यौछावर करके पालोड की संघर्ष परंपरा को ऊंचा उठाए रखा।

आइए, पुलिस दमन के विरोध में, अवैध गिरफ्तारियों-मुठभेड़ों में हत्याओं व अत्याचारों के विरोध में आवाज बुलंद करें। संगठित ताकत के साथ दुश्मन के खिलाफ संघर्ष को तेज करें।

कॉमरेड सतरो

पूर्व बस्तर डिवीजन के गांव कोडोड के एक गरीब आदिवासी परिवार में कॉमरेड सतरो ने जन्म लिया था। जब वह जंगल में किसी काम से गई हुई थीं तो उनको जहरीले सांप ने डस लिया, जिस कारण कॉमरेड सतरो शहीद हो गई।

20 वर्षीय नौजवान कॉमरेड सतरो ने 6वीं कक्षा तक पढ़ाई की थी। गरीबी के कारण आगे की पढ़ाई जारी नहीं रख पाई। 2008 में वह केएएमएस की सदस्या बनीं। अपनी शहादत के समय वह गांव के केएएमएस की कमेटी में सदस्या थीं। कमेटी में रहते हुए उन्होंने अपने इलाके में चले हर राजनीतिक-आर्थिक संघर्ष में भाग लिया। जनता को संगठित कर उनमें शामिल किया। पार्टी द्वारा समय-समय पर दिये जाने वाले आव्हानों का वह प्रभावी ढंग से प्रचार करती थीं।

कॉमरेड मड़काम गंगाल

दक्षिण बस्तर डिवीजन (दंतेवाड़ा जिला) की तहसील किस्टारम के गांव डोकपाड़ में एक घर कॉमरेड गंगाल का है। पार्टी के कर्मठ कार्यकर्ता और दस्ता सदस्य कॉमरेड गंगाल जनवरी 2006 में आंध्र की खूंखार पुलिस ग्रेहाउंड्स के साथ लड़ते हुए शहीद हुए। यह मुठभेड़ गांव जाटापाड़ के जंगल में हुई थी।

अपनी शहादत के समय 28 साल के रहे कॉमरेड गंगा का जन्म वैसे तो सुकमा ब्लॉक के ईत्तागुडेम में हुआ था। लेकिन घोर गरीबी के कारण उनको अपना गांव छोड़ना पड़ा। बचपन में ही उनको डोकपाड़ के मुखिया परिवार में नौकरी पर लगना पड़ा, क्योंकि उनकी अपनी कोई जमीन नहीं थी। जब वह जवान हुए तो उन्होंने आदिवासी रीति-रीवाजों से अपनी पसंद की एक युवती से शादी की। उनकी एक लड़की है। पार्टी के नेतृत्व में चले भूमि संघर्ष से उनको जमीन प्राप्त हुई और उनको शोषण से छुटकारा मिला।

1993 से उन्होंने डीएकेएमएस में काम करना शुरू किया। 1995 में वह अपने गांव की इकाई के अध्यक्ष चुने गए थे। अपनी जिम्मेदारी को दिलो-जान से निभाते हुए उन्होंने अपनी राजनीतिक चेतना को बढ़ाया। इस प्रकार पार्टी ने 1996 में उनको पार्टी सदस्यता मंजूर की।

बढ़ते जनयुद्ध और दमन से प्रभावित होकर उन्होंने 2004 में दस्ता सदस्य बनने का फैसला किया। पीएलजीए को मजबूत करने की जरूरतों को समझते हुए उन्होंने पार्टी कमेटी के सामने जन सैनिक के रूप में दस्ता सदस्य बनने का प्रस्ताव रखा। पार्टी उनकी राजनीतिक चेतना व समझदारी से परिचित थी। जनवरी 2004 में उनको दस्ते में भर्ती कर लिया गया। गंगाल ने दस्ता में शामिल होने से पहले अपनी पत्नी, लड़की व मां-बाप को बैठाकर समझाया था।

दस्ता में भर्ती होने के बाद उन्होंने प्राथमिक शिक्षा ग्रहण की और जल्द ही दस्ता के नियम-अनुशासन को समझ लिया। जनता के साथ जिस प्रकार उनका व्यवहार मिलनसार रहता था, उसी प्रकार उन्होंने दस्ता सदस्यों का भी दिल जीत लिया। वह अपनी चेतना के अनुसार पहलकदमी के साथ काम करने वाले कॉमरेड थे।

जनवरी 2006 में जाटापाड़ में हुई मुठभेड़ में कॉमरेड गंगा ने बहादुरी के साथ लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त किया। कॉमरेड गंगा ने पार्टी सदस्य के तौर पर 10 साल और दस्ता सदस्य की हैसियत से दो साल तक काम किया। उन्होंने अपने कामकाज से और जनता की सेवा से अमरता प्राप्त की। उन्होंने भारत की नव जनवादी क्रांति के लिए अपने परिवार का और अपने प्राणों का त्याग किया। कॉमरेड गंगाल के अधूरे सपनों को पूरा करेंगे। उनके नक्शे-कदम पर चलते रहेंगे। *(इस शहीद की जीवनी हमें देर से मिलने के कारण चार साल के विलम्ब के बाद प्रकाशित कर पाए हैं, पाठक हमें क्षमा करें। - सम्पादकमण्डल)* ★

चिंगावरम बारूदी विस्फोट की घटना पर पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का बयान

चिंगावरम हमला कोया कमाण्डो पर हमला था, आम नागरिकों पर नहीं!
आम लोगों की मौत के लिए चिदम्बरम-रमनसिंह गिरोह ही पूरी तरह जिम्मेदार है!!
चिदम्बरम और उसके युद्धोन्मादी गिरोह द्वारा जारी दुष्प्रचार अभियान की निंदा करो!!!

16 मई को दंतेवाड़ा जिले के चिंगावरम के पास हुए एक माओवादी ऐम्बुश के बाद सबसे बड़े युद्ध पिपासु चिदम्बरम का नेतृत्व वाले गृह मंत्रालय ने जहर उगलने वाला बहुत बड़ा दुष्प्रचार अभियान छेड़ दिया। चिदम्बरम और उसके सहयोगी जी.के. पिल्लई ने यहां तक कहा था कि माओवादी केन्द्रीय अर्ध-सैनिक बलों, स्थानीय पुलिस व एसपीओ तथा आम नागरिकों के बीच फर्क नहीं देख पा रहे हैं। इससे उनके विचारधारात्मक व राजनीतिक दिवालिएपन तथा माओवादियों के खिलाफ दुष्प्रचार अभियान के पीछे उनके बुरे मंसूबों को समझा सकता है। इस तरह के सफेद झूठों से वे अपने बर्बर व अन्यायपूर्ण युद्ध को वैधता हासिल नहीं कर सकते।

माओवादी पीएलजीए के इस ऐम्बुश के बाद गृह मंत्रालय ने पहले यह प्रचार किया था कि माओवादियों ने आम नागरिकों को निशाना बनाया। लेकिन जब ये खबरें आने लगी थीं कि मारे गए लोगों में कोया कमाण्डो और एसपीओ की संख्या ही ज्यादा है, उन्होंने अपना स्वर बदलते हुए यह कहना शुरू किया कि एसपीओ भी नागरिक हैं और माओवादियों ने पुलिस वालों और नागरिकों के बीच फर्क नहीं देखा। फासीवादी दिमाग वाले गृहमंत्री ने अपना पुराना राग अलाप दिया कि नक्सलवादियों से निपटने के लिए उसे सीमित आदेश (मैंडेट) प्राप्त है और कैबिनेट कमेटी के सामने उसके पुराने प्रस्ताव को स्वीकृति नहीं मिली है। उसका कहना है कि लोग नक्सलवादियों के खिलाफ सख़्त कार्रवाई चाहते हैं जैसे कि हवाई ताकत का इस्तेमाल और यहां तक कि सेना का प्रयोग। जब यह फासीवादी अपने को प्राप्त तथाकथित सीमित आदेश से ही छत्तीसगढ़ के व्यापक इलाकों में इतनी ज्यादा तबाही मचाने में समर्थ है और सैकड़ों आदिवासियों का कत्लेआम करने व उन पर बर्बरतापूर्ण जुल्म छेड़ने में सक्षम है, तो इसका अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं है कि इसे माओवादियों और देश की गरीबतम जनता के खिलाफ जारी युद्ध में खुली छूट या पूरा आदेश देने से क्या कुछ कर सकता है। यह स्पष्ट है कि अगर चिदम्बरम को वो जैसा चाहे करने की इजाजत होगी तो वह आदिवासी बहुल इलाकों में एक विनाशकारी नस्लकशी को अंजाम देगा, इन्हें कब्रगाहों में तब्दील कर जनता के शवों पर यहां की जमीनें साम्राज्यवादियों और बड़े पूंजीपति घरानों के हवाले कर देगा। अश्चर्य है कि इस मंजे हुए झूठे ने जल्द ही अपने बयान को बदला और कहा कि उसने ऐसा कभी नहीं कहा था कि उसे सीमित आदेश मिला हुआ है, बल्कि उसका यह कहना था कि राज्यों को असीमित आदेश प्राप्त हैं। इस तरह के झूठे व अजीबोगरीब बयानों से उसने अपने आपको भारतीय राजनीति का एक बहुरूपिया साबित किया।

हाल ही में पश्चिम बंगाल और छत्तीसगढ़ में माओवादियों द्वारा पुलिस मुखबिरों को सजा देने की घटनाओं का चिदम्बरम और उसके गिरोह ने आम नागरिकों के खिलाफ हमलों के रूप में गलत चित्रण किया। पहली बात तो यह है कि युद्ध-पिपासु दरिंदों को छोड़कर दूसरा कोई भी इन्सान यह विश्वास नहीं करेगा कि माओवादी ठीक उन्हीं आम लोगों को निशाना बना सकते हैं जिनके हित में उन्होंने हथियार उठाए हैं। यह भी सच है कि इस युद्ध में गरीब एसपीओ, सलवा जुडूम कार्यकर्ता और गरीब पुलिस जवान हताहत हो रहे हैं। और इन मौतों की पूरी जिम्मेदारी खुद सोनिया-मनमोहन-चिदम्बरम गिरोह की है जो इन्हें निस्संदेह बलि के बकरों की तरह इस्तमाल कर रहा है ताकि देश के संसाधनों को अपने आकाओं के पैरों में रखने की घिनौनी मंशा को पूरा किया जा सके।

दंतेवाड़ा के चिंगावरम में हुई 15 आम नागरिकों की दुर्भाग्यपूर्ण मौत के प्रति हम गहरा शोक प्रकट करते हैं। और हम आश्वासन देते हैं कि हम पीड़ितों के परिवारों की यथासंभव सहायता करेंगे और आगामी हमलों में पूरी सावधानी बरतेंगे ताकि आम नागरिकों की मौतों को कम से कम किया जा सके। हम साफ शब्दों में घोषणा करते हैं कि एक भी आम नागरिक मारा जाता है तो हमें अफसोस होता है और हमारी पार्टी पूरी कोशिश करेगी ताकि इस चल रहे युद्ध में गैर-लड़ाकुओं को हताहत होने से बचाया जा सके। हालांकि हमने जानबूझकर ऐसा नहीं किया था, फिर भी हमारी तरफ से गंभीर चूक यह हुई थी कि बस के अंदर आम नागरिकों की उपस्थिति को हम समझ नहीं पाए थे। चूंकि कोया कमाण्डो बस की छत पर कब्जा किए हुए थे, इसलिए यह धोखा हुआ था। केन्द्र का सत्तारूढ़ सोनिया-मनमोहन-चिदम्बरम गिरोह और राज्यों में सत्ता पर काबिज विभिन्न प्रतिक्रियावादी पाटियों को जनता के प्राणों और उनके बुनियादी अधिकारों के प्रति जरा भी चिंता नहीं होती। ऑपरेशन ग्रीन हंट शुरू होने के बाद पिछले दस महीनों में देश भर में 250 से ज्यादा निर्दोष व निहत्थे लोगों और पकड़े जा चुके माओवादी क्रांतिकारियों की निर्मम हत्या के लिए यही प्रतिक्रियावादी जिम्मेदार हैं। माओवादी गुरिल्लों के हमलों से अपने आपको बचाने के लिए अर्ध-सैनिकों, पुलिस और एसपीओ द्वारा आम नागरिकों को मानव कवच के रूप में इस्तेमाल करने की घिनौनी कोशिशों का हम विरोध करते हैं। चिंगावरम की इस घटना में बदनाम और गैर-कानूनी कोया कमाण्डों ने, जो एक गांव

(कुटरेम) में आतंक का तांडव मचाकर (तीन निहत्थे आदिवासियों की हत्या और कई युवतियों के साथ सामूहिक बलात्कार कर) लौट रहे थे , बस के ड्राइवर और अन्य मुसाफिरों के विरोध की जरा भी परवाह किए बगैर बस में चढ़ बैठे थे और इस तरह उन्होंने आम नागरिकों की जानों को खतरे में डाला था। हम फिर एक बार जनता से अपील करते हैं कि वह उन वाहनों में सफर न करे जिनमें भाड़े के सशस्त्र बल बैठे हुए हों। निजी वाहनों के मालिकों से अपील है कि वे इन वर्दीधारी सशस्त्र गुण्डों के लिए अपने वाहन न दें।

हम सभी जनवादी सोच वाले संगठनों व शख़्सों और समूची जनता का आह्वान करते हैं कि वे उन परिस्थितियों को समझें जिसमें आम नागरिकों की मौत हुई थी। हम आपको आश्वासन देते हैं कि अर्ध-सैनिक बलों, कमाण्डो बलों, स्थानीय पुलिस बलों, एसपीओ और विभिन्न संसदीय पार्टियों के नीति-निर्धारकों को निशाना बनाते हुए हमले करते समय भविष्य में हम ज्यादा सावधानी बरतेंगे और पूरी कोशिश करेंगे कि आम नागरिकों को नुकसान न हो। क्रांति के शुभ-चिंतकों और जन-पक्षधर संगठनों व बुद्धिजीवियों से अपील करते हैं कि वे प्रतिक्रियावादी शासकों द्वारा छेड़े जाने वाले दुष्प्रचार अभियान से प्रभावित न हों क्योंकि वे माओवादियों के द्वारा गैर-इरादतन की गई हर गलती का भी फायदा उठाने की कोशिश करते हैं ताकि क्रांतिकारी आंदोलन को बदनाम किया जा सके व नीचा दिखाया जा सके। जबरिया भूमि-अधिग्रहण, आदिवासियों व गरीब किसानों का विस्थापन, जनता के खिलाफ जारी बर्बर राजकीय आतंकवादी व राज्य-प्रायोजित आतंकवादी हमले, बुनियादी मानवाधिकारों का हनन, भारतीय धरातल के बड़े-बड़े भूखण्ड साम्राज्यवादी आकाओं और दलाल पूंजीपति घरानों के हवाले करने की शासकों की साजिश, और इस तरह ग्रामीण इलाकों में उभर रही नई क्रांतिकारी जन सत्ता के अंगों को खत्म करने की साजिश... आदि वास्तविक मुद्दों को धुंधलाने की शासक वर्गों की घिनौनी करतूतों से हमें कतई भ्रमित नहीं होना चाहिए।

आजाद
प्रवक्ता
केन्द्रीय कमेटी
भाकपा (माओवादी)

19 मई 2010

एक गांव पर पुलिसिया हमले का मतलब!

पुलिस, एसपीओ और अर्ध-सैनिक बलों द्वारा पूसबाका और उसके आसपास के गांवों में पर किए कए हमलों के दौरान लूटी व तबाह की गई जनता की संपत्ति का हिसाब यहां नीचे दिया जा रहा है। यह एक छोटा सा उदाहरण है कि ऑपरेशन ग्रीन हंट का मतलब एक गांव की जनता के लिए क्या होता है। देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए माओवादियों से खतरा है, यह कहना है चिदम्बरम और उसके सहयोगियों का। लेकिन कथित रूप से इस 'खतरे' से निपटने के लक्ष्य से संचालित ऑपरेशन ग्रीन हंट से जनता को क्या 'फायदा' हो रहा है - निम्नांकित आंकड़े खुद बयान कर रहे हैं।

सामान	पूसबाका	मोरोटबाकी	पुजारी कांकेर	पोलेमपल्ली	मुकरम	कुल
चावल	130		10			140 कि.ग्र.
मुर्गे	48	13	31		15	107
साड़ियां	123					123
पैसा	19,780		12,200			31,980
बर्तन	45	13		10		68
किरोसिन	10					10 लीटर
कबूतर					7	7
खाद्य तेल				92		92 लीटर
कंबल				2		2
तिल				3		3 किग्रा.
अलमारी				1		1 ध्वस्त
मोटरसाइकिल	1					1 ध्वस्त

जोरदार ढंग से मनाई गई
8 मार्च - अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की सौंवीं वर्षगांठ!

8 मार्च को 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' के रूप में मनाते हुए ठीक 100 साल पूरे हुए हैं। 1910 में कोपनहेगेन में आयोजित दूसरी कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के सम्मेलन में सर्वहारा महिला नेत्री कॉमरेड क्लारा जेटकिन ने यह प्रस्ताव रखा था कि 8 मार्च को 'अंतरराष्ट्रीय महिला संघर्ष दिवस' के रूप में मनाया जाए, जिसका सम्मेलन ने अनुमोदन किया था। तब से लेकर दुनिया भर में सभी लड़ाकू संगठन हर साल इस दिन को महिला मुक्ति के लिए जारी संघर्ष को दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ाने का संकल्प लेने के दिन के रूप में मनाते आ रहे हैं। 100 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में इस साल 8 मार्च की शत वार्षिकी को बड़े ही लड़ाकू संकल्प के साथ मनाने का क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन की दण्डकारण्य जोनल कमेटी ने आह्वान किया था। इस आह्वान को पाकर दण्डकारण्य के हर डिवीजन में बड़े पैमाने पर सभाओं और सम्मेलनों का दौर चला। हर तरफ पर्चों, पोस्टरों और बैनरों के जरिए बड़े पैमाने पर प्रचार किया गया। महिला आंदोलन की नेत्रियां क्लारा जेटकिन और जानकी (अनूराधा) की जीवनियों को पुस्तिकाओं के रूप में प्रकाशित कर व्यापक पैमाने पर बांटा गया।

दक्षिण बस्तर डिवीजन के एक गांव में 8 मार्च

पश्चिम बस्तर डिवीजन - केएएमएस की सदस्यों की बैठकों में 8 मार्च की सौवीं वर्षगांठ के बारे में प्रचार किया गया। केएएमएस की सदस्यों ने इस राजनीतिक कार्यक्रम के बारे में जनता के बीच खूब प्रचार किया। इसके अलावा प्रचार दलों ने भी गांवों में जाकर प्रचार किया। डिवीजन के चार इलाकों में कार्यशालाओं का भी आयोजन किया गया। इसके अलावा सीएनएम के कार्यकर्ताओं ने भी इस आयोजन को लेकर महिलाओं की समस्याओं पर नाटक और गीत तैयार किए जिससे लोगों में प्रचार में काफी मदद मिली।

इसके अलावा पश्चिम बस्तर डिवीजन के गंगलूर इलाके में महिला शहीदों की स्मृति में 40 फुट के एक भारी स्मारक का निर्माण किया गया। इस स्मारक का निर्माण 10 जनताना सरकारों की अगुवाई में बारी-बारी से जनता ने श्रमदान करते हुए किया। सैकड़ों लोगों की करीब दो महीनों की मेहनत से यह स्मारक बन पाया है। कुछ तकनीकी समस्या के कारण बीच में एक बार स्मारक गिर जाने से निर्माण में कुछ लोग घायल भी हुए थे, फिर भी लोगों ने दुगुने संकल्प के साथ उसे पूरा किया।

जब दुश्मन एक तरफ ऑपरेशन ग्रीन हंट के नाम से बड़े पैमाने पर हमला छेड़कर नरसंहार किए जा रहा है, ऐसे एक भयानक माहौल के बीचोबीच ही यह स्मारक उस जगह पर बना है जहां से दुश्मन का कैम्प महज दो घण्टे की दूरी पर है। इस स्मारक के पास आयोजित 8 मार्च की सभा में भाग लेने के लिए गंगलूर और भैरमगढ़ इलाके के 150 गांवों से 15 हजार से ज्यादा लोगों ने भाग लिया। इसमें भाग लेने के लिए वे इतने दूर-दूर से आए थे कि उन्हें दो दिन पैदल सफर करना पड़ा था। इस सभा को सफलता दिलाने के लिए करीब 2 से 3 हजार जन मिलिशिया ने कई वृत्तों में पहरेदारी और ऐम्बुश की व्यवस्था कर रखी थी ताकि सुरक्षा का पुख़्ता बंदोबस्त हो सके।

8 मार्च से एक सप्ताह पहले से सभा स्थल पर तैयारियों का सिलसिला शुरू हुआ था जिसकी जिम्मेदारी आसपास के गांवों की जनता ने ले ली थी। कई बैनरों, तोरणों और झंडों से तथा शहीदों की तस्वीरों से पूरी जगह को सजाया गया था। 8 मार्च की सुबह के 9 बजे विभिन्न इलाकों से आए 18 हजार से ज्यादा लोगों ने जोरदार रैली निकाली। भरी दोपहर की तेज धूप की परवाह किए बिना लोगों ने, खासकर महिलाओं ने करीब दो घण्टे तक गगनचुंभी नारों और क्रांतिकारी गीतों से इस जुलूस को सफल बनाया। सीएनएम की सांस्कृतिक टीमों ने इस रैली में अपनी उपस्थिति दी। कई कतारों में खड़े लोगों को संबोधित करते हुए डिवीजन कमाण्ड के एक कॉमरेड ने होने वाले कार्यक्रम की घोषणा की।

झण्डा फहराने से पहले महिला सीएनएम टीम ने 8 मार्च का गीत पेश किया। बाद में केएएमएस की डिवीजन अध्यक्ष कॉमरेड जयमती ने वियुक्का झण्डा फहरा दिया। इसके साथ ही 'नारी मुक्ति झण्डा हम फहराएंगे' का गीत हर तरफ गूंज उठा। इस कार्यक्रम के बाद महिला शहीदों की स्मृति में निर्मित स्मारक का अनावरण शहीद कॉमरेड करुणा की मां ने किया जिनकी मौत डौला रेड के दौरान 2005 में हुई थी। बाद में कॉमरेड जयमती ने सभा को संबोधित करते हुए पश्चिम बस्तर की पहली महिला शहीद कॉमरेड कुरसम राजक्का से लेकर अभी

पश्चिम बस्तर डिवीजन के गंगलूर इलाके में महिला दिवस

तक शहीद हुई तमाम वीर नारियों की कुरबानियों पर रोशनी डाली। सभा की अध्यक्षता कॉमरेड सन्नी ने की जो केएएमएस की डिवीजनल कमेटी की सदस्या हैं। बाद में सभा को कॉमरेड ज्योति ने संबोधित किया जिसमें उन्होंने बताया कि किन परिस्थितियों में यह सभा हो रही है। बाद में पार्टी के महिला विभाग की जिम्मेवार कॉमरेड नर्मदा ने मुख्य वक्ता के रूप में सभा को संबोधित किया। सबसे पहले उन्होंने सभा में उपस्थित हुए सभी लोगों का क्रांतिकारी अभिवादन किया। उन्होंने खासतौर पर 8 मार्च के इतिहास और उसकी संघर्षशील विरासत पर रोशनी डाली। उसके बाद कॉमरेड नर्मदा ने पिछले 30 सालों से जारी दण्डकारण्य के महिला संघर्ष के इतिहास को रेखांकित करते हुए उसके प्रमुख पहलुओं के बारे में बताया। दुनिया के महिला आंदोलन का उन्होंने विवरण पेश किया। बाद में पार्टी की डिवीजनल कमेटी सचिव कॉमरेड माधवी ने अपनी बात रखी। उन्होंने पिछले 30 वर्षों में दण्डकारण्य में महिलाओं ने अपने संघर्षों से क्या-क्या बदलाव लाए, इस पर रोशनी डाली। गांवों में मुखियाओं के शोषण से लेकर जल-जंगल-जमीन पर अधिकार के लिए आदिवासी महिलाओं ने क्या-क्या संघर्ष किए, इस पर उन्होंने विस्तार से बात रखी। बाद में पीएलजीए की तरफ से कम्पनी कमाण्डर वसंत ने अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि आज दण्डकारण्य की महिलाओं को एलटीटीई की महिला योद्धाओं का अनुसरण करना चाहिए जिन्होंने अपने राष्ट्र की मुक्ति के लिए सिंहली अंधराष्ट्रवादियों के साथ आखिर तक समझौताहीन संघर्ष किया था। गंगलूर एसी सचिव कॉमरेड गोपि ने कहा कि महिलाओं को संघर्ष के रास्ते से भटकाने के लिए सरकारें दमन के साथ-साथ सुधारों को एक हथियार के बतौर ला रही हैं और इससे सावधान रहना चाहिए।

8 मार्च के इस मौके पर सभा में कुछ किताबों का विमोचन भी किया गया। दण्डकारण्य की महिला शहीदों की किताब का कॉमरेड जैमति ने, 8 मार्च के इतिहास की किताब का कॉमरेड वसंती ने, कॉमरेड क्लारा जेटकिन के इतिहास की किताब का कॉमरेड बूति ने, एलटीटीई महिला गुरिल्लों के इतिहास वाली किताब का कॉमरेड सन्नी ने, जेल कॉमरेडों के परिचय वाली किताब का कॉमरेड मंगली और दण्डकारण्य महिला आंदोलन के इतिहास का कॉमरेड ज्योती ने विमोचन किया। सभी ने विमोचन के दौरान संक्षिप्त परिचय भी दिया।

इस तरह पहले दिन का कार्यक्रम पूरा हुआ। और दूसरे दिन का कार्यक्रम सुबह 7 बजे शुरू हुआ जब महिलाओं में तीर-धनुष की प्रतिस्पर्धा आयोजित की गई। इस स्पर्धा में जीतने वाली विभिन्न महिलाओं को इनाम के रूप में चाकू और हंसिया जैसे परंपरागत हथियार दिए गए। इस तरह महिलाओं के बीच यह संदेश ले जाने की कोशिश की गई कि आत्मरक्षा के लिए हर महिला को किसी न किसी परंपरागत हथियार पकड़ना जरूरी है। सलवा जुडूम के बाद अब ऑपरेशन ग्रीन अभियान आया है जिसमें महिलाओं पर बलात्कार को एक हथियार के रूप में सरकारी सशस्त्र बल इस्तेमाल कर रहे हैं। यह कार्यक्रम करीब तीन घण्टों तक चलता रहा। उसके बाद शहीदों के परिवारों को मंच पर बुलाया गया था। कुल 121 शहीद परिवार मंच पर आए थे। उसमें सभी लोगों ने अपने बेटों और बेटियों की कुरबानियों के बारे में बात रखी। शहीद वर्गेश जोकि दामनजोड़ी रेड में शहीद हुए थे, की पत्नी ने अपने पति के आदर्शपूर्ण जीवन के बारे में करीब 30 मिनट तक बात रखी। उन्होंने एक तरफ आंसुओं को पोंछते हुए ही दूसरी तरफ यह कहा कि वह भी शहीद वर्गेश के ही रास्ते पर चलेगी।

इस दो-दिनी सम्मेलन के मौके पर जन-डॉक्टरों ने वहां एक अस्थाई अस्पताल भी खोल दिया ताकि दूर-दूर से आने वाले मरीजों का इलाज भी किया जा सके। इसमें कुल 15 महिला-पुरुष डॉक्टरों ने अपनी सेवाएं दीं। उन्होंने पहले दिन कुल 325 लोगों का इलाज किया और दूसरे दिन करीब 35 लोगों को अपनी सेवाएं दीं। सभा के सुचारू संचालन के लिए लाउड स्पीकरों और जेनरेटर का बंदोबस्त किया गया और कुछ

(शेष पेज 47 में...)

दरभा डिवीजन के एक गांव में 8 मार्च पर महिलाओं का सेमिनार

पार्टी स्थापना की पांचवीं वर्षगांठ जोर शोर से मना!

दक्षिण बस्तर डिवीजन के सभी इलाकों में पार्टी स्थापना दिवस जोर शोर से मनाया गया। अलग-अलग इलाकों में कम से कम 15 जगहों पर आमसभाएं की गईं और रैलियां निकाली गईं। आमसभाओं में 16 हजार से ज्यादा महिलाओं और 21 हजार से ज्यादा पुरुषों ने भाग लिया। इसी तरह दोरनापाल, जेगोरगोंडा, सुकमा, दंतेवाड़ा, बासागुड़ा, आवापल्ली, उसूर, पामेड़, किस्टारम और गोलापल्ली की सड़कों पर पोस्टर व बैनर लगाकर प्रचार किया गया।

इन रैलियों में दुश्मन द्वारा शुरू किये गए भारी सैनिक हमले के खिलाफ लड़ने और जनताना सरकार को बचाने के लिए जनता से अपील की गई। जनता ने जोशोखरोश के साथ सभाओं में भाग ले वक्ताओं के वक्तव्यों को सुना।

केरलापाल एरिया में 21 सितंबर - पार्टी स्थापना-दिवस को जोर शोर के साथ मनाया गया। गांव-गांव में हुई सभाओं में ढाई हजार से ज्यादा महिलाओं और दो हजार से ज्यादा पुरुषों ने भाग लिया। दर्जनों बैनरों और पोस्टरों के साथ प्रचार किया गया।

गढ़चिरोली डिवीजन में पेरमिली एलओएस एरिया के अंतर्गत कई जगहों पर पार्टी स्थापना दिवस मनाया गया। एक आम सभा का आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ों की संख्या में जनता शामिल हुई। एरिया कमेटी सदस्य, डीवीसीएम समेत कई गांव स्तर के नेताओं ने पार्टी स्थापना दिवस के अवसर पर जनता को संबोधित किया।

अहेरी एरिया में 21 सितंबर के अवसर पर दो प्रचार टीम बनाकर प्रचार किया गया। तीन जगहों पर आमसभाओं का आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ों जनता शामिल हुई।

पश्चिम बस्तर डिवीजन के भैरमगढ़ एरिया के गांव-गांव में 21 सितंबर 2009 को भाकपा (माओवादी) का स्थापना दिवस मनाया गया। डीएकेएमएस, केएएमएस और सीएनएम की टीमों ने गांव-गांव में इस संबंध में प्रचार किया और जनता को पार्टी द्वारा चलाए जा रहे जनयुद्ध के बारे में विस्तार से बताया। जन संगठनों से टीम बनाकर प्रचार अभियान चलाया गया। कई गांवों व स्कूलों पर दीवारी लेखन किया गया।

पूरे एरिया में एक दर्जन जगहों पर आम सभाओं का आयोजन किया गया। इन सभाओं में हजारों की तादाद में महिला-पुरुषों और बच्चों व बुजुर्गों ने भाग लिया। जनताना सरकार के प्रतिनिधियों और जन संगठन के नेताओं ने पार्टी के नेतृत्व में देश भर में बढ़ रहे जनयुद्ध के बारे में विस्तार से बात रखी। पश्चिम बंगल के लालगढ़ में उठे जन ज्वार पर कई वक्ताओं ने अपनी बात रखी और उससे संबंधित एक डाक्युमेंटरी फिल्म भी जनता में जगह-जगह दिखाई गई। आमसभाओं में जनता अपने पारंपरिक हथियारों से लैस होकर पहुंची थी।

लालगढ की जनता के समर्थन में...

दक्षिण बस्तर डिवीजन के केरलापाल एरिया में अक्टूबर महीने में लालगढ़ की जनता पर जारी दमन के खिलाफ और लालगढ़ की लड़ाकू जनता के समर्थन में आमसभाओं का अयोजन किया गया जिसमें लगभग 7 हजार महिला-पुरुषों ने भाग लिया। ★

जन-प्रतिरोध के शोलों से मिजो आतंकियों के दिलों में तीन साल मची रही हड़कंप!

दक्षिण बस्तर डिवीजन के कोंटा इलाके के बंडा बेस कैंप में तीन साल से मिजो के आतंकी बलों ने डेरा डाला था। जनता के जायज आंदोलन को खत्म करने के इरादे से घमंड में चूर होकर आए भाड़े की मिजो बटालियन को जनता ने कभी भी चैन की सांसें नहीं लेने दीं। प्रतिरोध के बल पर उनके दिलों में हड़कंप मचाए रखी।

जनवरी 2006 में कोंटा विकासखंड में लुटेरों के दलाल महेंद्र कर्मा के नेतृत्व में फासीवादी सलवा जुडूम दमन अभियान चलाकर इस इलाके में आतंक मचाया गया था। जहां 100 से ज्यादा इस एरिया की जनता को मौत के घाट उतार दिया गया, वहीं दर्जनों लोगों को गोलियों से घायल कर अपाहिज बनाकर छोड़ दिया गया है। 20 से ज्यादा महिलाओं पर सामूहिक अत्याचार किए। बैलाडिला पहाड़ों से बहती नदी को खून की नदी बना डाला गया। कइयों को इसमें मारकर फेंक दिया गया। सैकड़ों घरों को जला डाला व उनकी धन और पशु संपत्तियों को लूट लिया गया है। जनता को अपने घरबार, जल-जंगल-जमीन को छोड़कर दूसरे राज्यों की तरफ पलायन करना पड़ा था। इन सभी आतंकी हमलों को बंडा बैस कैंप में तैनात मिजो बलों ने पुलिस व एसपीओ गुंडों के साथ मिलकर अंजाम दिया।

मिजो आंतकियों का जनता ने तीन साल तक डटकर मुकाबला किया। जन-प्रतिरोध के साथ-साथ इस इलाके में पीएलजीए के दो जबर्दस्त हमलों के बाद 18 जनवरी 2009 को मिजो आतंकियों को कैंप खाली करना पड़ा। इस कारण से इलाके की जनता ने राहत की सांस ली। 18 जनवरी के दिन जैसे ही मिजो आतंकी कैंप छोड़ कर गए तो जनता का पूरा गुस्सा कैंप की बिल्डिंग पर फूट पड़ा। बिल्डिंग की एक-एक ईंट को उखाड़ फेंका। पूरी तरह से उसे खाक में मिलाकर ही जनता ने चैन की सांस ली। इलाके से आतंकियों के जाने के बाद जनता में उत्साह का माहौल बढ़ गया। ★

आपरेशन ग्रीनहंट के विरोध में बंद रहा दंतेवाड़ा जिला

आपरेशन ग्रीनहंट के खिलाफ भाकपा (माओवादी) की दरभा डिवीजनल कमेटी द्वारा दंतेवाड़ा जिला बंद का आव्हान किया जो पूरी तरह सफल रहा। बंद के दौरान मांगें रखी गई थीं - ग्रीनहंट के नाम से हो रहे बेगुनाह आदिवासियों के नरसंहारों को बंद किया जाए। आदिवासियों के हत्यारे आईजी लांगकुमेर, डीआईजी कल्लूरी को सजा दो। निर्दोष जनता को थानों में बंद कर यातनाएं देना बंद करो, उनको रिहा करो। बस्तर से अर्ध सैनिक बलों को हटाया जाए।

जनविरोधी केंद्र व राज्य सरकारों ने अपने ही देश की गरीब आदिवासी जनता के खिलाफ ग्रीनहंट के नाम से युद्ध छेड़ दिया है। विशेषकर दंतेवाड़ा व बीजापुर जिलों में सितंबर माह से इसका कहर जारी है। सितंबर से दिसंबर तक तकरीबन 80 आम ग्रामीणों की हत्या हो चुकी थी। 2 साल के बच्चे से लेकर 80 साल के बुजुर्ग तक को पुलिस व अर्धसैनिक बलों के आतंकियों ने नहीं बख्शा। गोमपाड़, सिंगनमड़गू, टेट्टेमडगु, नांगलगूडेम आदि गांवों में ग्रीनहंट आपरेशन के दौरान जो आतंक का तांडव मचाया गया वो सबके सामने है।

विभिन्न समाचार पत्रों के अनुसार छिंदगढ़, सुकमा, तोंगपाल, गादीरास आदि मार्गों पर पर्चे फैंके गए जिसमें पुलिस द्वारा की जा रही ज्यादतियों का उल्लेख किया गया था। बंद के दौरान छिंदगढ़ तहसील कार्यालय में विस्फोट किया गया व आग लगाई गई। तहसील कार्यालय के कागजात जलकर खाक हो गए हैं। पेड़ों को काटकर मार्ग अवरुद्ध कर दिए गए। कई जगहों से सड़कों को उखाड़ दिया गया। दंतेवाड़ा जिले के साथ-साथ बस्तर जिला के दरभा ब्लॉक में भी बंद रहा। सभी वर्गों की जनता से बंद को समर्थन मिला।

पामेड़ एरिया के गांव-गांव में मिनपा शहीदों को दी गई श्रद्धांजली!

दक्षिण बस्तर डिवीजन के पामेड एरिया में पंचायत स्तर पर सभाओं का आयोजन किया गया। मिनपा के शानदार हमले में शहीद हुए जांबाज योद्धा व जनता के सच्चे सेवक कामरेड्स चंदू, बाबू, दसरू और रिंकू की याद में की गई सभाओं में हजारों जनता शामिल हुई।

वक्ताओं ने जनताना सरकारों की रक्षा व लोकसभा के झूठे चुनावों का बहिष्कार करते शहीद हुए लाल योद्धाओं को सपने पूरे करने का जनता से आव्हान किया और कहा कि बड़े पैमाने पर जनयुद्ध में शामिल होकर ही हम अपनी जनताना सरकारों की रक्षा कर सकते हैं और उन्हें मजबूत कर सकते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस मनाया

दक्षिण बस्तर डिवीजन की सभी एरिया कमेटियों के अंतर्गत 1 मई (2009) को जोश-खरोश के साथ मजदूर दिवस मनाया गया। डीएकेएमएस के नेतृत्व में गांव-गांव में सभाओं का आयोजन किया गया। सभाओं में लगभग साढ़े बारह हजार जनता ने भाग लिया।

आर्थिक संकट के कारण पूरी दुनिया में मजदूरों की लगातार हो रही बदतर स्थितियों के बारे में वक्ताओं ने अपनी बात रखी। वक्ताओं का कहना था कि आर्थिक संकट के कारण कारखानों से मजदूरों को निकाला जा रहा है, जिस कारण से बेरोजगारी बढ़ रही है। जनता सड़कों पर आकर संघर्ष कर रही है। दुनिया के मजदूर आंदोलनों का समर्थन करते हुए मजदूर-किसानों को एकजुट होकर संघर्ष करने का आव्हान किया गया।

ज्ञात रहे कि शिकागो के शहीदों की याद में दुनिया भर में 1 मई को अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस मनाया जाता है। 1886 में अमेरीका के शिकागो शहर में 18 घंटे की बजाय 8 घंटे श्रम दिवस की मांग करने वाले नेताओं को फांसी पर चढ़ा दिया गया था। तभी से मई दिवस मनाया जाता है।

खतरनाक एसपीओ का सफाया

सुरेश नामक एसपीओ दक्षिण बस्तर डिवीजन के बासागुड़ा एरिया के धर्मपुरा गांव का निवासी था। 20 फरवरी 2006 को वह सलवा जुडूम में शामिल हो गया और कुछ दिन बाद वह एसपीओ बन गया था। तबसे जनता पर कहर ढाने की दमनकारी कार्रवाइयों में शामिल होने लगा था। तबसे लगभग तीन साल तक वह लूटपाट, गांवों को जलाना, जनता की पशु संपत्तियों को लूटना, महिलाओं को पकड़कर बलात्कार करना, पुलिस-सीआरपीएफ द्वारा किए जाने वाले हमलों में शामिल होना, उनको रास्ता दिखाना आदि काम करता रहा। बोरूगूड़ेम (लिंगागिरी) गांव पर हमला कर गांव की एक महिला गंटला श्रीदेवी के साथ किये गए सामूहिक बलात्कार में सुरेश भी भागीदार था। बासागुड़ा के आसपास सलवा जुडूम द्वारा की गई लगभग 30 से ज्यादा हत्याओं में से ज्यादातर घटनाओं में सुरेश शामिल रहा।

जब वह ऊसूर इलाका के तिम्मापुर में आया हुआ था तो जन मिलिशिया ने इस जनविरोधी दरिंदे को पकड़ लिया। उसे जन अदालत में पेश किया गया। जनता ने जांच-पड़ताल के बाद उसे मौत की सजा सुनाई। इस मौत से एसपीओ दरिंदों में दहशत फैल गई।

गद्दार व जनविरोधी आनंद का खात्मा

25 मार्च 2010 के रात 9 बजे पीएलजीए ने गड़चिरोली डिवीजन के पूसुकपल्ली के निवासी आनंद का सफाया कर दिया। वह करीब 10 साल पहले पार्टी में अहेरी गुरिल्ला दस्ते का उप-कमाण्डर हुआ करता था। बाद में उसने अपनी कमजोरियों के चलते दुश्मन के सामने समर्पण किया था तथा पार्टी व जनता से गद्दारी कर उसने बड़े नुकसान किये थे।

(शेष पेज 30 में...)

महान भूमकाल की सौवीं वर्षगांठ का सफल आयोजन

"एक और भूमकाल उठाकर ग्रीनहंट को हराएंगे" - जनता का संकल्प

10 फरवरी 2010 को महान भूमकाल विद्रोह के 100 वर्ष पूरे हुए। दंडकारण्य भर में भूमकाल की सौवीं बरसी को क्रांतिकारी परंपरा के साथ मनाया गया। सौवीं बरसी को पूरे सप्ताह भर मनाने का प्रस्ताव दंडकारण्य जनताना सरकार ने किया था। प्रस्ताव के अनुसार गांव-गांव में सभाएं, रैलियां, एरिया जनताना सरकार के नेतृत्व में सेमिनार और बड़ी-बड़ी जनसभाएं सभी डिवीजनों में जोशो-खरोश के साथ आयोजित हुईं। केंद्र व राज्य सरकारों ने सलवा जुडूम की विफलता के बाद माओवादी आंदोलन और जनताना सरकारों का उन्मूलन करने के इरादे से ग्रीनहंट दमन अभियान चलाया हुआ है जो एक देशव्यापी प्रतिक्रांतिकारी अभियान है जिसका लक्ष्य देश भर में क्रांतिकारी आंदोलन का सफाया करना है। इसके खिलाफ दंडकारण्य की क्रांतिकारी जनता ने हजारों की संख्या में भूमकाल सभाओं में शामिल होकर 'जन प्रतिरोध अभियान तेज करेंगे' तथा 'और एक भूमकाल उठाकर ग्रीनहंट को हरा देंगे' के नारे देते हुए सभाओं को सफल किया।

पूर्व बस्तर के वयानार इलाके में निर्मित महान भूमकाल शहीदों का स्मारक

हालांकि भूमकाल यादगार सप्ताह के कुछ ही दिन पहले अर्ध-सैनिक व पुलिसिया आर्तांकियों ने माड़ डिवीजन के इंद्रावती इलाके के ताकिलोड़ गांव में 3 फरवरी को 7 लोगों को और पूर्व बस्तर के ओंगनार गांव में 7 फरवरी को 5 लोगों को मार डाला। और ठीक 10 फरवरी के ही दिन माड़ क्षेत्र के दुमनार में कृषि कार्यकता कामरेड कुमली को बेहद पाशविकता से मार डाला। साथ ही, दुश्मन ने अपने गश्त अभियानों को तेज किया और जनता में आतंक फैलाने की कोशिशें कीं। फिर भी जनता ने सभी कार्यक्रमों में भारी उपस्थिति से इसका जवाब दिया। पूरे दण्डकारण्य में आयोजित विभिन्न किस्म के भूमकाल कार्यक्रमों में कई लाख लोगों ने भाग लिया।

दण्डकारण्य में सभी ग्राम स्तरीय जनताना सरकारों के दायरे में भूमकाल दिवस को जनताना राज्य स्थापना दिवस के रूप में मनाया। सभी सभाओं में दण्डकारण्य जनताना सरकार द्वारा जारी किये गए 'भूमकाल संदेश' को पढ़कर सुनाया गया। वक्ताओं ने जनताना सरकारों को बचाने और महान भूमकाल से प्रेरणा लेकर फिर एक भूमकाल उठाने की जरूरत पर जोर देकर बात रखी। वक्ताओं ने ऑपरेशन ग्रीनहंट को दंडकारण्य की खनिज व वन संपदाओं को विदेशी कंपनियों और बड़े दलाल पूंजीपतियों को सौंपने के लिए चलाया जा रहा दमन अभियान करार दिया और कहा कि यह हमारे अस्तित्व व अस्मिता के लिए खतरा है। इसको हराए बिना हम अपनी रक्षा नहीं कर सकते। लोहंडीगुड़ा, बोधघाट, भांसी, पल्लेमाड़ी, बेसेवेड़ा, सूर्जागढ़ के अलावा नई-नई खदानों को शुरू कर हमें उजाड़ने के लिए ही ग्रीनहंट चलाया जा रहा है। गांवों में हुई सभाओं में भाग लेने वाली हजारों जनता ने महान भूमकाल के शहीद योद्धाओं को श्रद्धांजली देते हुए दो मिनट का मौन रखा।

गांव-गांव में हुई सभाओं के बाद एरिया स्तर पर हुई सभाओं-रैलियों में जनता ने भाग लिया। जनता अपने पारंपरिक हथियारों - तीर-धनुष, बरछी-भाले, कुल्हाड़े-फरसे, भरमार बंदूकों के साथ शामिल

महान भूमकाल की सौवीं वर्षगांठ पर उमड़ पड़ा जनता का सैलाब!

हुई। वहीं एरिया जनताना सरकारों के नेतृत्व में सरकार की अलग-अलग शाखाओं के सेमिनार चले। सेमिनारों में न्याय, रक्षा, विकास, कृषि, शिक्षा-संस्कृति आदि सभी 9 विभागों के कामकाज की समीक्षा की गई। कामकाज में आ रही अड़चनों व उनको दूर करने के तरीकों पर विचार किया गया। यह कार्यक्रम जनताना सरकारों का पहला अनुभव था, जिसका अच्छा प्रभाव पड़ा।

भूमकाल की सौवीं बरसी के मौके पर बहुत सारी जनताना सरकारों के अंतर्गत खेल-कूद की प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं। विजय टीमों को अलग-अलग विभाग के अनुसार इनाम भी बांटे गए।

चेतना नाट्य मंच के कार्यकर्ताओं ने पूरे दंडकारण्य में चलाए गए प्रचार अभियानों, जनता को शामिल करवाने आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कुछ इलाकों में वर्कशाप लगाकर भूमकाल के संदर्भ में नए-नए गीतों, नाटकों की रचना की। सीएनएम की तरफ से भूमकाल की सौवीं बरसी पर एक ऑडियो सीडी भी जारी की गई। सैकड़ों सभाओं में से एक भी ऐसी सभा नहीं थी जिसमें सीएनएम के संस्कृतिक योद्धाओं ने अपने कार्यक्रम कर जनता में जोश न भरा हो। इसके साथ-साथ लोक कलाकारों ने भी पारंपरिक ढोल-नगाड़ों के साथ सभाओं में शिरकत की और अपनी कला का प्रदर्शन किया। हर बड़ी सभा में लोक कलाकारों ने रैलियों के आगे-आगे सिरों पर

जनताना सरकार की स्कूलों में खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन

भूमकाल दिवस की सौवीं वर्षगांठ के आयोजनों के तहत पश्चिम बस्तर डिवीजन की गंगालूर एरिया जनताना सरकार स्तर पर जनताना सरकार स्कूलों के बालक-बालिकाओं की खेल प्रतियोगिता आयोजित की गई। जनता की सुरक्षा व भारी उपस्थिति के बीच दण्डकारण्य में यह अनूठा व अपनी तरह का पहला आयोजन तीन दिनों तक - 27 नवंबर से 29 नवंबर 2009 तक चला। माओवादियों को 'स्कूल भवन गिराने वालों' और 'शिक्षा को रोकने वालों' के रूप में चित्रित कर प्रचारित करने वाले लुटेरों और उन्हीं का पक्ष लेने वाले प्रतिक्रियावादी मीडिया वालों को इसका अंदाजा लगाना भी मुश्किल है।

इससे पहले ग्राम स्तर पर जनताना सरकार द्वारा संचालित स्कूलों में 22 से 25 नवंबर के बीच स्थानीय खेल-कूद प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थीं। उसके बाद चुनी गई टीमों ने एरिया स्तर की खेल-कूद प्रतियोगिता में भाग लिया।

लगभग दो दर्जन स्कूली केंद्रों से सैकड़ों छात्र-छात्राओं व शिक्षकों ने इसमें भाग लिया। कबड्डी, खो-खो, तीरअंदाजी, विभिन्न तरह की दौड़ आदि सामूहिक व एकल मुकाबलों में छात्रों ने अपना जौहर दिखाया। बालक वर्ग की कबड्डी में गुंडादूर स्कूल ने जहां प्रथम स्थान प्राप्त किया वहीं दूसरा स्थान अवनार जनताना सरकार स्कूल की टीम का रहा। खो-खो में प्रथम स्थान की बाजी मारी अवनार स्कूल ने और दूसरे स्थान पर रहा कमकानार। बालिका वर्ग की कबड्डी प्रतियोगिता में प्रथम अवनार और दूसरे स्थान पर रहा कमकानार स्कूल। बालक वर्ग के खो-खो में आवनार ने प्रथम और दूसरा स्थान हासिल किया पुम्बाड़ ने। व्यक्तिगत खेल प्रतियोगिताओं में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले 28 छात्र-छात्राओं सहित सभी टीमों को जनताना सरकार प्रतिनिधियों ने इनाम वितरित किये।

उद्घाटन समारोह में जनताना सरकार स्कूल के एक शिक्षक ने तीर-धनुष व दो तारों वाला जनताना सरकार का झंडा फहराया। उसके बाद छात्रों, शिक्षकों व खेल देखने आई जनता ने मिलकर विधिवत् रूप से इंटरनेशनल गान गाकर खेल समारोह की शुरूआत की। छात्रों व जनता के नारों से वातावरण गूंज उठा - 'बेस पढ़ेमायकाड़ - जनता तुन मुन्ने ओयकाल (अच्छे से पढ़ाई करेंगे - जनता को आगे ले जाएंगे), विज्ञान को पढ़ेंगे-अंधविश्वास को दूर भगाएंगे, जनताना सरकार जिंदाबाद, महान भूमकाल योद्धाओं को लाल सलाम' आदि नारे लगाए गए।

पूरे खेल समारोह की जिम्मेदारी जनताना सरकारों ने उठाई और रक्षा के लिए जन मिलिशिया के कामरेडों ने पूरा सहयोग दिया। जनता के सहयोग व सुरक्षा से जनताना सरकार स्कूलों की यह खेल प्रतियोगिता सफलतापूर्वक संपन्न हुई। साफ जाहिर है कि युद्ध के इस क्षेत्र में जनता का कोई भी कार्यक्रम, यहां तक उनके नाच-गाने और खेल-कूद के कार्यक्रम भी, दुश्मन के हमलों का शिकार बन सकता है। दुश्मन कभी भी कहीं भी हमला कर सकता है और लोगों को मारकर यह घोषणा कर सकता है कि 'हमने माओवादियों के फौजी प्रशिक्षण शिविर को ध्वस्त किया जहां पर कुछ माओवादी मारे गए'। इसीलिए यहां हर गतिविधि के लिए सुरक्षा की व्यवस्था जरूरी हो गई।

इस तरह का आयोजन सरकारी दुष्प्रचार के मुंह पर करारा तमाचा है जो कहता है 'नक्सली आदिवासी बच्चों को शिक्षा से दूर रखना चाहते हैं'। समापन व इनाम वितरण समारोह में जन प्रतिनिधियों ने इस सरकारी दुष्प्रचार का कड़े शब्दों में खंडन किया और आगे भी ऐसे आयोजन और अच्छे से करने की मंशा जताई। लेकिन ग्रीनहंट दमन अभियान जनता के ऐसे आयोजनों में बड़ी बाधा है। वक्ताओं का कहना था कि असल में सरकार ही हमारे बच्चों को शिक्षा से वंचित रख रही है। स्कूलों में सरकारी सशस्त्र बलों का कब्जा और गांवों पर लगातार जारी आतंकी हमलों के कारण ही यह स्थिति निर्मित हो गई है। फिर भी हम कोशिश करेंगे कि जनता के सहयोग से जनताना सरकार के स्कूलों को सुचारू रूप से चलाया जा सके। ★

दरभा डिवीजन के मलिंगेर इलाके में महान भूमकाल की 100वीं वर्षगांठ

पारंपरिक सींगों के मुकट सजाए और गले में बड़े-बड़े ढोल लटाकए, बिगुल बजाते हुए अगुवाई की। उसके बाद हरे रंग की धोतियों और लाल गमछों के साथ सीएनएम के कलाकार नाचते-गाते हुए चले। हजारों की संख्या में कलाकार इन आयोजनों में शामिल हुए। भूमकाल सभाओं में रात भर इनके प्रदर्शन चलते रहे। कई जगहों पर सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं भी आयोजित हुईं व लोक कलाकारों को जनताना सरकारों ने सम्मानित किया।

जनता की अपनी सेना पीएलजीए ने व जनमिलिशिया, कोया भूमकाल मिलिशिया ने इन सभी सभाओं की सुरक्षा की। नहीं तो इतने घोर दमन अभियान में ऐसी सभाएं आयोजित होना लगभग असंभव ही होता।

10 से 16 फरवरी तक पूरे दंडकारण्य में ग्रीनहंट को हराने एक और भूमकाल उठाने के नारे गूंजते रहे। बैनरों-झंडों से हरा-हरा जंगल लाल रंग से रंग गया। कहीं भी जाओ, किसी भी गांव में जाओ कुछ न कुछ कार्यक्रम चलता ही रहा होता था। घोर दमन अभियान के बीच, जब दुश्मन अपनी पाशविक ताकत से सब कुछ तबाह करने पर आमादा है, ऐसे जन आयोजन वास्तव में बड़ी चुनौती होते हैं। लेकिन दंडकारण्य की क्रांतिकारी जनता ने युद्ध में जीना सीख लिया है, ये भूमकाल सभाएं इस बात की पुष्टि करती हैं। आइए, अलग-अलग डिवीजनों से भेजी गईं रिपोर्टों पर सरसरी नजर डालें-

दक्षिण बस्तर डिवीजन के पामेड़ एरिया में 17 फरवरी को एरिया स्तरीय आम सभा का आयोजन किया गया। सुबह के दस बजे पारंपरिक हथियारों व नारों के साथ रैली शुरू हुई। करीब दो घंटे तक सीएनएम और लोक कलाकारों ने अपनी जोशीली प्रस्तुतियां दीं। फिर भाषणों का सिलसिला शुरू हुआ। इस सभा में करीब 6,500 महिला-पुरुषों ने भाग लिया। एरिया सरकार द्वारा उठाए गए विकास कार्यों को सफल करने वाली जनताना सरकारों व व्यक्तियों को भी इस मौके पर सम्मानित किया गया। - जारापल्ली ग्राम जनताना सरकार इस मामले में प्रथम रही जिसे इनाम में भैंस दी गई। वहीं विकास कार्यों में दूसरे स्थान पर रही कोंजेर सरकार को एक बकरी इनाम में दी गई। हमेशा दुश्मन को हैरान-परेशान करने वाले गांव X जनताना सरकार के जन मिलिशिया को पहला इनाम भरमार व Y जन मिलिशिया को पांच तीर-धनुष इनाम में दिये गए। धरमा जनताना सरकार को जंगल बचाने के लिए पहले स्थान पर आने के लिए कुल्हाड़ी और दूसरे स्थान पर आई सरकार को एक फरसा दिया गया। जनताना सरकार स्कूल को अच्छे से चलाने वाली एक ग्राम सरकार को भी सम्मानित किया गया। इसी प्रकार स्वास्थ्य विभाग में प्रथम-द्वितीय स्थानों पर रहने वाली सरकारों को फर्स्ट-एड बॉक्स व दवाईयां प्रदान की गईं। इनाम वितरण समारोह के बाद जनता गाजे-बाजों के साथ नारे लगाते हुए अपने-अपने गांव की और रवाना हुई।

पूर्व बस्तर डिवीजन के कुदुर व वयानार इलाकों में बड़ी जन सभाओं का आयोजन किया गया। जिनमें 5 हजार से ज्यादा जनता ने व सैकड़ों लोक कलाकारों ने भाग लिया। वयानार एरिया में हुई भूमकाल जन सभा में प्रसिद्ध लेखिका अरुंधती राय ने भाग लिया, जो 'आउटलुक' अंग्रेजी पत्रिका के लिए लेख लिखने के सिलसिले में आपरेशन ग्रीनहंट के नाम पर चलाए जा रहे दमन अभियान का जायजा लेने आई थीं।

सभा में लोक कलाकारों ने मनमोहक प्रस्तुतियां दीं। जहां अपने पारंपरिक नाच से लोक कलाकारों ने जनता का मनोरंजन किया वहीं डीके सीएनएम टीम के कलाकारों ने भूमकाल पर

दरभा डिवीजन में महिला मिलिशिया ने लिया संकल्प - ग्रीनहंट को परास्त करेंगे!

पूर्व बस्तर में भूमकाल सभा में लोक कलाकारों का जमावड़ा

करीब आधे घंटे का एक शानदार नाटक प्रस्तुत किया और जनता को बस्तर के संघर्षशील इतिहास से अवगत करवाया। वहां पर रात भर लोग नाचते-गाते रहे। अगले दिन इनाम वितरण समारोह के साथ यह आयोजन समाप्त हुआ। इस प्रकार दमन के बीच यह प्रोग्राम करीब 28 घंटे तक बिना बाधा के चलता रहा। जनताना सरकार ने रात के प्रोग्राम के लिए रोशनी का अच्छा प्रबंध किया हुआ था और आस-पास के दुकानदारों ने भी अपनी दुकानें सजाई हुई थीं। स्वास्थ्य विभाग की तरफ से मेडिकल कैंप भी लगाया गया। इस प्रकार यह एक मेले-मंडई जैसा दृश्य बन गया था। जनता का जोश देखते ही बनता था।

माड़-उत्तर बस्तर डिवीजन - इस डिवीजन के कुत्तुल, इंद्रावती व परतापुर इलाकों में बड़ी-बड़ी जन सभाएं हुईं। सभाओं में 11 हजार से ज्यादा जनता ने भाग लिया।

कुत्तुल एरिया में हुई जन सभा में जनता की भारी उपस्थिति देखी गई। कुत्तुल रोड पर जनता के स्वागत के लिए व भूमकाल के जन वीर नायक गुंडादूर की याद में एक गेट बनाया गया था जिस पर बड़ा बैनर लहरा रहा था। ऊपर जनताना सरकार के झंडे सितारे बनाए हुए थे। दुमनार गांव इस सभा के नजदीक ही है, जहां जनताना सरकार कृषि विभाग की कार्यकर्ता कुमली की हत्या 10 फरवरी को ही एसपीआ और पुलिसिया हत्यारों की एक टीम ने की थी। जनता ने दमन को धता बताते हुए हजारों की संख्या में भाग लिया। जनताना सरकार के स्कूलों के बच्चे नाचते-गाते रैली की अगुवाई कर रहे थे। एरिया सरकार के प्रतिनिधियों और शाखाओं के अध्यक्षों ने सभा को संबोधित किया व अपने-अपने विभाग की उपलब्धियों को गिनाया। एरिया सीएनएम टीम ने एक नाटक के साथ कई गीत पेश किये।

पश्चिम बस्तर डिवीजन के गंगालूर व **उत्तर गड़चिरोली डिवीजन** के कसनसूर, टिप्रागढ़ में भी आम सभाएं हुईं। पता चला है कि उनमें भी हजारों जनता ने भागीदारी की लेकिन विस्तृत रिपोर्ट नहीं मिल पाई है। ✶

(... पेज 41 का शेष)

दुकानें भी खोली गई थीं जिनमें स्थानीय व्यापारियों ने अपने सामान भी लोगों को बेचे थे।

आखिर में कॉमरेड ज्योती ने सभा को सफल बनाने के लिए दिन-रात की पहरेदारी और गश्त करने वाले पीएलजीए के कॉमरेडों और मिलिशिया सदस्यों तथा अन्य तमाम लोगों को धन्यवाद ज्ञापित किया। गौरतलब है कि यह सभा उस इलाके में संपन्न हुई है जहां दुश्मन ने पिछले छह सालों में पहले सलवा जुडूम और अब ऑपरेशन ग्रीन हंट के तहत सबसे बुरे जुल्म और अत्याचार किए थे। और यह वही इलाका है जिसे दुश्मन ने कॉर्पेट सेक्यूरिटी के नाम से हर 7-10 किलोमीटर के दायरे में कई थाने-कैम्प खोल रखे हैं ताकि जनता की हर गतिविधि पर नजर रखी जा सके। इसके बावजूद इसकी नाक के नीचे ही करीब 20 हजार लोगों का यह जमावड़ा दो दिनों तक बना रहा। और दुश्मन को पता भी नहीं था या पता होने पर भी अंदर घुसने की हिम्मत तक नहीं की। इस सभा से न सिर्फ महिलाओं में, बल्कि इलाके के सभी लोगों में नए उत्साह का संचार हुआ। उनमें विश्वास भी बढ़ा है कि जनता की संगठित ताकत के बल पर दुश्मन के बड़े से बड़े दमन अभियान का भी मुकाबला किया जा सकता है। इस तरह आठ मार्च - अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक महिला दिवस की सौवीं वर्षगांठ सफलतापूर्वक मनाई गई।

पूर्व बस्तर डिवीजन

पूर्वबस्तर डिवीजन के कुदुर एरिया में छह जगहों पर आठ मार्च का आयोजन हुआ। इसमें एक हजार के करीब महिला-पुरुष शामिल हुए थे। दंडकारण्य महिला शहीदों के इतिहास को ऊंचा उठाकर आगे बढ़ेंगे के नारे गूंजते रहे। इसके अलावा वयानार, केसकाल, कोरर और बारसूर के इलाकों में भी 8 मार्च को उत्साह के साथ मनाए जाने की खबरें मिली हैं।

दूसरे डिवीजनों में भी 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के सौवें बरस को पूरे उत्साह और क्रांतिकारी माहौल में मनाया गया। इन आयोजनों के जरिए जनता में, खासकर महिलाओं में यह संदेश ले जाया गया कि 'महिला की भागीदारी के बिना क्रांति संभव नहीं है और क्रांति के बिना महिला की मुक्ति संभव नहीं है।' 8 मार्च की स्फूर्तिभावना को आत्मसात कर शक्तिशाली क्रांतिकारी महिला संगठन खड़ा करने का संकल्प लिया गया।✶

(... आखिरी पेज का शेष)

छात्र नेता कॉमरेड नागेश्वरराव इसी गांव में पैदा हुए थे। गिराईपल्ली शहीदों की सभाओं और झूठी मुठभेड़ों की जांच के लिए गठित भार्गव आयोग के समर्थन में की गई जन गोलबंदी में इस गांव की खासी भूमिका रही। संघर्ष और बलिदान की गौरवशाली विरासत को आगे बढ़ाने वाले कॉमरेड अप्पाराव ने आंध्रप्रदेश के क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर सर्वहारा के लाल झण्डे की लालिमा बढ़ा दी।

रैडिकल छात्र आंदोलन का लाल सितारा

आपातकाल को हटाने के बाद वरंगल-हन्मकोण्डा शहरों में 1978 से 84 के बीच एक जबर्दस्त हलचल पैदा हुई थी। नक्सलबाड़ी की राजनीति से प्रभावित होकर छात्र-नौजवान बड़े पैमाने पर क्रांति की तरफ आने लगे थे। रैडिकल संगठनों में संगठित होने वाले छात्र-बुद्धिजीवियों और नौजवानों ने एबीवीपी की गुण्डागर्दी और बस्तियों में चोर-गुण्डों का मुकाबला करने के साथ-साथ 'चलो गांवों की ओर' के अभियान में बड़े पैमाने पर भाग लिया था। ऐसे समय, 1978 में वरंगल शहर में पालिटेक्निक की पढ़ाई करते हुए कॉमरेड अप्पाराव पार्टी के संपर्क में आए थे। शहीद नेता कॉमरेड पुलि अंजन्ना के नेतृत्व में उन्होंने क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय भाग लेना शुरू किया। पढ़ाई के दौरान वह वरंगल शहर में एक किराए के कमरे में रहते थे जो कॉमरेड अंजन्ना के लिए एक सुरक्षित ठिकाना हुआ करता था। वह ऐसा दौर था, जब कॉमरेड पुलि अंजन्ना ने वरंगल जिले में सैकड़ों छात्र-नौजवानों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित किया था। कॉमरेड अप्पाराव उनसे न सिर्फ प्रभावित हुए थे, बल्कि आगे चलकर उनके एक मजबूत व भरोसेमंद साथी बन गए थे।

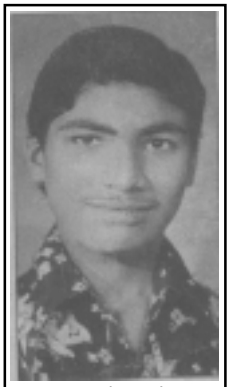
छात्र जीवन में कॉमरेड रवि

1979 में कॉमरेड अप्पाराव ने 'गांवों की ओर चलो' अभियान में भाग लेकर प्रेरणा हासिल की थी। उस समय गांवों का वर्ग-विश्लेषण करने और चंदा जुटाने में हिस्सा लिया था। आरएसयू में सक्रिय रूप से काम करते हुए 1980 में उसकी प्रदेश कार्यकारिणी में सदस्य बने थे। उन दिनों आरईसी (रीजनल इंजिनीरिंग कॉलेज) के बाद पॉलिटेक्निक कॉलेज ही शहर में रैडिकल राजनीति का मजबूत गढ़ माना जाता था, जिसके पीछे कॉमरेड अप्पाराव समेत कई कॉमरेडों का योगदान था। 1979-82 के बीच विभिन्न समस्याओं को लेकर पॉलिटेक्निक के छात्रों ने कई बार प्रदेशव्यापी संघर्ष किया था। उस संघर्ष में कॉमरेड अप्पाराव का सक्रिय योगदान रहा। उस समय वरंगल शहर में छात्र-नौजवानों का एक जबर्दस्त उभार आया था, कई होनहार नव युवकों ने पेशेवर क्रांतिकारी बनकर बाद में पार्टी में अहम भूमिका निभाई। उनमें से कॉमरेड अप्पाराव एक थे। बहुत कम समय में उन्होंने पेशेवर क्रांतिकारी के रूप में काम करने का फैसला लिया। डिप्लोमा के बाद हैदराबाद में इंजिनीयरिंग में स्नातक की पढ़ाई में दाखिला लिया था और पार्टी के आह्वान पर उसे बीच में ही छोड़ दिया और 1982 में वह पीआर बने थे। और उसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। कुछ समय तक उन्होंने आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी के तत्कालीन सचिव कॉमरेड प्रह्लाद के कोरियर के रूप में काम किया था। तभी से उन्होंने 'रवि' के नाम से काम करना शुरू किया जो बाद में आंध्रप्रदेश की जनता में बेहद लोकप्रिय हुआ।

मेदक की सूखी मिट्टी में बोए क्रांति के बीज

उस समय उत्तर तेलंगाना क्षेत्र में सशस्त्र किसान आंदोलन सरकारी दमन को धता बताते हुए तेजी से आगे बढ़ रहा था। उस आंदोलन का दक्षिण तेलंगाना के मेदक जिले में विस्तार करने का आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी ने निर्णय लिया था। इस फैसले को अमली जामा पहनाने के लिए शहीद अंकम बाबूराव की अगुवाई में एक टीम बनाई गई थी जिसमें कॉमरेड रवि एक महत्वपूर्ण सदस्य थे। अकाल, गरीबी और घोर सामंती शोषण के लिए बदनाम मेदक जिले में क्रांति के बीज बोने के लिए उन्होंने पूरा जोर लगाया। खासकर सिद्दिपेट कस्बे में छात्र-नौजवानों में पैठ बनाने के लिए एक-एक संपर्क से नाता जोड़ते हुए उन्होंने जिस प्रकार धैर्य और दृढ़ संकल्प के साथ काम किया वह तमाम कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं के लिए आदर्श है। सिद्दिपेट कॉलेज, दुब्बाका, गज्वेल, मेदक और जोगिपेट पॉलिटेक्निक में छात्रों को आरएसयू में संगठित करने तथा एबीवीपी, आरएसएस व भाजपा की गुण्डागर्दी पर अंकुश लगाने में कॉमरेड रवि का मार्गदर्शन ही अहम था। इससे प्रभावित होकर कनकराजू, समुद्रडू, कोण्डलरेड्डी जैसे होनहार कॉमरेड क्रांतिकारी संघर्ष में आए थे जो बाद में अलग-अलग समय में शहीद हो गए। 1986 में कॉमरेड बाबूराव का दिल का दौरा पड़ जाने से आकस्मिक निधन हुआ। इससे मेदक जिले में पार्टी के कामकाज को बड़ा धक्का लगा था क्योंकि उस समय आंदोलन शुरूआती चरण में था। इसके बाद मेदक जिले के संगठनकर्ता की जिम्मेदारी कॉमरेड रवि ने अपने कंधों पर ली और उन्होंने मजबूत इरादों के साथ मेदक जिले में क्रांतिकारी आंदोलन को आकार देना शुरू किया। 1986 में जब जिला कमेटी का गठन हुआ तब सहज ही वह उस कमेटी के पहले सचिव बने थे। शहीद बाबूराव, शहीद महेन्दर और अन्य कॉमरेडों के साथ-साथ कॉमरेड रवि के अथक परिश्रम की बदौलत मेदक जिले में क्रांतिकारी आंदोलन मजबूत बना। 1986 से ही वहां जमीन कब्जा करने के संघर्ष शुरू हुए थे। चिट्टापुर, अनाजिपुरम, काजीपेट, अल्लापुर आदि गांवों में जमींदारों की जमीनें छीन लेने के साथ शुरू हुए जमीन-संघर्षों ने 1990 के खुले दौर में व्यापक रूप धारण कर लिया। एक तरफ ग्रमीण इलाकों में किसनों के बीच मजबूत पैठ बनाने के साथ-साथ छात्र-नौजवानों, कर्मचारियों, लेखक-कलाकारों व बुद्धिजीवियों के साथ संपर्क बढ़ाकर अलग-अलग संगठन खड़ा करने में वहां की पार्टी कामयाब हो गई। खासकर 90 के

दशक की शुरूआत में इस जिले में व्यापक संघर्ष उभरे थे। इस सबके पीछे कॉमरेड रवि का योगदान ही बेहद महत्वपूर्ण था।

संघर्ष का झण्डा हमेशा बुलंद

उस समय मेदक जिले में 'जनशक्ति' ग्रुप के दक्षिणपंथी अवसरवादियों के खिलाफ हमारी पार्टी को काफी संघर्ष करना पड़ा था। उनके राजनीतिक दिवालिएपन का पर्दाफाश करते हुए राजनीतिक व सैद्धांतिक स्तर पर मुकाबला करने में कॉमरेड रवि का अच्छा खासा योगदान रहा। दक्षिण तेलंगाना के अन्य जिलों नलगोण्डा और महबूबनगर में भी क्रांतिकारी आंदोलन प्रभावी रूप से आगे बढ़ रहा था। ऐसे समय राज्य कमेटी ने 1989 में इन तीन जिलों को मिलाकर दक्षिण तेलंगाना रीजनल कमेटी का गठन किया और उस कमेटी का सचिव कॉमरेड रवि चुन लिए गए थे। कम समय में ही पूरे दक्षिण तेलंगाना में पार्टी कतारों में कॉमरेड रवि की छवि एक जुझारू, मजबूत व समर्पित नेता के रूप में स्थापित हो गई। 1990 में संपन्न आंध्र राज्य कमेटी की प्लेनम में कॉमरेड रवि को राज्य कमेटी के वैकल्पिक सदस्य के रूप में चुन लिया गया था। कुछ ही समय बाद उन्हें राज्य कमेटी में सहयोजित किया गया। वह कम उम्र में राज्य कमेटी सदस्य बनने वाले कॉमरेड थे। राज्य कमेटी सदस्य बनने के बाद उस समय के सचिव कॉमरेड पुलि अंजन्ना के मार्गदर्शन में उन्होंने सरकारी दमन का मुकाबला करते हुए दक्षिण तेलंगाना में क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कई क्रांतिकारियों को झूठी मुठभेड़ों में मारने वाले और ग्रेहाउण्ड्स फोर्स का गठन करने वाले खूंखार डीआईजी व्यास को हैदराबाद शहर में मारने की कार्रवाई की योजना बनाने में कॉमरेड रवि की अहम भूमिका रही।

फौलादी संकल्प के सामने दुश्मन की बर्बर यातनाएं हुई परास्त

जनवरी 1993 में सांगठनिक काम पर जब वह मद्रास (अब चेन्नई) गए थे, तब खुफिया हैवानों ने उन्हें गिरफ्तार किया था। वास्तव में उस जगह पर राज्य कमेटी के सचिव कॉमरेड पुलि अंजन्ना को जाना था, लेकिन उच्च नेतृत्व की सुरक्षा को अहमियत देते हुए खुद रवि वहां गए थे। पहले से गिरफ्तार एक साथी के पास लिखित में मिली सूचना के आधार पर दुश्मन वहां पहले से घात लगाकर बैठा हुआ था। उस समय सचिव कॉमरेड पुलि अंजन्ना समेत राज्य कमेटी के सभी कॉमरेड बैठक के लिए इकट्ठे हो चुके थे और बैठक के स्थल के अलावा कई ठिकानों की जानकारी कॉमरेड रवि को थी। लेकिन उन्होंने दुश्मन के हाथों अमानवीय यातनाएं झेलकर भी मुंह नहीं खोला। इसे कॉमरेड पुलि अंजन्ना के शब्दों में ही कहें तो 'अगर कॉमरेड रवि मुंह खोलते तो पार्टी दस साल पीछे जा चुकी होती।' कॉमरेड रवि को दुश्मन ने बर्बरतम यातनाएं इस इरादे से भी दी थीं कि आगे जेल से जब वह रिहा होंगे तब वह पार्टी में काम करने लायक न रहने पाएं। दरअसल दुश्मन उसी समय उन्हें झूठी मुठभेड़ में मारने वाला था, लेकिन चूंकि उनकी गिरफ्तारी की खबर कॉमरेड अंजन्ना के जरिए हर जगह फैल चुकी थी, इसलिए वह मार नहीं सका। इसके अलावा एक विधायक को पूर्वी क्षेत्र में हमारे गुरिल्लों ने गिरफ्तार कर रखा था जिससे दुश्मन को कॉमरेड रवि की हत्या करने में दिक्कत आई थी।

जेल को भी बनाया संघर्ष का मोर्चा

1993 से 2001 तक पूरे 8 साल वह जेल में रहे। उन 8 सालों का दौर भी उनके क्रांतिकारी जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा था क्योंकि उन्होंने जेल को सिर्फ एक कैदखाने के रूप में नहीं बल्कि लड़ाई के एक और मोर्चे के रूप में देखा। उस समय कॉमरेड पटेल सुधाकर (जो पिछले साल मई महीने में शहीद हुए थे), कॉमरेड भास्कर (जो अब पार्टी में केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में कार्यरत हैं) और कॉमरेड रवि के नेतृत्व में राजनीतिक बंदियों ने आंध्रप्रदेश के जेलों के इतिहास में एक शानदार अध्याय रच दिया। आंध्रप्रदेश के जेलों में बंद तमाम राजनीतिक कैदियों की जो कमेटी बनाई गई थी, उसके सचिव के रूप में कॉमरेड रवि को चुन लिया गया था। जेलों में रहने वाले लगभग सभी कैदी शोषित वर्गों के ही होते हैं। और आम तौर पर सामाजिक और आर्थिक कारणों से ही वे जेलों में कैद किए जाते हैं। इस समझदारी के साथ कॉमरेड रवि और अन्य कॉमरेडों ने जेल को एक कम्युनिस्ट पाठशाला में बदलकर कई लोगों को क्रांतिकारी आंदोलन की ओर आकर्षित किया। जेलों में बंद हमारे विभिन्न स्तर के कॉमरेडों और क्रांति के हमदर्दों को राजनीतिक शिक्षण देने, उनका हौसला बढ़ाने और उनकी तकलीफों को दूर करने में कॉमरेड रवि और अन्य कॉमरेडों ने ऐसा काम किया जो देश भर के क्रांतिकारियों के लिए एक अनुसरणीय नमूना है। उनके प्रयासों की बदौलत जेल से रिहा होने के बाद कई कॉमरेडों ने क्रांतिकारी आंदोलन में सक्रिय भागीदारी ली। इसके अलावा जेलों में अधिकारियों के जुल्मों, कैदियों के अधिकारों का हनन और जेलों में व्याप्त दूभर हालात के खिलाफ आंध्रप्रदेश के सभी जेलों में 1994 में जो शानदार व ऐतिहासिक संघर्ष हुआ उसमें कॉमरेड रवि की भूमिका सराहनीय रही। हमारे कॉमरेडों ने 42 दिनों तक आमरण अनशन कर जेल अधिकारियों को झुकाकर जबर्दस्त कामयाबी हासिल की। कॉमरेड रवि ने अपनी जान की परवाह नहीं की। इस तरह कॉमरेड रवि ने जेल को सच्चे अर्थों में लड़ाई का एक शानदार मोर्चा बनाकर दिखाया।

आदर्शों और उसूलों को ऊंचा रखा हमेशा

यहां कॉमरेड रवि के वैवाहिक जीवन का उल्लेख करना मुनासिब होगा। 1990 के मध्य में मेदक जिले में दस्ता कमाण्डर के रूप में काम करने वाली कॉमरेड सुगुणा से उनकी शादी हुई थी। शादी के थोड़े ही समय बाद कॉमरेड रवि की गिरफ्तारी हुई थी। उस समय तेलुगुदेशम सरकार क्रांतिकारी आंदोलन का खात्मा करने की मंशा से जेलों में बंद क्रांतिकारियों को जमानत

तक नहीं दे रही थी। अगर जमानत पर किसी की रिहाई हो भी जाती है तो उसे जेल के गेट के पास ही फौरन गिरफ्तार कर फिर से झूठे केस लगाकर जेल में डालती थी। ऐसे माहौल में कॉमरेड रवि की रिहाई की भी कोई निकट संभावना नहीं दिखाई दे रही थी। इस अनिश्चित स्थिति में कॉमरेड सुगुणा को मानसिक रूप से काफी परेशानी उठानी पड़ी। उन्होंने कॉमरेड रवि से विवाह का बंधन तोड़कर कॉमरेड कौमुदी को अपना जीवन साथी बनाने का फैसला लिया था। और उन्होंने जेल में चिट्ठी भेजकर कॉमरेड रवि को अपने इस विचार से अवगत कराया था। कॉमरेड रवि ने बेझिझक उनके फैसले का सम्मान किया। उनके और पार्टी के नाम एक पत्र भी लिख भेजा। हालांकि यह फैसला लेना दोनों के लिए भी काफी कठिन व पीड़ादायक था, लेकिन उन्होंने एक दूसरे के विचारों का सम्मान किया। इत्तेफाक ऐसा बना कि काफी मानसिक जद्दोजहद के बाद कॉमरेड सुगुणा ने कॉमरेड कौमुदी से शादी कर ली। दस दिन भी नहीं बीते कि 10 जनवरी 2001 को कॉमरेड रवि की रिहाई हुई। इसके बाद कॉमरेड सुगुणा के फैसले को लेकर नाराज हुए कुछ पार्टी कार्यकर्ताओं से उठ रहे सवालों और आपत्तियों को दूर करने के लिए पार्टी की तरफ से समझाने-बुझाने की जिम्मेदारी कॉमरेड रवि को भी उठानी पड़ी। एक उत्तम कम्युनिस्ट कार्यकर्ता के रूप में कॉमरेड रवि ने जो भूमिका निभाई वह काफी आदर्शपूर्ण है। बाद में 2003 में हुई एक झूठी मुठभेड़ में कॉमरेड्स कौमुदी और सुगुणा शहीद हो गए। फरवरी 2005 में कॉमरेड रवि ने एक कॉमरेड से शादी कर ली। उनकी शहादत के साथ ही इस वैवाहिक जीवन का भी दुखद अंत हुआ।

आंध्रप्रदेश में क्रांतिकारी संघर्ष की अगुवाई

2001 में जेल से रिहा होने के बाद कॉमरेड रवि ने नल्लमला इलाके में आंदोलन का प्रत्यक्ष नेतृत्व करते हुए फिर से आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी सदस्य के रूप में काम करना शुरू किया। वह जब गिरफ्तार हुए थे उस समय निचली कमेटियों में रहने वाले जूनियर कॉमरेड्स उनकी रिहाई के समय तक राज्य व केन्द्र कमेटियों में पहुंच चुके थे। लेकिन कॉमरेड रवि ने बिना किसी संकोच या बिना किसी झूठी प्रतिष्ठा के अपने से जूनियर कॉमरेडों के नेतृत्व को स्वीकार किया और उनके साथ मिलजुलकर काम किया। आंध्रप्रदेश के क्रांतिकारी आंदोलन के सामने उत्पन्न कई चुनौतियों का सामना करने में उन्होंने बखूबी से काम किया। दुश्मन के हमलों का मुकाबला करते हुए क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक फौजी व राजनीतिक दावपेंच तैयार करने में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया। राज्य कमेटी सदस्य के रूप में, सचिवालय सदस्य के रूप में और राज्य सैनिक कमिशन के इंचार्ज के रूप में उन्होंने अलग-अलग भूमिकाओं में काम किया।

नल्लमला में कॉमरेड रवि

2004 में हुए झूठे विधानसभा चुनावों का आयोजन हुआ था जिसमें तेलुगुदेशम पार्टी की हार हुई हुई थी। कांग्रेस सरकार ने जब वार्ता का ढोंग रचा, तो पार्टी के फैसले के अनुसार आंध्र प्रदेश राज्य कमेटी ने सरकार से वार्ता में भाग लिया। वार्ता में जाने वाले पार्टी के प्रतिनिधिमण्डल, जिसकी अगुवाई राज्य कमेटी के सचिव कॉमरेड रामकृष्ण ने की थी, के साथ नियमित तालमेल करते हुए कॉमरेड रवि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पार्टी कतारों का समन्वय कर उस दौरान उत्पन्न अनुकूल परिस्थिति का फायदा उठाकर पार्टी संगठन को मजबूत बनाने में कॉमरेड रवि ने पहलकदमी की। उस समय वार्ता की आड़ में दुश्मन के संभावित हमलों का मुकाबला करने के लिए समूची पार्टी और पीएलजीए को चौकन्ना रखने पर कॉमरेड रवि ने विशेष ध्यान दिया। वार्ता को तोड़कर जब दुश्मन ने आंध्रप्रदेश के आंदोलन का जड़ से सफाया करने की मंशा से फिर से बहुत बड़ा हमला छेड़ दिया, तो उस समय पीएलजीए को प्रतिरोधी कार्रवाइयों में उतारने में कॉमरेड रवि ने अहम भूमिका निभाई। 2006 के बाद शत्रु दमन तेज हो जाने से नल्लमला इलाके से कॉमरेडों सुरक्षित हटाकर दूसरे गुरिल्ला जोनों में भेजने में भी कॉमरेड रवि की भूमिका रही।

आंतरिक संकटों में टस से मस नहीं

पार्टी में उत्पन्न आंतरिक संकटों के समय कॉमरेड रवि क्रांतिकारी खेमे में मजबूती से खड़े रहे। हर किस्म के अवसरवादियों का उन्होंने दृढ़ता से विरोध किया। 1985 में सत्यमूर्ति आदि अवसरवादियों द्वारा उत्पन्न पहले आंतरिक संकट में भी और 1991 में उत्पन्न दूसरे आंतरिक संकट में, जिसके लिए केएस-बंडैया आदि बड़े नेता जिम्मेदार थे, कॉमरेड रवि ने क्रांतिकारी पक्ष का मजबूती से समर्थन किया। 1991 में आयोजित प्लीनम के फैसलों से केएस को अवगत कराने के लिए चुने गए प्रतिनिधि मण्डल का कॉमरेड रवि ने नेतृत्व किया। चूंकि उस समय केएस पार्टी के वरिष्ठ नेतृत्व से मिलने और समस्याओं पर बातचीत करने से इनकार कर रहे थे, इसलिए प्लीनम ने पार्टी के युवा नेताओं से प्रतिनिधिमण्डल चुन लिया था। कॉमरेड रवि ने अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाई और पार्टी में एकता कायम रखने के भरसक प्रयास किए। जब अवसरवादियों को पार्टी से निकाल बाहर करना जरूरी हो गया था, तब उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के पार्टी के हितों को ऊंचा उठाए रखा। दक्षिण तेलंगाना में पार्टी कतारों को क्रांतिकारी खेमे में दृढ़तापूर्वक टिकाए रखा।

फौजी मोर्चे पर बढ़िया पहलकदमी

कॉमरेड रवि एक बेहतरीन फौजी प्रशिक्षक थे। उन्होंने कई बार फौजी प्रशिक्षण शिविरों का संचालन कर कई गुरिल्लों को प्रशिक्षित किया। फौजी कार्रवाइयों, खासकर जनता के कट्टर दुश्मनों – पुलिस अफसरों और राजनेताओं का सफाया करने की एकल कार्रवाइयों की योजना बनाने में कॉमरेड रवि एक कुशल रणनीतिकार थे। हर चीज को बारीकी से और गहराई से समझने की क्षमता रखने वाले कॉमरेड रवि दुश्मन के कमजोर और मजबूत पहलुओं पर पैनी नजर रखा करते थे। हर विषय को ध्यान से सुनने व समझने की गजब की कुशलता थी उनमें। 1993 में डीआईजी व्यास, जो एक बदनाम व जालिम पुलिस अफसर था, की सफाया-कार्रवाई की अचूक व अभेद्य योजना बनाने में उनका योगदान रहा। उसके बाद जेलों में कैद पार्टी के वरिष्ठ नेताओं को छुड़वाने के लिए कांग्रेसी नेता सुधीर कुमार को उठा लाने की कार्रवाई की योजना में भी कॉमरेड रवि का योगदान रहा। 2005 में प्रकाशम जिले के बदनाम एसपी महेशचंद्र लडहा और 2007 में भूतपूर्व मुख्यमंत्री जनार्दनरेड्डी पर किए गए हमलों और एर्रागोण्डापालेम और अच्चमपेट रेड कार्रवाइयों आदि में कॉमरेड रवि का सक्रिय योगदान रहा। पीएलजीए के बलों को कम्युनिकेशन और रिमोट कंट्रोल जैसी नई तकनीक से लैस करने में कॉमरेड रवि का जबर्दस्त योगदान रहा। वह एक खुले दिमाग वाले और सृजनशील कॉमरेड थे जो हमेशा हर मायने में जन सेना के विकास के लिए सोचा करते थे। नए-नए विचारों को कमेटी के सामने प्रस्तुत कर, चर्चा कर अनुमोदित करवाकर उन्हें अमल में लाने में कॉमरेड रवि आगे रहते थे। 2006 से आंध्रप्रदेश का आंदोलन जब पीछेहट का शिकार हुआ, उन्होंने उससे सही सबक लेने और हमारी तरफ से हुई गलतियों से सीख लेने में कोई कसर नहीं छोड़ी। आंध प्रदेश में फिर से आंदोलन को पुनर्जीवित करने और इन अनुभवों के आधार पर दूसरे राज्यों में दुश्मन का मुंहतोड़ जवाब देने में कॉमरेड रवि ने हमेशा ध्यान केन्द्रित किया।

'दुश्मन को जानने-समझने' की जिम्मेदारी

'दुश्मन के बारे में जानो और अपने बारे में जानो, फिर बिना पराजय के डर से सौ लड़ाइयां जीत सकोगे' – चीनी रणनीतिकार सन जू के इस कथन को कॉमरेड रवि ने न सिर्फ समझा, बल्कि उस पर अमल करने में पहलकदमी ली। जनयुद्ध को आगे बढ़ाने के लिए जन खुफिया विभाग के गठन की जरूरत को चिन्हित कर उस दिशा में कदम उठाने में कॉमरेड रवि का बेहतरीन योगदान रहा। शहीद कॉमरेड सूर्यम (पटेल सुधाकर) के साथ-साथ कॉमरेड रवि ने एलआईसी का प्रतिक्रांतिकारी सिद्धांत, विद्रोह-विरोध ी मैनुअल्स और खुफिया कामकाज का काफी अध्ययन किया। आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी ने दिसम्बर 2004 में पहली बार खुफिया विभाग का गठन किया और कॉमरेड रवि को इसकी जिम्मेदारी दी। कॉमरेड रवि के मार्गदर्शन में इस विभाग के हमारे कॉमरेडों ने दुश्मन के कई ठिकानों की टोह (रेकी) ली। 2006 के बाद पार्टी ने उन्हें आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी से मुक्त किया ताकि वह अपना पूरा समय इसी काम को दे सकें। 2007 में उन्हें केन्द्रीय कमेटी ने मिलिटरी इंटलिजेन्स के केन्द्रीय निर्देशक की जिम्मेदारी दी। इसके तहत खासकर बिहार-झारखण्ड और दण्डकारण्य में, जहां जनयुद्ध उन्नत चरण में पहुंच चुका है, कॉमरेड रवि ने नव गठित फौजी खुफिया विभाग के कार्यकर्ताओं को शिक्षित-प्रशिक्षित करने का बीड़ा उठाया। आंदोलन के इलाकों में बढ़ रहे दुश्मन के खुफिया नेटवर्क को गहराई से समझने और समझाने में कॉमरेड रवि ने सराहनीय प्रयास किए। पार्टी और आंदोलन का बचाव के लिए अपनाए जाने वाले उपायों पर उन्होंने पार्टी कमेटियों में उपयोगी चर्चा की। एरिया स्तर से राज्य स्तर तक मिलिटरी इंटलिजेन्स की इकाइयों का निर्माण करने और उन्हें प्रशिक्षित करने में कॉमरेड रवि ने काफी प्रयास किए। पिछले साल 24 मई को कॉमरेड पटेल सुधाकर की शहादत से पार्टी को, खासकर खुफिया विभाग को हुए भारी नुकसान से उबरने के प्रयासों में कॉमरेड रवि का योगदान अहम था। लेकिन अब कॉमरेड रवि के भी शहीद हो जाने से पार्टी को, खासकर जन खुफिया विभाग को अपूरणीय क्षति हुई है।

दण्डकारण्य आंदोलन का 'जयलाल'

2008 से दण्डकारण्य के क्रांतिकारी आंदोलन के साथ कॉमरेड रवि घनिष्ठता से जुड़ गए। खासकर दण्डकारण्य में फौजी खुफिया विभाग को स्थापित करने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण थी। जनवरी 2008 में रवि ने पहली बार दण्डकारण्य में कदम रखा और यहां पर उनका परिचय 'जयलाल' के नाम से हुआ था। अपनी जिम्मेदारी के तहत दण्डकारण्य में मिलिटरी इंटेलिजेन्स विभाग से जुड़े कॉमरेडों के साथ मिलकर उन्होंने सामूहिक अध्ययन और कक्षाओं के सत्र में भाग लिया। उसी समय, 16 मार्च 2008 को दक्षिण बस्तर के कंचाल के पास आंध्रप्रदेश ग्रेहाउण्ड्स द्वारा किए गए एक बर्बरतम हमले में 17 कॉमरेडों के शहीद हो जाने की बड़ी घटना घटी थी। इस घटना के पीछे कोवर्ट और खुफिया नेटवर्क की भूमिका अहम थी। उस समय कॉमरेड जयलाल भी उसी इलाके में थे। उन्होंने दूसरे कॉमरेडों के साथ मिलकर कंचाल हत्याकाण्ड के कारणों का पता लगाने और उसके लिए जिम्मेदार मुखबिरों को पहचानने में बेहद महत्वपूर्ण काम किया। शत्रु खुफिया नेटवर्क में शामिल एक-एक व्यक्ति का पता लगाने में, उन्हें गिरफ्तार कर पूछताछ करने में और पूछताछ के आधार पर एक-एक कड़ी को जोड़ते हुए पूरे जाल को चिन्हित करने में उन्होंने एक अनुकरणीय उदाहरण पेश किया। उत्तर में मानपुर डिवीजन से लेकर दक्षिण में दक्षिण बस्तर तक जहां भी गए और जरा भी समय मिला तो कॉमरेड जयलाल ने इंटलिजेन्स से जुड़े हुए कार्यकर्ताओं और पार्टी के विभिन्न स्तरों के कॉमरेडों के साथ शत्रु नेटवर्क के बारे में चर्चा की और सभी को आवश्यक सुझाव दिए। इस तरह दण्डकारण्य में पार्टी के खुफिया विभाग की स्थापना करने में उन्होंने एक जबर्दस्त प्रेरक-शक्ति के रूप में काम किया। जब

दुश्मन ने ऑपरेशन ग्रीन हंट के नाम से दण्डकारण्य में भारी हमला छेड़ दिया, कॉमरेड जयलाल ने नेतृत्वकारी कमेटियों व कॉमरेडों से व्यापक चर्चा की ताकि सुचारू जवाबी दावपेंच तैयार किए जा सकें। उन्होंने राजनीतिक, सैनिक व संगठनिक स्तर पर अनमोल व ठोस सुझाव दिए ताकि दुश्मन के भारी हमले को हराकर दण्डकारण्य आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए।

नए-पुराने साथी कोई भी हो, भाषा ठीक से समझ में आए या न आए, दण्डकारण्य के कॉमरेडों से वह इतना घुलमिल गए थे कि उनकी शहादत की खबर सुनकर कई कॉमरेडों की आंखें नम हुईं। उन्हें श्रद्धांजली देते हुए कई स्थानों पर शोकसभाएं आयोजित की गईं। इन सभाओं को पार्टी के विभिन्न स्तर के कॉमरेडों ने संबोधित किया और कॉमरेड जयलाल के आदर्शों को ऊंचा उठाने का आह्वान किया। एक जगह पर आयोजित सभा में बोलते हुए एक पार्टी-कार्यकर्ता ने रुंदे गले से कहा, 'हमने पार्टी में आज तक इतने जिंदादिली नेता को नहीं देखा जो हमारे साथ इतनी आत्मीयता से घुले-मिले हों।' यह एक उदाहरण है कि वह किस तरह यहां के कॉमरेडों पर अपनी छाप छोड़ गए। और यह एक सीख भी है कि पार्टी और पीएलजीए में कार्यकर्ताओं के साथ नेताओं का रिश्ता कैसा होना चाहिए।

जनता के हितों को हमेशा रखा सर्वोपरि

पुलिस की क्रूर यातनाओं, लम्बी अनशन और जेल की दूभर जिंदगी के चलते कॉमरेड रवि की तबियत काफी बिगड़ चुकी थी। 8 साल के बंदी जीवन के बाद 2001 में जब वह रिहा हुए तो उन्हें जंगल-पहाड़ों में चलना-फिरना भी मुश्किल होता था। घुटनों और कमर में काफी दर्द होता था। ऊपर से नल्लामला के जंगलों में गुरिल्ला जिंदगी की अपनी कठिनाइयां भी थीं। लेकिन कॉमरेड रवि ने बेहद धैर्य व सहनशीलता से इसका सामना किया। कठिन हालात में भी अपने आपको फिट रखने पर उन्होंने हमेशा ध्यान दिया। शारीरक दिक्कतों की परवाह किए बगैर उन्होंने विभिन्न गुरिल्ला जोनों का दौरा किया। 2005 के बाद नल्लामला के जंगलों में उनकी हत्या करने की मंशा से ग्रेहाउण्ड्स हत्यारों ने कई बार हमले किए थे, एसआईबी ने कई साजिशें की थीं। लेकिन उन्हें हमेशा निराशा ही हाथ लगी। 2003 में वेंकटेशम नाम के एक दर्जी को एसआईबी वालों ने कोवर्ट बनाकर पार्टी नेतृत्व की हत्या करवाने की साजिश रचकर राज्य स्तर के फौजी प्रशिक्षण कैम्प में भेजा था। उसे तुरंत चिन्हित करते हुए उसे पकड़कर पूछताछ करने में और साजिश का पर्दाफाश करने में कॉमरेड रवि ने अहम भूमिका निभाई। कैडरों और जनता ने कॉमरेड रवि को हमेशा अपनी आंख की पुतली की तरह बचा लिया। कई बार दुश्मन की गोलीबारी से साथियों ने उन्हें सुरक्षित बचा लाया। कठिन परिस्थितियों में भी दुश्मन की हर चुनौती का सामना करते हुए पहलकदमी के साथ काम करना उनकी एक और खासीयत थी।

आदर्शवान कम्युनिस्ट

पार्टी, पीएलजीए और जनता के बीच कॉमरेड रवि एक लोकप्रिय व आत्मीय नेता थे जो हमेशा जमीन से जुड़कर रहे। वह एक निराले नेता थे जो निचले स्तर के कॉमरेडों से भी बेहद आसानी से घुलमिल जाते थे। घमण्ड, अहम्, झूठी प्रतिष्ठा, नौकरशाही जैसे गैर-सर्वहारा रुझान उनमें कभी नहीं देखे गए। वह जहां भी गए वहां के पार्टी कार्यकर्ताओं व जनता ने उन्हें बेहद पसंद किया। हर उम्र के कॉमरेडों से वह आसानी से जुड़ जाते थे। कॉमरेडों की व्यक्तिगत समस्याओं और सुखदुख से लेकर उनके राजनीतिक, फौजी और सांगठनिक विचारों को सुनना, समझना और उन्हें आवश्यक सुझाव देना और उनके हौसलों को बढ़ाना आदि कॉमरेड रवि के सहज गुण थे। यही वजह है कि कॉमरेड रवि को एक बार देखने वाले साथी भी उन्हें हमेशा याद करते हैं। वह एक कुशल संगठनकर्ता थे। जनता के बीच काम करने के दौरान आंदोलन के लिए काम आ सकने वाले सही व्यक्तियों को वह तुरंत पहचान लेते थे और उन्हें पार्टी की तरफ लाने की जीतोड़ कोशिश करते थे। ऐसे व्यक्तियों के पास बार-बार जाकर, यहां तक कि पुलिसिया दमन के डर चलते परिवार वालों के विरोध करने के बावजूद भी उनसे रिश्ता जोड़ लेते थे। इस तरह उन्होंने मेदक जिले में कई नौजवानों और बुद्धिजीवियों को पार्टी की ओर आकर्षित किया। धैर्य व सहनशीलता के धनी थे वह। अपने 30 साल के क्रांतिकारी जीवन में उन्होंने हर प्रकार के काम किए। एक कोरियर के रूप में, संगठनकर्ता के रूप में, फौजी मोर्चे के प्रभारी के रूप में और इंटेलिजेन्स विभाग के निर्देशक के रूप में.... पार्टी ने जो भी जिम्मेदारी दी उसे स्वीकार किया। उसे पूरा करने के लिए कठोर परिश्रम किया। पार्टी में वह एक भरोसेमंद व जुझरू नेता थे। चेहरे पर अमिट मुस्कान, नम्र स्वभाव और मीठे बोल - उनके ये खास गुण थे।

मौत के सामने भी सिर नहीं झुकाया

दुश्मन के लिए कॉमरेड रवि हमेशा एक कठिन चुनौती बनकर रहे। पहली बार 1993 में जब वह गिरफ्तार किए गए थे तब दुश्मन ने उन्हें अमानवीय यातनाएं दी थीं। तब भी उन्होंने पार्टी की गोपनीयता को पूरी तरह अक्षुण्ण रखा। 10 मार्च को जब वह आखिरी बार दुश्मन के हाथों पड़ गए तब भी दुश्मन ने पाशविक यातनाएं दीं। 12 तारीख को 'मुठभेड़' की घोषणा कर जब उसने उनकी लाश नल्लामला जंगल में फेंक दी तो उनकी एक आंख फूट चुकी थी। शरीर के कई हिस्सों में पुलिसिया बर्बरता के निशान साफ तौर पर दिखाई दे रहे थे। साफ जाहिर है कि कॉमरेड रवि ने अंतिम सांस लेने से पहले दुश्मन की तमाम पाशविकता को सहकर भी पार्टी की गोपनीयता पर आंच आने नहीं दी। उन्हें पार्टी और जनता पर पूरा विश्वास था। जब मौत उनके सामने आकर खड़ी थी तब भी उनका यह विश्वास जरा भी कमजोर नहीं हुआ था कि हम सब मिलकर उनके अधूरे मकसद को कामयाबी की मंजिल तक पहुंचाकर ही

रहेंगे। उनके द्वारा बहाए खून के एक-एक कतरे का जनता जरूर हिसाब मांगेगी। इसी दृढ़ विश्वास और अटूट प्रतिबद्धता के चलते उन्होंने दुश्मन के सामने अपना सिर नहीं झुकाया। पार्टी की प्रतिष्ठा व सम्मान को दृढ़ता से ऊंचा उठाए रखा। कॉमरेड्स पुलि अंजन्ना, श्याम, महेश, मुरली, चंद्रमौली, करुणा, सोमन्ना, राजमौली, सुधाकर आदि कॉमरेडों ने बलिदान की जिस गौरवशाली परम्परा को रोशन किया था, उसका गौरव कॉमरेड रवि ने और भी बढ़ाया। आज कॉमरेड रवि हमारे बीच नहीं हैं। लेकिन उन्होंने जो आदर्श हमारे सामने पेश किए, जो प्रेरणा हमें दी, जिस तरह खुद को एक उदाहरण के रूप में हमारे सामने पेश किया, उसे हम कभी नहीं भूल पाएंगे।

कॉमरेड रवि की हत्या पर पूरे आंध्रप्रदेश की मेहनतकश जनता में, तमाम गुरिल्ला जोनों में और पार्टी के तमाम कतारों में शेक की लहरें दौड़ गईं। आंध्रप्रदेश के कई संगठनों, जनवादियों और बुद्धिजीवियों ने इस झूठी मुठभेड़ की निंदा कर उनकी हत्या की निंदा की। उन्हें अंतिम विदाई देने के लिए हजारों लोग उनके गांव खानापुर की ओर चल पड़े थे। कई शहीदों की माताएं भी कॉमरेड रवि को अंतिम विदाई देने आई थीं जिससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि उनके दिलों में रवि की जगह कितनी खास है। आज दुश्मन कॉमरेड रवि की हत्या कर भले ही जश्न मना रहा हो, लेकिन ऐसी सैकड़ों हजारों माताओं के सीने में इससे जो आग लगी है उसका शोलों में बदलना और इस शोषक व्यवस्था को पूरी तरह से जलाकर राख करना अवश्यंभावी है।

तकनीकी विभाग का समर्पित कार्यकर्ता कॉमरेड सोलिपेटा कोण्डलरेड्डी (रमणा)

44 वर्षीय कॉमरेड कोण्डलरेड्डी का जन्म मेदक जिले के दुब्बाका मण्डल के चिट्टापुर गांव में हुआ था। मां लक्ष्मीनरसव्वा और पिता वेंकटरेड्डी की चार संतानों में कॉमरेड कोण्डलरेड्डी दूसरी संतान थे। उनके पिता गांव के पहले सरपंच थे। हैदराबाद शहर में बद्रुका कालेज में बीए की पढ़ाई के दौरान 1984 में कॉमरेड कोण्डलरेड्डी क्रांतिकारी आंदोलन की तरफ आकर्षित हुए थे। 1990 में वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता बने थे। शहीद कॉमरेड्स अंकम बाबूराव और मेकला दामोदररेड्डी से वह प्रभावित हुए थे। और कॉमरेड शाखामूरी अप्पाराव (रवि) से उनका घनिष्ठ संबंध था। सबसे पहले उन्होंने कॉमरेड रवि के कुरियर के रूप में काम किया। 'रमणा' के नाम से कॉमरेड कोण्डलरेड्डी ने पार्टी में काम किया। 1992 में उन्हें पुलिस ने गिरफ्तार कर बुरी यातनाएं दी थीं। लेकिन उन्होंने शत्रु के यातना शिविर की खिल्ली उड़ाकर पार्टी की गोपनीयता को बचाया। वह दुश्मन के सामने मजबूती से खड़े रहे। 5 महीने जेल में रहकर बाद में जमानत पर रिहा हो गए और सीधे अपनी जिम्मेदारियों में लौट आए।

बाद में पार्टी की उत्तर तेलंगाना रीजनल कमेटी ने उन्हें तकनीकी काम सौम्प दिया। 1996 से 1998 तक उन्होंने पार्टी के केन्द्रीय तकनीकी विभाग के कुरियर और सप्लायर के रूप में बेहतरीन काम किया। फील्ड में सांगठनिक कामकाज में प्रत्यक्ष अनुभव हासिल करने के लिए 1998-99 में एक साल तक महबूबनगर जिले के कल्वाकुर्ति इलाके में काम किया। बाद में 2000 से 2002 तक राज्य कमेटी ने उन्हें प्रेस विभाग में ट्रांसपोर्ट की जिम्मेदारी दी। इस काम को भी उन्होंने पूरी निष्ठा व लगन के साथ पूरा किया। 2004 में आंध्रप्रदेश राज्य कमेटी तकनीकी विभाग में एक अहम जिम्मेदारी सौम्प दी। 2006 के आखिर से मध्य रीजनल ब्यूरो की देखरेख में उन्होंने यह जिम्मेदारी निभाई और आखिर तक वह इसी काम में लगे रहे। जंगे मैदान में लड़ने वाले गुरिल्ला योद्धाओं को गोलाबारूद व हथगोले पहुंचाने में उनका बेहद महत्वपूर्ण योगदान रहा।

कॉमरेड रमणा की खासीयत यह थी कि उन्होंने घोर शत्रु दमन के बीचोबीच भी पार्टी के तकनीकी कामों को कुशलता से पूरा किया। तकनीकी सावधानियां बरतने के मामले में वह एक आदर्शपूर्ण कॉमरेड थे। पार्टी के तकनीकी नियमों का उल्लंघन करने वाले कॉमरेडों की वह बेबाकी से आलोचना करते थे, चाहे वह केन्द्रीय कमेटी का सदस्य भी क्यों न हो। लम्बे समय तक पार्टी के तकनीकी विभाग में एक गुमनाम सी जिंदगी जीने पर भी उनमें कोई नाराजगी नहीं थी। क्रांति के लिए उन्होंने हर प्रकार का काम पूरी ईमानदारी से किया। पार्टी के निर्णय व पार्टी के हित उनके लिए सर्वोपरि थे।

शुरू से आखिर तक तकनीकी काम में ही रहने वाले कॉमरेड रमणा शहरों में रहते हुए कई काम सीखे और उसके अनुसार नौकरियां भी कीं। पार्टी की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए कम्प्यूटर चलाना भी अच्छी तरह सीख लिया। जिस इलाके में भी रहें, उन्होंने वहां की भाषा को सीखने की कोशिश की। वर्ष 2001 में उन्होंने कॉमरेड माधवी से विवाह किया। 12 मार्च को उनकी 'मुठभेड़' की खबर सुनने के बाद कॉमरेड माधवी मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष के सामने एक याचिका दायर कर इसे झूठी मुठभेड़ बताया। उन्होंने मीडिया को बताया कि 11 तारीख की सुबह जब कॉमरेड रमणा किसी काम से पूणे में स्थित अपने आश्रय से बाहर निकले थे तभी एसआईबी हत्यारों ने उन्हें अगवा कर लिया। शाम तक वह घर नहीं लौटे तो उन्हें शक हुआ था। बाद में मानवाधिकार संगठनों के कार्यकर्ताओं को उन्होंने यह खबर दी और उनके 'मुठभेड़' में मारे जाने की आशंका जताई। दुश्मन ने कॉमरेड रमणा को घोर यातनाएं देकर जब उनसे कुछ भी नहीं उगलवा पाया तो अगले दिन उनकी हत्या कर दी।

पार्टी में कॉमरेड रवि के साथ लम्बे समय तक जुड़े रहने वाले कॉमरेड रमणा की मृत्यु भी उनके साथ ही हुई। कॉमरेड रमणा का अंतिम संस्कार उनके गांव चिट्टापुर में हुआ जिसमें हजारों लोगों ने भाग लिया। कई जन संगठनों, जनवादियों और आम जनता ने उनकी हत्या की निंदा की। क्रांतिकारी आंदोलन में उनके योगदान को याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजली दी। ✶

मौत को मात देकर अपने सुर्ख लहू से शहादत की परम्परा को रोशन करने वाले कॉमरेड शाखामूरी अप्पाराव (रवि/जयलाल) और कॉमरेड कोण्डलरेड्डी (रमणा) को दण्डकारण्य का भूमकाल जोहार!

12 मार्च 2010 को खून के प्यासे आंध्रप्रदेश एसआईबी के हत्यारों ने फिर एक बार पंजा मारा। हमारी पार्टी के वरिष्ठ नेता कॉमरेड शाखामूरी अप्पाराव की हत्या कर वही पुरानी घिसी-पिटी कहानी फैला दी कि नल्लमला के जंगलों में पुलिस के साथ हुई 'मुठभेड़' में वह मारे गए थे। उसी दिन पार्टी के तकनीकी विभाग के एक जिम्मेवार कॉमरेड कोण्डलरेड्डी (उर्फ रमणा) की भी हत्या की और वरंगल जिले के जंगलों में एक और 'मुठभेड़' में उनके मारे जाने की घोषणा की। इन दोनों कॉमरेडों को अलग-अलग जगहों से उठा लाकर क्रूरतम यातनाएं देने के बाद एक ही दिन अलग-अलग जगहों में उनकी जघन्य हत्या कर दी। इन लाइसेंसी कातिलों ने कॉमरेड अप्पाराव को 10 मार्च की सुबह चेन्नई के आसपास तब उठा लिया था जब वह किसी से मिलने जा रहे थे और कॉमरेड कोण्डलरेड्डी को 11 मार्च की सुबह महाराष्ट्र के पुणे शहर से उठा लिया था। इन कॉमरेडों को अमानवीय यातनाएं देने के बावजूद भी जब उनसे कुछ भी उगलवा नहीं पाए और जब उन्होंने दुश्मन के सामने झुकने से साफ मना कर दिया, एसआईबी हत्यारों ने उनकी 'मुठभेड़' कर दी। अभी तक मिली जानकारी के अनुसार कॉमरेड कोण्डलरेड्डी पर कुछ दिनों से दुश्मन की नजर थी और कॉमरेड अप्पाराव के चेन्नई में होने की खबर पुलिस को चंद दिन पहले लगी थी। पुलिस की 'मुठभेड़' की कहानियां अब इतनी अप्रासंगिक हो गई कि छोटे बच्चे भी उन पर विश्वास नहीं करते।

कॉमरेड शाखामूरी अप्पाराव

कॉमरेड रमणा

रवि, जयलाल, विनोद आदि नामों से पुकारे जाने वाले कॉमरेड अप्पाराव हमारी पार्टी के राज्य स्तर के वरिष्ठ नेता थे जो पिछले तीन दशकों से देश में क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने हेतु अथक प्रयास कर रहे थे। आंध्रप्रदेश के क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास के पन्नों पर अमिट छाप छोड़ने वाले कॉमरेड अप्पाराव कुछ सालों से पार्टी के मिलिटरी इंटलिजेन्स (फौजी खुफिया विभाग) के केन्द्रीय निर्देशक के रूप में काम कर रहे थे। 30 सालों से कठोर वर्ग संघर्ष में तपकर फौलाद बने कॉमरेड अप्पाराव की शहादत भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के लिए, खासकर पार्टी के नवोदित खुफिया विभाग के लिए बहुत बड़ा नुकसान है। कॉमरेड कोण्डलरेड्डी तकनीकी विभाग में लम्बे समय से कार्यरत वरिष्ठ कॉमरेड थे जिनकी शहादत से पार्टी को बहुत बड़ा नुकसान हुआ है। दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी इन दोनों शहीदों को विनम्र श्रद्धांजली पेश करती है और उनके महान कम्युनिस्ट आदर्शों को ऊंचा उठाकर उनके अधूरे मकसद को पूरा करने का संकल्प लेती है। आइए, इस मौके पर इन शहीद कॉमरेडों की जीवनियों पर नजर डालें।

तलवार की धार पर चला कॉमरेड अप्पाराव (रवि) का सफरनामा

कॉमरेड शाखामूरी अप्पाराव का जन्म 25 दिसम्बर 1962 को वरंगल जिले के खानापुर गांव में एक मध्यम किसानी परिवार में हुआ था। मां सरोजनम्मा और पिता कोटेश्वरराव की आठ संतानों में छठवें नम्बर के थे वह। क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में खानापुर मण्डल से कई शहीद हुए थे। महान तेलंगाना सशस्त्र किसान संघर्ष के दौरान इस इलाके से कई वीरों ने अपने अनमोल प्राणों को न्यौछावर किया था। आपातकाल के अंधेरे दिनों में गिराईपल्ली 'मुठभेड़' में शहीद हुए छात्र कार्यकर्ता कॉमरेड आनंदराव और 1986 में शहीद हुए रैडिकल

(शेष पेज 48 में...)